(प्रथम भाग)

यत्रम्-तत्रम्

श्री हिन्दी साहित्य संसार

यन्त्रम्-तन्त्रम्

गोपालप्रसाद व्यास

जो है, सा है

लेखक था अपने लेखन के सम्बन्ध म खुद इकबालिया बयान दज कराना कोई बहुत जरूरी तो नही। वह लेखन ही क्या जो खुद न बोले। मेरा लेखन भी गूगा नहो। उसकी बोलती कभी बन्द नही हुई। वह स्वय आपको बताएगा कि वह कितना सा रस है और कितना बनारस है ? कि हास्यरस कितना है और व्यग्य कितना ? कि हास्य कितना मधुर है और व्यग्य कितना तीखा ? कि साहित्य को उसने कितना छुआ है और समाज मे कितना पठा है ? कि राजनीति को उसने कितना उधेडा है और बुद्धिवादियो को कितना लथेडा है ? कि आज के आदमी की उसे कितनी पहचान है और अपने वतमान म वह कस जी रहा है ?

लेखन समाज का ही दपण नही, स्वय लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व, उसकी असलियत और बनावट, उसकी मौलिकता और कैंची-कट, गोद-पुत्रता की भी हूबहू तस्वीर है।

हा, एक मुश्किल का जिक्र करना जरूरी ह। लिखना किसी कदर आसान हो सकता ह लेकिन लेखक को अगर अपन लिखे का सम्पादन करके उसम से कुछ निकालने का काम सौंप दिया जाए तो यह उसके लिए 'दक्षिण गगोत्री' की यात्रा ही समझिए। मा अपनी सताना मे से सपूत और सुपुत्रिया को शायद चुन भी ले, लेकिन लेखक अपनी रचनाओ मे से कौन ठीक है और कौन ठीक नही है, इसका फसला आसानी से नहीं कर सकता। या कहने का 'गागर म सागर' का मुहावरा है। मुहावरा से लेखन भले ही चलता हो, सकलन और सम्पादन नही चल सकते। कोई पच्चीस वष से ऊपर लगभग हर रोज मैंने नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'दैनिक हिन्दुस्तान' मे अपना बहुचर्चित 'यत्र-तत्र सवत्र' स्तम्भ जारी रखा था। सूम के धन की तरह फाइला म चिपका चिपकाकर, बस्ता मे बाध-बाधकर, बक्सो में भर भरकर और आलमारियो म सहेज-सहेजकर मैंने कोई सात हजार से ऊपर कतरनें आज तक रख छोडी हैं। कागज खस्ता होगया, स्याही फीकी पड गई, लेकिन सीलन और दीमको के हमलो से मैं इन्हे बचा ले गया। महत्वाकाक्षी होना अगर कोई बुरी बात न समझी जाए तो मेरे मन म भी यह गलतफहमी रही है कि इन कतरनो मे आजादी के पच्चीस वर्षों का ऐसा इतिहास छिपा हुआ है कि अगर वह कभी छप जाएगा, तो मैं भी कुछ दिना के लिए लिए ही सही, शायद अमर हो जाऊगा।

चलते-चलते दो शब्द भाषा के सम्बन्ध म भी। आप जानते हैं कि मैं हिन्दी का प्रबल समथक हू। आधी शताब्दी होगई, उसके लिए सघष करता रहा हू। परन्तु

हिन्दी के सम्बन्ध म मेरी मान्यता, विशिष्ट हिन्दीजना से कुछ भिन्न है। सस्कृत, हिन्दी दोनो के व्याकरण जानता हू। परन्तु प्रवहमान भाषा को मैं व्याकरण के अनावश्यक बन्धना म सस्कृत की तरह बाधे रखने के पक्ष मे नही हू। भाषा एक नदी के समान है जो अपना रुख और तेवर सदैव बदलती रहती है। अपने तटबन्धो को स्वय काटती रहती है। कभी वह सक्षिप्त होती है तो कभी उफनती है। ऐसे कि उसका पानी खेत खलिहानो को छू छू जाता है। उसके प्रवहमान वेग म न जाने कितने दुस्साहसी डूब डूब गए हैं। इसलिए मैंने भी भाषा को मुक्त रूप से स्वीकार किया है। जस वह बही है, बहने दिया है। जब जो शब्द जहा से जुबान पर आया है, उसे लिखने मे सकोच नही किया है। मैं भाषा को बोलचाल के निकट ही रखना चाहता हू। जैसे बोलता हू, वसे ही लिखता हू, फिर चाहे शब्दो की पुनरुक्ति हो या 'और', 'यानी', 'माने , कि , 'मेरा मतलब' जैसे शब्द बार-बार ही क्या न आते हो। मेरे भाषायी भवन की खिडकिया खुली हुई हैं। विचारो के लिए भी और शब्दो के लिए भी। मैंने प्रचलित सस्कृत, फारसी, उर्दू , व्रजभाषा राजस्थानी, हरियाणवी, पजाबी और अग्रेजी शब्दो को, जब वे स्वय चलकर मेरे पास आए हैं तो आदर के साथ उन्हें अपनी पक्ति मे विठाया है। अगर मैं दक्षिण की भाषाए भी जानता होता या उसके देशव्यापी प्रचलित शब्द मेरे हाथ लग जाते तो उन्हे भी आदर के साथ अपने लेखन मे स्थान अवश्य देता।

रही शली की बात। शली हर लेखक की अपनी होती है। मेरी शैली म व्रजभाषा का रस ही नही, उसके तुक छद भी हैं। उसम उर्दू की रवानगी भी मैंने अपनाई है। आज का आदमी जसी मिलीजुली खिचडी भाषा बोलता है उसका भी परिहास मे मैंने सहारा लिया है।

अब कथ्य के सम्बन्ध म कहने को विशेष नही रहा। जो कुछ तथ्यातथ्य है, जैसा है वैसा आपके सामने हाजिर है।

अन्त म यह कि इस पुस्तक म यत्र भी है और तत्र भी। हा, इतना अवश्य कह सकता हू, इसमे यहा की भी है और वहा की भी। इधर की भी है उधरकी भी। मैंने इन पर भी लिखा है और उन पर भी। तुम पर भी लिखा है और हम के अहम को भी नही बख्शा है। इसमे कल की बात तो कही ही है और अब दावे के साथ कहता हू कि वह आज भी सही ही है। फिर यह भी समझ लीजिए और समझ लेंगे तो सुखी रहेंगे कि मैंने कहा भी है और नही भी कहा है। क्योकि मैं व्यास भी हू और समास भी। जै रामजी की।

—गोपालप्रसाद व्यास

व्यास निवास बी 52, गुलमोहर पार्क

नई दिल्ली-110 049

कहा क्या !!!

●●

जय गणेश देवा !

विघ्न विनाशक गणेशजी को नमस्कार करके आज हम अपनी कलम उठा रहे हैं। आज 'जेहि सुमिरत सिधि होइ, गण नायक करि वर वदन' का जन्म दिन है। आज उनका जन्म दिन है जिनके लिए गोसाईं तुलसीदासजी कह गए हैं—

मोदक प्रिय मुद मंगल दाता।
विद्या वारिधि बुद्धि विधाता॥

कैसा है गणेशजी का स्वरूप ! एक संस्कृत का श्लोक पढ़िए—

वक्र तुण्ड महाकाय,
सूर्य कोटि सम प्रभ।

इसीलिए हम गणपति को नमन करते हैं कि वह मुझ लिखने वाले और आप पढ़ने वालों दोनों का कल्याण करें। आप आस्तिक हों तो भी आपका कल्याण करें और नास्तिक हों तो भी। आस्तिक हों तो यह समझिए कि वह भगवान शिव के पुत्र हैं। भवानीनन्दन हैं। बुद्धि के देवता हैं। ऋद्धि सिद्धि के दाता हैं। यदि आप नास्तिक हैं तो यह समझिए कि चूहे पर उनकी सवारी है। यानी चूहा, जो महंगाई की तरह सर्वत्र व्याप्त है और जिसकी भ्रष्टाचार की तरह सर्वत्र गति है। चूहा, जो किसानों का हमदर्द भी है और सिरदर्द भी। जो क्लर्कों की तरह सर्वाइया है। वही बाबुओं की फाइलों को कुतर कर उनकी सहायता करने वाला है। अगर चूहा न होता तो साप भूखे मर जाते। यह चूहे ही हैं जो अपने साथ महामारियों को लाकर भारत सरकार के परिवार नियोजन कार्यक्रम को सफलीभूत बना रहे हैं। जब चूहा इतना चतुर है तो उस पर सवारी गाठने वाले गणेश क्या मोती की पोती से कम महान होंगे ? वह सूक्ष्म नहीं, महाकाय हैं। बिल्कुल विश्व की महाशक्तियों के समान। तुन्दिल शरीर से पूरे पूंजीवादी और सिन्दूरी लाल चोले से एकदम समाजवादी। उनकी मोदकप्रियता का अर्थ है—बुद्धिवादी होना। बुद्धिवादियों को खिला पिलाकर कुछ भी वरदान प्राप्त कर लीजिए। उनके दो नहीं, तीन आंखें हैं। यानी एक आंख में मोतियाबिन्द उतर आए तो भी दोनों सलामत। भारत में बढ़ती हुई अंधों की संख्या की छूत लग जाए तो भी हमारे गणेश अपना तीसरा नेत्र खोलकर बखूबी काम चला सकते हैं। दो आंख वाला आदमी सब कुछ कहां देख पाता है ?

अनदेखे को देखने के लिए तीसरी आख चाहिए ही । वह हमारे गणेशजी के पास है । जानते हो इन्हे बुद्धि का देवता क्या कहा गया है ? बुद्धि का देवता यानी, बुद्धिवादी । बुद्धिवादी यानी, कार्टून । दुनिया के रेखाकन के इतिहास मे गणेशजी सबसे पहले कार्टून हैं । समझे बुद्धिललाजी !

मैं परगतिशीलो (प्रगतिशीलो) पर कृपा करके अपने को पुराना स्वीकार किए लेता हू । इसीलिए कि भाई मेरे मुझे आसानी से पुराणपथी कह सकें । अस्वीकार कर सकने की स्थिति म नही हू । क्योकि नाम के साथ व्यास जुडा हुआ है । जुडा हुआ है व्यास के साथ गणेश भी । इसलिए जब-जब कलम उठाता हू या किसी तरफ कदम बढाता हू तो अनायास मुह से निकल पडता है—

सुमुखश्चैव दन्तस्य कपिलो गज कर्णक
धूम्रकेतु गणाध्यक्ष, भालचन्द्रो गजानन ॥

परन्तु कैसा भी पुराना आदमी रहा हू जीता तो आज के जमाने म हू । ऐसा तो आज की परिस्थिति म हू । सुफल या कुफल तो आज की राजनीति के भोग ही रहा हू । इसीलिए जब जब गणेशजी का स्मरण करता हू, तब-तब मुझे ऐसे सुमुख व्यक्ति का स्मरण होआता है जिसकी विकट आकृति के मच पर उपस्थित होते ही हजारो लोग उसके दर्शनो को उमड पडते हैं । उस पर तालिया पीटते हैं । पान फूल चढाते हैं । मोदक मिष्ठान्नो से उसका मुह बद करते हैं । जी, उसके भी एक दात है, जो सत्ता पर गडा हुआ है । उसके भी भाल पर चन्द्रमा जसी शुभ्र टोपी सुशोभित है । वह भी विघ्न विनाशन और विघ्नेश दोनो है । वह भी भारत-गणराज्य मे उल्लेखनीय गणनायक है । उसके सम्बन्ध मे भी यह सौ पसे सही है —

विद्यारम्भे विवाहे च
प्रवेशे निगमे तथा ।
सग्रामे सकटश्चैव
विघ्नस्तस्य न जायते ॥

यानी स्कूलो मे दाखिला बिना उसकी सिफारिश क नही हो सकता । विवाह काय म उसका आना सुनिश्चित होते ही सफाई, सुरक्षा और शोभा स्वय बढ जाती है । अगर कही प्रवेश पाना हो तो उसकी रिकमडेशन जरूरी है । अगर बाहर जाना हो तो उसकी आज्ञा आवश्यक है । किसी स झगडा हुआ है और यह आधुनिक गणेश पीठ पर नही है तो कसा भी सग्राम हो जीता नही जा सकता । कहने का तात्पय यह कि हर सकट के समय हर विघ्न निवारण के लिए इसकी कृपा परमावश्यक है । नही तो इसकी उपेक्षा करने पर विघ्नेश बनने मे इन्हे देर नही लगती घर म अफीम रखवा दे । अपने भूना से पिटवा दे (भून गणादि सवित) । तबादला करादे । बर्खास्त कर दे । प्रगति को ठप्प कर दे और ज्यादा गडबड करो तो रासुका मे बद करा दे ।

इसीलिए मैं पुराने गणेशजी महाराज के साथ-साथ इस नए गण ईश्वर की उसकी महाकाय मूर्ति को, कुर्ता और बुशट से निकल निकल पडने वाली तोंद को, उसकी विलक्षण बुद्धि को प्रथम वन्दना का अधिकार देकर अपने कार्यों मे प्रवृत्त होता हू। क्यो ठीक है न ? यदि ठीक है तो आप भी ऐसा ही करके सुफल मनोरथ हूजिए।

इन्ही पौराणिक गणेशजी को वाणी के वरदपुत्रो ने अनेक प्रकार से ध्याया है। महाकवि देव का ढग अनूठा है। वह कहते हैं कि शिवजी के घर मे सग्रह किस वस्तु का सभव है ? मगर गणेशजी है कि मोदक को मचल रहे हैं। अब शिवजी की लाज रहे तो कैसे रहे ?—

घर को हवाल यहै
शकर की बाल कहै,
लाज रहै कसे, पूत
मोदक को मचलै।

जिन्होंने मोदक आरोग कर शिवजी के घर की सदा लाज रखी है, ऐसे ही आमोद प्रमोद के मोदको का प्रसाद वह हमे, आपको सदैव देते रहें। इसी कामना के साथ आज गणेशजी के नाम पर हम यह छन्द लिखकर 'यत्रम-तत्रम' के आनन्द-सागर मे उतर रहे हैं —

गज-मुख नाहि, ए तो धीर गति मति वारे,
भालचन्द्र नाहि, ए तो कीरति के चन्दना।
मूसक सवारी नाहि, आसन सयानपन्द,
नेत्र तीसरो है नाहि, ज्ञान — ज्योति — वदना।
मोदक न माग, मोद ही सों अनुराग सदा,
देवन मे गिरी शृग, गिरिजा के नन्दना।
'व्यास' के गणेश, याहि पूजत सुरेश,
ए तो विघ्नेश नाहि, मेरे विघन निकदना। ●●

2

□ □ □

एक थे ए० पी० डी०

एक थे ए० पी० डी०। भारत क बडे नगर के वह आला अफसर थे। नाम ता इनका कुल मिलाकर कोई एक दजन अक्षरो से बडा था, पर सारे नगर के सरकारी महकमो म लोग इन्हें ए०पी०डी० ही कहकर जानते मानते थे।

इनका काम यह था कि सवेरे साढे सात वजे नहा धोकर तैयार हुए। नए खादी के धवल वस्त्र धारण किए। मोटर गरेज स निकाली। निकल पडे सरकारी काम पर।

इनके 'सरकारी काम' की सूची काफी विस्तृत होती थी। उसे वह अत्यत मानवीय आधार पर पूरा किया करते थे। इसमे उन्हे कितने भी कष्ट उठाने पडें, वह झिझकते नही थे। सरकारी काम थे—अपने से बडे अफसर के यहा कब कौन बीमार हुआ? किसको किस चीज की जरूरत है? कौन किस समस्या मे उलझा हुआ है? उसको सुलझाने मे वह अपनी बुद्धि, पद और प्रभाव का पूरा-पूरा उपयोग करते थे।

ये सरकारी काम उन्ह इन सब बाता स बाता-ही बाता म परिचित करा दते थे कि किसका तबादला कहा होरहा है और कौन किसकी जगह आरहा है? किसके यहा से कौन सी स्कीम पास होरही है और उससे कौन कहा फायदा उठाने की फिक्र मे है? दूसरे साथ ही साथ आजकल किस अफसर की किससे दोस्ती है? किससे लगती है? किसका खूटा किस वजह से मजबूत है? और किसका किस वजह से उखड गया है?

राजकाज चलाने के लिए ए० पी० डी० साहब को इन सब बाता की जानकारी अत्यत आवश्यक थी। सबको वह सरकारी काम का ही एक अग समझते थे।

जब साढे नौ बजते तो ए० पी० डी० साहब अपने बगले पर लौटत। बरामदा मिलने वालो से घिरा रहता।

वह उन सबको अलग-अलग बुलाकर उनका और अपना समय नष्ट नही करते। सबस वही खडे-खडे उनका दुख दद पूछते और सबको उपयोगी सलाह देते—तुम पुलिस सुपरिटेंडेन्ट साहब स मिल लो। तुम सप्लाई आफीसर के पास चले जाओ। तुम अपनी दरख्वास्त नगरपालिका के प्रधान के पास भेजो। तुम अमुक स मिल लो और तुम अमुक से मिल लो। गज यह कि न वह किसी से न करते थे न हा करत थे।

बगले म आते ही वह फिर सरकारी काम म जुट जाते थे। उन्होने अपन सहायका से कह रखा था कि दफ्तर में जा फाइलें देखने से रह जाए, उन्हे बगले पर भेज दिया जाए और बगले पर जो रह जाए, दफ्तर ले आया जाए। वह आज के काम को जहा तक बने कल पर नही टाला करते थे।

तो उनके परिचारक बगले के दरवाजे बन्द कर देते और कह देत कि साहब सरकारी काम कर रहे हैं। ए०पी०डी० साहब बगले के दफ्तर म जात। फाइला पर नजर डालते। उन्हें ऊपर-नीचे रखते। उनमे म कुछ को इधर-उधर टेबुल पर फलात। ऐसा करने म उन्हे मानसिक थकान होती थी। वह टेबुल लम्प बुझात और बगल के कमरे म आकर पलग पर लेट जात और जब तक एक बजता और खानसामा लच के लिए दरवाजे पर हलकी दस्तक न देता, वह लेटे ही रहत। भारी सरकारी काम के उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए उनके स्वास्थ्य का ठीक रहना अत्यन्त आवश्यक जो था। स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए आराम और अच्छे भोजन की अत्यन्त आवश्यकता होती है। ए०पी०डी० साहब इन दोना बाता का पूरा खयाल रखत थे।

लच के बाद साहब दफ्तर जाते। उनकी फाइलें बगले से बटुर कर दफ्तर पहुच चुकतीं। कुछ और अर्जिया और नई फाइलें उनमे आ मिलती। अब ए०पी०डी० साहब का पूरा पुरुषार्थ प्रकट होता। वह एक-एक करके फाइलें उठाते और उन पर केवल तीन शब्द लिखत ए०पी०डी० और अपने हस्ताक्षर मारते जाते। यह ए०पी०डी० अग्रेजी शब्द 'एप्रूव्ड' का सक्षेप था। इसका तात्पय यह कि जो कुछ भी उनके नीचे वाले अफसर ने लिखा है, वह मजूर होता है।

बस फाइलो को पढकर अपना समय नष्ट नही करना चाहत थे। यह उनका काम भी नहीं था। फाइला को पढ़ना और उन पर नोट बनाना तो उनके अधीन लोगा का काम था। अपने अधीन लोगो की बात पर सही करना उनका काम था। जब उनके अधीन अफसर उनके किसी काम म ना नही करते तो वह कसे उनके लिखे हुए किसी नोट को काट देते? सरकारी काम रौब पर चलते हैं। अनुशासन पर चलते हैं। एक अफसर अगर दूसरे के लिखे को काटेगा तो व्यवस्था नष्ट हो जाएगी। शासन ढीला पड जाएगा। उलझनें पैदा हो जाएगी। ए०पी०डी० साहब यह अपने होते नही होने देना चाहते थे। जब तक वह रहे, उन्होने यह सब नही होने दिया।

ए०पी०डी० साहब के ए०पी०डी० लिखने का यह दौर कोई बीस मिनट तक धाराप्रवाह गति से चलता और देखते देखते सारी फाइलें साफ हो जाती।

ऐसे थे हमारे ए०पी०डी० साहब। वह उस महानगरी से बदल गए। आज भी उनके अधीन अफसर उनकी याद करके कभी-कभी अपने को कृतार्थ कर लिया करते हैं।

●●

3

□ □ □

मन्त्री ऐसा चाहिए

भारत सरकार आजकल एक-से-एक महत्वपूर्ण काय कर रही है। चारा ओर निर्माण और विकास का काय जोरा पर है। हर क्षेत्र म नई-नई मर्यादाए उसने स्थापित की हैं। लेकिन अभी तक मन्त्रिया के लिए कोई सहिता उसने स्थापित नही की कि अमुक योग्यता वाला व्यक्ति ही मन्त्री बनाया जा सकता है। यही कारण है कि साधारण-से-साधारण पढ़ा लिखा, काला, कुरूप बौना, कु आरा, विवाहित, विधुर—गज यह है कि चाहे जैसा भी व्यक्ति क्यो न हो, आज मन्त्री बना दिया जाता है। लेकिन अब समय आगया है कि जब मन्त्रियो की योग्यता का निर्धारण हो ही जाना चाहिए।

भारत के भूतपूव उप-खाद्यमन्त्री श्री एम०वी० कृष्णप्पा ने स्वानुभव से इस सम्बन्ध मे पहल करके विचारपूवक कुछ मर्यादाए स्थापित की थी। उनका कहना था कि आदश मन्त्री को ऊट की तरह खाना चाहिए उसकी चमडी भैंसे की तरह मोटी और कडी होनी चाहिए उसे गधे की तरह काम करना चाहिए और सोना कुत्ते की तरह चाहिए।

अथात एक मन्त्री मे व सब गुण होन चाहिए जो ऊट भैंसा, गधा और कुत्ते म होते हैं। यानी, मन्त्रिया मे केवल मनुष्यो के ही नही, जानवरो के भी गुण होने आवश्यक हैं।

कहते हैं कि एक बार जाज बर्नाड शा के पास एक अत्यन्त रूपवती महिला पहुची और उनसे निवेदन किया कि वह कृपा कर उससे विवाह करने को राजी होजाए।

बर्नाड शा ने पूछा, 'देवीजी, आपके ऐसा चाहने का कारण क्या है ?

महिला ने बताया 'जरा इस बात की कल्पना कीजिए कि हमारी जो सतान होगी वह मुझ जैसी रूपवान और आप जसी बुद्धिमान होकर दुनिया मे तहलका न मचा देगी ?

बर्नाड शा हसे और कहने लगे "लेकिन इसका उल्टा भी तो हो सकता है वह सतान मुझ जैसी कुरूप और आप जसी बुद्धिमान पैदा होगई तो क्या होगा ?'

बर्नाड शा के इस फामूले का यदि मन्त्रियो की इस कृष्णप्पा-योग्यता पर भी लागू करें तो परिणाम कोई कम उल्टा नही निकलता। क्या पता कि ऊट की

तरह संचित भोजन करने वाले मन्त्री उसीकी तरह बलबलाने भी लग जाए। उनकी चमड़ी ही भैंसे की तरह मोटी न हो, अकल भी उसका अनुकरण करने लगे। गदहे की तरह काम का बोझ उठाने वाले, यदि उसकी तरह दुलत्ती भी झाड़ने लगे और कुत्ते की तरह अचक नींद सोने वाले महाशय यदि दूसरा के टुकड़ों पर पलकर अपनी पूंछ भी सीधी न होने दें तो गजब हो जाएगा कि नहीं ?

फिर भी मन्त्रियों में यदि जानवरों का प्रतिनिधित्व ढूंढना हो तो हमारा निवेदन है कि सरकार का ध्यान केवल चौपायों पर ही नहीं, परिंदों पर भी जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में कौआ और बगुला, ये दो पक्षी ऐसे हैं जो पक्षी-जगत की काली और गोरी दोनों ही जातियों का सही प्रतिनिधित्व करते हैं और भारत में इनकी संख्या बड़ी है।

इसीलिए मन्त्रियों की यह परिभाषा हो तो अधिक ठीक रहे—

एक ऐसा व्यक्ति जो ऊंट की तरह खाता हो, कुत्ते की तरह सोता हो गधे की तरह काम करता हो, जिसकी चमड़ी भैंसे के समान हो, जिसकी चेष्टा कौए जैसी हो और जो बगुले जैसा ध्यान लगा सकता हो उसीको भारतवर्ष के मन्त्रिपद पर आसीन किया जा सकता है। ऊपर लिखे हुए गुणों के पूरी मात्रा में पाए जाने पर यह आवश्यक नहीं कि उसमें मनुष्यता के गुण भी पूरी मात्रा में विद्यमान हों। ●●

4

□ □ □

अथ उद्घाटन इति उद्घाटन

श्रीमती इंदिरा गाधी को शिकायत है कि सम्मेलनो का अधिकाश समय धन्यवाद म व्यतीत हो जाता है। इस सिलसिले म उन्होने यूनेस्को के आकडे भी बताए हैं। उनका अपना अनुभव भी कुछ ऐसा ही है कि लोग शिष्टाचार को महत्त्व अधिक दत हैं काम को नही। सभा-सम्मेलनो म आजकल प्राय काम की बातें कम ही होती हैं।

इस सम्बन्ध म हमारा भी कुछ अनुभव है और हम कहना चाहते हैं कि सम्मेलनो का आधा समय धन्यवाद म और आधा उद्घाटन म बीत जाता है। फिर काम के लिए समय रहता ही कहा है? खेद है कि अपनी बात की पुष्टि मे हम यूनेस्को के आकडे नही दे सकते, लेकिन हमारे पास अपन ही देश के, अपनी दिल्ली मे, एक नही कई उदाहरण पेश करने के लिए मौजूद है। उनम से एक का हाल लीजिए—

राजधानी के एक नामी नेता ने कई मुकामी कायकर्त्ताओ का जुगाड करके, एक विशेष प्रयाजन से, एक खास जगह पर, एक विराट सम्मेलन बुलाया। आजकल कोई भी सम्मेलन तब तक विराट नही होता, जब तक कि उसका उदघाटन कोई विराट मन्त्री न करें। भले ही उस मन्त्री का सम्मेलन के विषय से क ख ग का भी सम्बन्ध न हो, लेकिन किसी भी सम्मेलन को सनाथ करने के लिए मन्त्री की उपस्थिति अनिवाय होती है। मन्त्री आते हैं तो उनका स्वागत करने के लिए स्वागताध्यक्ष भी तलाश किए जाते हैं। परिणामस्वरूप इस सम्मेलन के लिए भी एक विराट पुरुष स्वागताध्यक्ष बनाए गए। स्वागताध्यक्ष हो और स्वागत मन्त्री न हो, यह कसे हो सकता था? वह भी बनाए गए। सम्मलन का समय सायकाल 6 बजे से था, लेकिन तब तक विराट जन-समूह एकत्र न होने के कारण मन्त्री महोदय अपने बगले पर रुके रहे और जलसे की कायवाही शुरू होने म सिफ डेढ घण्टे का विलम्ब हुआ।

जलसा शुरू होने पर पहले सयोजक का उद्घाटन भाषण हुआ। जिसमे सम्मेलन देर से प्रारम्भ होने के लिए जनता और मन्त्री महोदय से क्षमा मागी गई और लगे हाथ सम्मेलन को बुलाने मे उनका क्या योगदान है एव वह अपने आपमे कितने महत्त्वपूण व्यक्ति हैं, यह भी मन्त्री महोदय को सुनाते हुए जनता को बता दिया।

दूसरा उदघाटन किया स्वागत मन्त्री महोदय ने। वह लगता था स्वागताध्यक्ष के आदमी थे। उन्होंने अपने बारे म अधिक कुछ न कहकर स्वागताध्यक्ष की ही सेवाओ का गुणगान किया और उनसे प्राथना की कि वह अपना अमूल्य स्वागत भाषण पढ़ें।

इस तरह तीसरा उदघाटन भाषण किया स्वागताध्यक्षजी ने। उन्होने अपनी सेवाओ का विनम्रता से और मन्त्रीजी की सेवाओ का गर्व से वर्णन किया तथा त्रुटियो के लिए क्षमा मागते हुए मन्त्रीजी से सम्मेलन के विधिवत उद्घाटन की प्रार्थना की।

मन्त्रीजी उठने के लिए अपना टोपी दुपट्टा ठीक कर ही रहे थे कि सभापति बोले—आप जरा ठहरिए, और सभापति स्वय माइक पर आगए। उन्हे डर था कि मन्त्रीजी के भाषण के बाद जनता चली जाएगी और उनका भाषण कोई नही सुनेगा। इसीलिए उन्होने चालाकी से काम लेकर पहले तो चन्द शब्द मन्त्रीजी की प्रशसा मे कहे और फिर उन्हे जो कुछ कहना था, वह भी लगे हाथ सक्षेप मे उद्घाटित कर गए।

इतना सब उद्घाटित हो चुका तो मन्त्रीजी उठे और उन्होने उस सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन किया। सम्मेलन जिस विषय पर होरहा था, उस पर मन्त्री महोदय की कोई जानकारी न थी, इसलिए वह इधर-उधर भटकते रहे। जनता ऊब गई। इससे मन्त्रीजी भी खिन्न होगए और उन्होने सिर्फ दो घन्टे मे अपना भाषण समाप्त कर दिया। मन्त्री जी के डिनर का टाइम होगया। वह जाने लगे। मगर बिना धन्यवाद लिए वह कैसे जा सकते थे? अस्तु बारी बारी से फिर सभापति, स्वागताध्यक्ष, मन्त्री और सयोजक ने उन्हे धन्यवाद दिया। मन्त्रीजी धन्यवाद का भार सम्हाले हुए बडी मुश्किल से उठे और मन्त्रीजी के उठते ही जनता भी उठ गई।

अब आप पूछेंगे कि सम्मेलन मे क्या हुआ? तो हम आपको बताएगे कि सभापति महोदय ने सम्मेलन मे रखे जाने वाले प्रस्तावो मे से दो पढ कर सुनाए और शेष 7 प्रस्ताव मच पर बैठे लोगो ने पढे हुए मानकर स्वीकार कर लिए। उपस्थित पत्रकारो ने मन ही मन आयोजको को धन्यवाद दिया कि जान बची और लाखो पाए। चलो, जल्दी से इस उद्घाटन का समाचार छापें। ••

5

▭ ▭ ▭

भैंस कि गधा ?

बात पुरानी है। अहमदाबाद की 25 धर्मप्राण महिलाएं गोहत्या के विरोध में स्थानीय बूचडखाने के सामने सत्याग्रह कर रही थी। लेकिन हुआ अचानक यह कि कसाई गायो की जगह उस दिन भैंसें काटने को ले आए। स्थिति ऐसी थी कि उस पर तत्काल ही करपात्रीजी से धर्म-व्यवस्था प्राप्त नही की जा सकती थी। सत्याग्रहिणियों को स्वयं ही किसी फैसले पर पहुचना था कि भैंस को रक्षणीय माना जाए या नही ? आखिर कुछ क्षणो की किंकर्तव्यविमूढता के बाद यही फैसला किया गया कि सत्य का आग्रह केवल गायो के लिए किया जा सकता है, भैंसो के लिए नहीं। क्योकि गाय के जान होती है, भैंस के नही। गाय गोरी भूरी होती है, भैंस निपट काली। दक्षिण अफ्रीका साक्षी है कि रक्षा या सुरक्षा का अधिकार जन्म से ही गोरो को प्राप्त है कालो को नही। इसलिए चाहे वह दूध अधिक क्यो न देती हो, उसका दूध अधिक पुष्टिकारक और सुस्वादु ही क्यो न होता हो—जहा तक रक्षा का प्रश्न है, आदोलन का प्रश्न है, वह गाय के लिए ही सुरक्षित है। भगवान को अगर भैंसो की रक्षा करनी अभीष्ट होती तो कृष्ण गायें नही, भैंसें चराते। शकर भोलेनाथ बैल को वाहन न बनाकर भैंसे पर सवारी करते। सज्जन पुरुषो को बछिया के ताऊ न कहकर भैंसिया के भाई कहा जाता। यह पृथ्वी गाय के सीग पर खडी न होकर भैंसिया की पीठ पर लदी होती। लोगो के नाम गोपाल न होकर भैंसपाल होते। इसलिए अहमदाबाद की महिलाओ के निश्चय की तारीफ ही करनी चाहिए कि उनकी सूझबूझ ने न केवल धर्म की मर्यादा को स्थिर रखा, अपितु उस दिन की गिरफ्तारी के सकट से भी अपने आपको बचा लिया।

लेकिन हिन्दुस्तान मे मौलिक मनुष्यो की कमी नही। यहा कला के लिए कला वाद के लिए वाद और विवाद के लिए विवाद करने वाले ही नही—आदोलन के लिए आदोलन करने वाले भी कम नही हैं। अगर निकट भविष्य मे ही कही कोई महापुरुष 'भैंस रक्षा आदोलन' का भी सूत्रपात कर दें और हिन्दुस्तान की किसी महानगरी मे 'भैंस सेवक मडल' की स्थापना हो जाए तो हमे आश्चर्य न होगा। बल्कि यह भी हो सकता है कि हिन्दुस्तान मे घर घर भैंस रक्षा की दुहाई फिर जाए और अगले चुनावो के लिए 'भैंस की रक्षा हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' एक नया नारा अभी से बल पकड़ने लगे।

हिन्दुस्तान मे यदि भैस रक्षा का आदोलन उठ खडा हुआ तो उसे दबाना सरकार को मुश्किल हो जाएगा। क्योकि गाय के मुकाबले मे भैस अधिक वजनदार और भौतिक स्वार्थों के निकट है। भैस रक्षा के लिए हमारे शास्त्रो मे भी कम तर्क नही हैं। प्राचीन ऋषियो ने भैस को अत्यन्त आदरसूचक महिषी नाम दिया है। इसके पूज्य पतिदेव स्वय यमराज की सवारी मे सन्नद्ध रहते हैं और ससार के बुद्धिवादी हजारो बार सिर पटककर यह फैसला नहीं कर सके हैं कि अक्ल बडी है या भैस।

□ □ □

एक समय की बात है कि ब्रिटेन के आम चुनावो म एक उदारदलीय सदस्य ने समुद्र-तट पर छुट्टी मनाने वाला का ध्यान आकर्षित करने के लिए गधे की सवारी स्वीकार की और 'माइक' हाथ म लेकर कहने लगे, "प्यारे भाइयो और बहनो, मुझ पर विश्वास रखो, मैं गधा तक से काम ले सकता हू। जसे मैं इस पर सवारी गाठ रहा हू, वसे ही ।"

पता नहीं गधा-सवार श्री आई० आई० आवस्ट चुनाव जीते या नही, लेकिन उन्होंने एक मिसाल अवश्य कायम कर दी कि चुनाव मे गधो का भी उपयोग किया जा सकता है। वैसे तो अब भी कुछ समझदार लोगो का खयाल है कि चुनाव के चक्कर मे पडना (भले) आदमियो का काम नही। जिन्दगी मे आदमी से अपना बोध ही नही ढोया जाता, फिर हजारो, लाखो मतदाताओ की लादी को घर से घाट और घाट से घर उतारना कोई आसान काम नही है। बिना शीतला माता की कृपा से यह काम सभव नही हो सकता। राजनीति भावुक आदमियो का खेल नही, कि जरा किसी ने छेड दिया तो काटने भौंकने दौड पडे। यहा तो अनियत्रित लोकमत का बोझा बिना दुलत्ती झाडे उठाना पडता है। चुनाव मे खडे होने वाले के सिर पर अगर सीग हुए तो वह कभी नही चुना जा सकता। इसलिए साकेतिक रूप मे उम्मीदवार को अपनी विशेषताओ की पूरी और सही जानकारी कराने के लिए गधा जितना उपयुक्त माध्यम है, उतना दूसरा कोई नही हो सकता। भारत के उम्मीदवारो को इस ओर अभी से ध्यान देना चाहिए। दो बला के मुकाबले यदि चुनाव-सग्राम मे विजय दिलाने वाला कोई चुनाव चिन्ह हो सकता है तो वह गधा ही है—निपट निरीह सेवाभावी फ़रमाबरदार और भारत के गाव-गाव म पाए जाने वाला—बहुमत सम्पन्न।

●●

6

□ □ □

सबसे भले जो मूढ

एक बडे आफिस से तीन आदमी साथ-साथ लिफ्ट से उतरकर द्वार पर पहुचे। एक के लिए द्वार पर कार लगी थी। शोफर न अदब से दरवाजा खोला। गाडी साहब को लेकर चली गई।

दूसरे ने चार कदम चलकर टैक्सी का आवाज दी। वह रुकी। ड्राइवर ने मीटर गिराया। वह बैठे। टैक्सी भी चली गई।

तीसरा व्यक्ति एक फर्लांग चल कर बस स्टाप पर पहुचा। लाइन लगी थी, उसने उसे और लम्बा किया। देखते देखते दो बसें निकल गइ। अब जब तीसरी आएगी तो वह जा सकेगा।

उसी आफिस से उन तीनो के पीछे-पीछे तीन और आदमी आपस म बातें करते उतर रहे थ। उनमे एक दाशनिक था, एक कवि था और तीसरा था चित्रकार।

दाशनिक कवि से बाला, दखा, दुनिया क क्या रग है। एक ही आफिस के तीन काम करन वाले। एक को कार दूसरे का टैक्सी और तीसरे को बस का इतजार।

कवि बोला, "हाँ पहले की मिसेज बगले के गेट पर कार का इन्तजार कर रही होगी। दूसरे की पत्नी रात को टैक्सी म खच किए पैसो के हिसाब पर खीजेगी। तीसरे की सोच रही होगी, उन्हे रोज देर हो जाती है।'

चित्रकार बोला, "कपडो से एक अफसर दूसरा दलाल और तीसरा क्लर्क लगता है।'

दाशनिक बोला "प्रश्न यह नही है कि कौन कैसा लगता है? प्रश्न यह है कि इनम से कौन महान है? कौन महत्त्वपूण है?'

कवि कहने लगे नही, पहले यह तय कीजिए कि महान बुद्धू होते हैं या बुद्धिमान?'

इस प्रश्न पर तीनो म पहले तो मतभेद होगया, लेकिन थोडी देर बाद वे तीनो ही इस प्रश्न पर सहमत होगए कि बुद्धि बडी है।

इन तीनों के पीछे हम भी चुपचाप मुह लटकाए चल रहे थे। लेकिन बुद्धि को प्रधानता मिलते देख हम हसी आ गई। सोचने लगे कैसे बुद्धिहीन हैं ये लोग! आज का युग बुद्धिमानो का नहीं। नाम लोग भले ही बुद्धिप्रकाश रख ले, जो जितना बुद्धिरहित होता है, वह उतना ही ऊचा पद, ऊची कुर्सी और ऊची सवारी पाता है।

उदाहरण के लिए प्राणियो म मनुष्य को बुद्धि अधिक मिली है। लेकिन बुद्धि को लेकर भी वह अतरिक्ष की सैर मे चूहा और कुत्ता का पिछलग्गू रहा है।

धरती पर भी यही हाल है। जो मूढ हैं, वे सुखी हैं और जो बुद्धि का भरोसा किए हुए हैं वे पापड बेल रहे हैं। इसलिए बाबा तुलसीदास कह गए हैं—

सबसे भले जो मूढ,
जिनहि न व्यापहि जगत गति।

●●

7

□ □ □

सुने री मैंने निर्बल केवलराम

एक पढे लिखे अंग्रेजीदा सज्जन उस दिन राजघाट से लौटकर पूछने लगे—"गाधीजी की समाधि पर जो भजन गाया जा रहा था, सचमुच बडा 'ब्युटिफुल' था।"

'ब्युटिफुल ?' हमने अचक्चाकर पूछा।

बोले, 'हा, हा बडे मीठे स्वर थे, उसके।"

'मीठे ?' हमने उनके चेहरे की ओर और भी ध्यान से देखते हुए प्रश्न किया।

"हा, मीठे यानी कोमल।'

"मीठे यानी कोमल! बहुत खूब कहा आपने। लेकिन वह भजन था क्या ?'

वह बोले, "अगर यही याद रहता तो आपको क्यो कष्ट देता ? एक अच्छा-सा गाना था, नही-नही माफ कीजिए भजन था—सुन री मैने ऐसे ही कुछ बोल थ उसके।'

"सुने री मैंने निबल के बल राम—ता नही था ?'

'हा, हा ठीक यही था।

"बस, इतना-सा आपको याद नही रहा ? जो चीज अच्छी लगती है, वह तो कभी भूली नही जा सकती।

"ठीक है। लेकिन उसके अथ समझ मे आए तभी तो याद रहे। आपकी हिन्दी म यही तो परेशानी है कि उसम कठिन शब्द बहुत होत है। अब लोग इसे सीखें तो कैसे सीखें ?'

हमने कहा "दुरुस्त फरमाते हैं आप निबल के बल राम समझना सचमुच ही आपके लिए कठिन काम है। आज की पीढी का बल और राम दोनो स ही क्या वास्ता ?'

वह सज्जन कुछ उलाहने भर स्वर म कहने लग, 'देखिए आप मजाक न कीजिए। मैं भी हिन्दू हू। क्या मैं भगवान कृष्ण के बडे भाई बलराम को नही जानता ? आप भी कसी बातें करत हैं ? मेरी बुद्धि म तो बल बस, 'निबल केवल' को लकर पड गया।

हमने कहा, "वही तो हम कह रहे थे। यह केवलराम हुए ही ऐसे हैं कि इन्होंने आपको क्या, अच्छे-अच्छो को चक्कर मे डाल रखा है।"

"वह कैसे ?"

"आप भी नही जानते ? इस पद्य मे एक अन्तकथा—यानी 'इनर स्टोरी'—छिपी हुई है।"

"अच्छा ! यह मुझे मालूम नही था।"

हमने कहा, "जी, वह आपको क्या, बडे बडो को पता नही। यह गहरी खोज-बीन यानी 'रिसच' का मामला है। यह बात तो सिफ विख्यात इतिहास लेखक मि० टॉड को ही मालूम थी, जिसे वह बिना लिखे ही स्वर्ग सिधार गए।"

"ओ हो ! यह बात है, तब तो आप अवश्य बताने की कृपा करे।"

हमन कहा, "जरूर, जरूर ! आज ही तो उसे प्रकट करन का ठीक प्रसग उपस्थित हुआ है। सावधान होकर सुनिए। बात मुगल बादशाह के जमाने की है।"

बीच म बात काटकर उन्होंने कहा, "मुगल पीरियड की ?"

"जी, हा ! एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा—बीरबल, ससार म सबसे निबल कौन है ?'

बीरबल ने दरबारियो और सेनापतियो पर नजर डाली और वहा उपस्थित सबसे तगडे सिपहसालार की ओर इशारा करते हुए कहा—"हुजूर, सिफ केवलराम ही एक निबल प्राणी है।'

बादशाह ने एक बार हाथी जस शरीरवाले केवलराम को और दूसरी बार बीरबल को आश्चय से देखते हुए पूछा—"यह कैसे ?"

"हुजूर कभी खुद परीक्षा करके देख लें"—बीरबल ने उत्तर दिया।

बीरबल का उत्तर सुनकर केवलराम की भौह तन गईं। उसन तलवार म्यान स बाहर निकाल ली और बादशाह को बा-अदब सलाम करके बीरबल को अपनी तौहीन करने पर द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारा।

बीरबल उत्तर म सिफ मुस्करा कर रह गए।

बादशाह ने केवलराम से कहा, "आप बेताब न हो। वक्त आन पर हम खुद इस बात का फैसला करेंगे।'

हुआ यह कि एक दिन बादशाह सलामत की सवारी नगर म गुजर रही थी। अकस्मात उनकी नजर राजा बीरबल और उनके पास खडे केवलराम पर पडी। अकबर ने आव देखा न ताव, महावत का हुक्म दिया—छोड दो हाथी इन दोनो के ऊपर !

अपनी प्राण रक्षा का प्रश्न था। केवलराम की समझ म पहले तो कुछ मामला न आया, लेकिन जब उसने हाथी की मदांधता के साथ-साथ बादशाह की आखा को भी मशाल की तरह जलता हुआ पाया तो उसके होश हिरन होगए और उसने भागने म ही अपना कल्याण समझा। लेकिन बीरबल तो बीरबल थे। निहत्थे थे तो क्या हुआ ? उन्हे अपने पीछे हलवाई की ठडी भट्टी मे एक कुतिया सोती हुई दिखाई पड गई। उन्होने सहसा उसे उठा लिया और फिराकर मारा हाथी के माथे पर इस तरह कि कुतिया के दोनो पज जा चिपके हाथी की दोनो आखो पर। सुनी जो कुतिया की "क्वाय-क्वाय" तो महावत ने बडी कोशिश की, लेकिन हाथी भागा उल्टे पाव बादशाह को लेकर ताबड तोड। बस, तभी से आगरे की औरता न यह गीत जोड लिया है—

सुने री मैंन निबल केवलराम।

समझे आप ? इसम जो बार-बार 'बल आता है वह बीरबल की ही याद दिलाता है और कोई बात नही।

सज्जन ने मुक्ति की सास ली—"तो यह बात थी। मगर गाधीजी की समाधि पर इसे यो झूम-झूमकर गाने की क्या बात है ?

"इसकी भी एक कहानी है, हमने कहा— 'गुलामी ने हमारा कम नाश नही किया। उसने हमारे इतिहास, साहित्य सबको चौपट कर डाला। अग्रेजा को यह बात मालूम थी कि हिन्दुआ के राम म बडा बल है। जहा धोखे स भी कही राम का नाम आ जाता है, हिंदू जोर पकड जाते है। इसे तोडने के लिए उन्होने बडे-बडे सगीतज्ञा की एक कमेटी बुलाई और डरा धमकाकर, कुछ को बहला फुसलाकर, इस गीत का यो गवाना प्रारम्भ कर दिया— सुन री मैंन निबल केवल राम। यानी मैंने तो केवल राम को ही निबल सुना है।'

"माई गॉड ! अग्रेजा न हिंदू धम के साथ ऐसा 'बिहेव' किया ? लकिन सुनिए, यदि ऐसा है तो राष्ट्रपिता गाधीजी की समाधि पर यह अग्रेजो का बिगाडा हुआ गीत क्यो गाया जाता है ?'

"इसका भी एक इतिहास है' हमने बतलाना प्रारम्भ किया— गाधीजी को जब यह मालूम हुआ कि अग्रेजो ने ऐसा अन्याय किया है तो उन्होने इसका अथ ही बदल दिया। गाधीजी के मतानुसार 'सुन री मैंने निबल क वल राम का अथ निबला का सहारा सिफ राम ही होता है।

"बहुत खूब ! बहुत खूब !! आपको अनेक धन्यवाद। हिन्दी भाषा म भी ऐसा 'पन' निकल सकता है यह तो मैंने आज ही समझा।'

हमने कहा 'आज तो बहुत देर होगई। कभी फिर आना तो 'कवि सुन्दर तो पनही सपन' का अथ भी आपको खुलकर समझाएगे।

••

इन तरहा म आपने सुना, कवि तीसरे नबर पर है। इनसे कोप करने के मानी हैं, अपनी फजीहत कराना अपने को परेशानी मे डालना।'

"वह किस तरह ?" मित्र सहज स्वभाव से पूछने लग।

"तो सक्षेप मे सुनिए" हमने कहना प्रारम्भ किया— कवि वह प्राणी है, जिसका मुह नही होता, पता नही क्या कह बैठे ? उसका कोई पता नही होता, पता नही कब कहा चला जाए ? उसे कोई ज्ञान नही होता, पता नही अपने अज्ञान म किसके सम्मान को कब ठेस पहुचा दे ? उसकी कोई जात नही होती, न जान कब किसकी बात विगाड द ? उसे किसी की शम नही होती, न जान कब किसकी शर्मो-हया उसकी दया की भिखारिन वन जाए।

'आप भी कसी बातें करते हैं," मित्र आश्चय प्रकट करत हुए बोले—' हमने तो किसी किताब मे यह पढा था कि—कविमनीषी परिभूस्वयमू।"

हा यह तो ठीक है लेकिन आपने किसी पुस्तक मे यह नही पढा— निरकुशा कवय "—कवि लोग बडे निरकुश होते हैं। यह समझिए कि इनके मुह पर लगाम ही नही होती। भरी सभाओ म प्रिये रूपसि, प्राण, सुन्दरी कह कहकर गीत गाया करते हैं उन सभाओ मे आप जानते हैं, औरतें भी होती हैं। सब सुनते हैं, पर कोई कुछ नही कहता। सिफ इसलिए कि निरकुश जीव है, कुछ कहो तो न जाने क्या कर बैठें ? इस लिए एक जले भुने नीतिकार लिख गए हैं—

कवय किन्न जल्पन्ति,

किन्न खादन्ति वायसा

"यानी कवि क्या नही साच सकत और कौआ क्या नही खा सकता ? इसीलिए कवि गिरधर दास इनसे तरह देने को कह गए हैं।'

यह सुनकर मित्र कहने लगे 'बात तो आप ठीक कहते हैं, लेकिन मरी समझ म इनका पाला कभी किसी सवा सेर से नही पडा नही तो सारा कविपन निकाल देता।

हमने बताया ऐसी बात नही है, पाल ता इनके रोज रोज विकटो से पडत ही रहते हैं। लेकिन परिणाम उनका कभी इनके विरुद्ध नही पडता।

एक पुरानी बात याद आगई। पजाब के एक राजा कवियो को बडे खुल हाथ से दान दिया करत थ। दीवान अपन महाराजा की इस आदत से बहुत परेशान थे। वह इस यत्न मे रहते थे कि कोई कवि उनसे मिलने ही न पाए। बहुत-से कवियो को उन्होंने दूर से ही टरका दिया था। लेकिन एक कवि ऐस निकले जो दीवान के सिर ही होगए। सुबह शाम उसके घर पर धरना ही दिए रहते कि मिलाओ महाराजा से।

दीवान को एक दिन गुस्सा आगया। बोले, "महाराज स आपकी भेंट हो सकती है। लेकिन एक शर्त पर कि मैं जो कहूगा, वह आपको महाराज के सामने कविता म

कहना पड़ेगा। नही कहाग तो सिर काट लिया जाएगा। और अगर कह दिया ता जितना पुरस्कार महाराज देंगे, उतना हमारी आर स भी दिया जाएगा।"

कवि बोले, "मजूर। बताइए क्या कहना है ?'

बात यह थी कि दुर्भाग्य से महाराज के एक ही पाव साबित था। दीवान न कहा, 'आप अगर कवि हैं तो महाराज के मुह के सामने उन्हें लगडा कहिए।"

कवि बोले "बस यही बात है। आप मुझे महाराज से मिलवाइए। मैं एक बार नहीं उन्हें तीन बार लगडा कहूगा।"

दरबार जुडा और कविजी उपस्थित हुए। उन्होंने महाराज को नमस्कार किया और दीवान की ओर एक नजर फेंक कर कविता कहना प्रारम्भ किया—

एक ही पांव सों साहब,
पूरब लौं सब जीती धरा है।

यानी कविता के पहले ही चरण से उन्होंने महाराज के एक पाव की कहानी कहनी प्रारम्भ कर दी। कवि ने अपनी कविता मे फिर कहा कि पूरब ही नहीं, पश्चिम दक्षिण और उत्तर सहित चारा दिशाओ को उन्होंने एक ही पर से जीत लिया है। आगे फिर महाराज को दूसरी बार लगडा बताते हुए कवि बोले कि अगर उनके दूसरा पाव होता तो वह न जाने क्या करते ? कही इस घुमा फिरा कर लगडा कहन को दीवान साहब स्वीकार न करें, इसलिए अन्त मे उन्होंने साफ-साफ कह डाला—

"जग जीतन हार तुही लगडा है।'

कविता के सुनते ही महाराज की तबियत फडक उठी! उन्होंने फौरन हुक्म दिया कि कवि का अभी 50 हजार रुपए तत्काल इनाम दिए जाए।

कवि ने झुककर महाराज को प्रणाम किया और कहा, "अन्नदाता की जय हो! हुजूर, दीवान साहब से भी कहिए कि वह भी अपना वचन पालन करें।'

महाराज ने दीवान साहब की ओर अय भरी निगाह से देखा।

दीवान के तो प्राण ही कठ म अटक गए।

महाराजा ने कवि से ही पूछा, "वह वचन क्या है, आप ही बताइए, कविराज!"

कवि ने भरी सभा म दीवान की शर्त दुहरा दी। सुनकर महाराज के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने कडककर कहा, 'अभी इस दुष्ट दीवान का सिर धड से उतार लिया जाए।"

तत्काल आज्ञा का पालन किया गया।

महाराज फिर कवि की ओर मुखातिब हुए और कहने लगे, "तुम सच्चे अर्थों मे कवि हो। तुम्हें 50 हजार नही, दीवान के पुरस्कार सहित पूरा एक लाख रुपया भेंट किया जाता है।'

इसीलिए कवि गिरधरदास कह गए हैं कि कवि को विरोधी नही बनाना चाहिए और यही सत्य आपकी जिह्वा से अभी प्रकट हुआ कि "कवि सौं कोप नही सपने।"

"ओह, बड़ी 'थ्रिलिंग' स्टोरी है! मैनी मैनी थैंक्स, नहीं-नहीं धन्यवाद! पर अपनी वह असली बात तो रह ही गई। क्या था वह पद—'कवि सुन्दर का पनही' सपने!" देखिए, मैंने इस बार तो पूरा शुद्ध सुना दिया न?"

हमने भी हंस कर कहा, "करत करत अभ्यास के जड मति होत सुजान' वाली बात है।"

●●

□ □ □

रोमाच और रोमाच

साहित्य मे रोमाच का बडा महत्त्वपूर्ण स्थान है। रसोद्रेक म उसे स्थायी सज्ञा प्रदान की गई है। उसके एक-से-एक रसपूर्ण उदाहरण साहित्य म मिलते हैं। एक प्रसग याद आता है। श्रीकृष्ण ने गोवधन पवत उठाया हुआ है। हजारो गोपी ग्वाल, गऊ-बच्छ उसके नीचे इन्द्रकोप से शरण पाए हुए हैं। उस समय सखिया राधा को कृष्ण के पास जाने से रोकती हुई कहती हैं। कवित्त का पहला चरण इस समय याद नही आरहा, दूसरा या प्रारम्भ होता है—

बार बार तोहि समुझाय करि हारी री।
भारी गिरि भार कर कठिन उठायो हरि,
ता-तर दुरे ह गाय, गोपिका बिचारी री।
तेरे नन, तेरी सौंह तेरे बस नाहि आली
लाल ललचह लखि रूप की उजारी री।
स्वेद कम्प ह्वं है, गिरि गिरि है रों अवश्य आज,
लगि है री कलक, लोग दह तोहि गारी री।

अर्थात राधा को देखते ही कृष्ण को रोमाच हो जाएगा और हाथ का गोवद्धन गिर पडा तो अनथ ही हुआ समझिए। यह रोमाच का एक सरस उदाहरण हुआ।

दूसरा उदाहरण गोस्वामी तुलसीदासजी का लीजिए। रोमाचित व्यक्ति का चित्र खींचते हुए उन्होने एक चौपाई लिखी है—

बचन न आव नयन भरि बारी।
सजल नयन रोमावलि ठाडी॥

रोमाचित व्यक्ति से कुछ बोला नही जाता, उसकी आखो म आसू भर आते है। उसके रोम खडे हो जाते हैं। रोमाच का यह उदाहरण कुछ करुणापूर्ण प्रसग लिए हुए है।

देवकीनन्दन खत्री और गोपालराम गहमरीजी के उपन्यासो को पढिए तो वहा पग पग पर रोमाच के दशन होंगे। लेकिन उक्त दोनो उपन्यासो के रोमाच कुछ भय जनक हैं, कुछ आश्चयजनक हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि साहित्य म जो रोमाच आते हैं वे शृंगार, करुणा, हास्य, वीर, भयानक आदि रसो मे समाए हुए हैं और काव्य की उत्तम कसौटी होने के कारण पढने म आन ददायक भी हैं।

लेकिन जबसे मनोविज्ञान जीवन ा एक बीमारी बना है, तबसे लोगा की रोमाच-तृप्ति केवल साहित्य पढ़ने से ही नही होती। हमने पश्चिमी सभ्यता के कुछ ऐसे प्रसग भी पढे-सुने हैं जब प्रेमिका अपने प्रेमिया के हाथ म हटर दे देती है और कहती है कि प्यार करने से पहले मेरी खाल उधेड दो। मनोवैज्ञानिको का कहना है कि यह आधुनिक प्रेमिकाआ की रोमाच प्राप्ति का ही एक प्रकार है।

विदेशी साहित्य म 'थ्रिल' का जो आज बोलबाला है, वह इसी वृत्ति की स तुष्टि का उदाहरण है।

लेकिन यह 'थ्रिल' या रोमाच जहा साहित्य म सुखद और मनोविज्ञान के अध्ययन म रोचक लगता है, वहा जीवन म उसका अनुभव एकदम विपरीत ही होता है। करुणा या शोक से उत्पन्न रोमाच मे ही यह विपरीत दशा नही होती। शादी विवाह जैसे अत्य त रसपूण प्रसगो म भी उसका असर उलटा ही पडता है।

एक गाव की घटना है। एक वर महोदय बडी शान से शादी करा कर घर लौट रहे थे। उम्र उनकी शायद कुछ अधिक होगई होगी या कुछ और कमी रही होगी कि उ हें वधू को प्राप्त करने मे कुछ राशि भी व्यय करनी पडी। घू घट म अपने मुखच द को छिपाए, झलमलाते शादी के वस्त्रा म अपनी लम्बी छरहरी देह को दुराए नववधू मायके से पहली बार ससुराल की यात्रा कर रही थी। मुद्दत से विधुरत्ता का कष्ट झेले हुए पति की सुखद कल्पनाए अपने पाश्व मे बैठी हुई पत्नी की दशन-लालसा के ज्वार मे ऊची ही ऊची उठ रही थी कि तभी एक ग्रामीण महिला ने डिब्बे मे प्रवेश किया। उसने वर-वधू को पहले दूर से देखा। फिर वह वधू के पास आई। उसे क्या खतरा था ? स्त्री को स्त्री की क्या लज्जा ? घू घट उठाकर वधू का मुख देख ही लिया !

पर यह क्या ! वधू के सिर पर तो कृत्रिम केशपाश थे। मस्तक पर बि दी अवश्य थी, पर उसके नीचे भौह-कमान कहा थी ? नेत्रा मे वह वेधकता, वह अनियारापन, वह चपलता कहा थी जो सुजानो को वश मे करनी है ? अधराधर किंचित लाल अवश्य थे, पर उनके ऊपर नकबेसर का चिन्ह कहा ? वहा तो हल्की-हल्की मू छें फूट रही थी। महिला चीखकर पीछे हटी—"अरे यह तो लडका है !"

पति को यह रोमाच कितना भारी पडा, यह तो वही गरीब जाने, मगर साहित्यकारो के सामने यह प्रश्न अवश्य पैदा होगया कि इस रोमाच की गणना वे किस रस मे कर सकते हैं ! और मनोवैज्ञानिक इसे किस अभाव की पूर्ति बता सकते हैं ?

●●

□ □ □

बेचारा कलाकार

घटना पुरानी दिल्ली के एक व्यस्त बस स्टैंड की है। कलाकार नई दिल्ली आने के लिए एक लम्बे क्यू में लगे थे। क्यू बहुत लम्बा था। दफ्तर का टाइम था। बसें भरी हुई आरही थी, सबको जाने की जल्दी थी। बस आते ही क्यू टूट जाता था और धकापेल होने लगती थी।

लेकिन कलाकार को बस मे जाने की उतनी जल्दी नही थी। उसका ध्यान बसो के आने-जाने पर था भी कम। वह बस को जरा कम और सवारियो को जरा अधिक देख रहा था।

वह कलाकार ही क्या जो अपनी ओर ध्यान दे। असली कलाकार तो वही होता है जो औरो के लहराते हुए कुन्तलो को, लहराती हुई लटो को, बल खाए हुए काकुलो को तो सराह सके, उनकी खूबियो पर तो रीझ सके, लेकिन उसे खुद अपनी शेव बनाने का ध्यान न हो। उसे औरो की नफासत, नजाकत सुघडता, स्वच्छता को परखने का सलीका इस तरह आता हो कि खुद अपनी पैंट और कमीज बदलने का सलीका लगभग भूल चुका हो।

कुछ करनी, कुछ करम गति' हमारे इस कलाकार की पैंट उस दिन पाजामा हो रही थी। कमीज भी कोई तीन दिन की बदली हुई थी और दाढी बनाने का तो, हमने कहा, उन्हे शौक ही नही था।

अजी, तो हुआ क्या कि एक कुछ खाली-सी बस आ ही गई। लोग उसे खाली देखकर टूट ही पडे। कलाकार का भी मन उस पर चढने को हो ही गया। लेकिन यह क्या ? जैसे ही उन्होने बस के पायदान पर पैर रखा, उनके आगे वाली सवारी चिल्लाई—"कट गई ! कट गई !!"

लोग चौकन्ने हुए। कलाकार की भी तन्द्रा टूटी—क्या कट गई ? कौन कट गई ? उन्होने समझा कि बस मे अवश्य कुछ बवाल है। वह पायदान से उतरकर नीचे खडे हो गए और सडक से हटकर फुटपाथ की ओर लौटे कि शोर मचा— "पकडो, पकडो, भागने न पाए। यही है। यही है।"

दो-तीन लोगों ने लपककर कलाकार को पकड़ लिया। एक आदमी अपनी लटकती हुई कटी जेब दिखाकर कह रहा था—मुझे इन्हीं महाशय पर संदेह है।

चौराहे से पुलिस का सिपाही दौड़ा आया। लगे लोग कलाकार को बुरा भला कहने। कलाकार परेशान था कि यह मामला क्या है? और लोग कह रहे थे कि देखो कैसा अनजान बन रहा है, जैसे इसे कुछ पता नहीं हो। तलाशी ली गई तो मौके पर 25 नए पैसों के अतिरिक्त एक चारमीनार का खाली पैकेट और मिला। लोग कहने लगे—माल इसने अपने साथियों को तीर कर दिया है। ले चलो इसे थाने में।

पाठको, अब तक हमने बहुत छिपाया, लेकिन अब हम नहीं छिपा सकते। आखिर जब्त की भी हद होती है। यह कलाकार कोई और नहीं, खुद हम ही थे। यन्त्र-तन्त्र के लिए मसाला खोजते खोजते आ रहे थे कि यह मुसीबत गले पड़ गई।

खैर जैसे-तैसे अपना पता ठिकाना बताकर जान-पहचान निकालकर, कुछ कह-सुनकर हम वहाँ से वापस तो आ गए। लेकिन उसी दिन से हमारा मन इस घटना को आपसे कहने को अकुला रहा था। पर कुछ अपने फजीते के कारण और कुछ कलाकार बिरादरी के अपमान के कारण अब तक जब्त किए हुए थे।

खैर अब तो हमने साहस करके यह कथा आपसे कह ही दी। अब तो अपने कलाकार साथियों से एक बात अवश्य और कहना चाहते हैं कि खुदा के वास्ते हमारे उदाहरण से सबक लें और अपनी दाढ़ी हर रोज नहीं तो दूसरे दिन अवश्य बना लिया करें। ●●

□ □ □

अगला विश्व-युद्ध भरोसे पर

अमरीका की ऋद्धि सिद्धि का रहस्य अब कुछ समझ मे आने लगा है। अमरीका खुलआम डालर और अणुबम का सग्रह करता है, मगर यह यह कभी नही कहता कि मुझे डालर पर पूरा भरोसा है या हम अणु बमा पर पूरा भरोसा है, उसका परम्परागत विरुद वाक्य यही है कि 'हम ईश्वर पर पूरा भरोसा है।'

यानी अमरीका म जो कुछ भी हाता है वह सब भगवान के नाम पर होता है। वह स्वय तो निमित्त मात्र है। भगवान लोगा को अपने कम का फल देने के लिए निधन बनाते हैं—वह क्या करे कि कचन उसके यहा खिचा चला आता है। भगवान सृष्टि का सहार करना चाहते हैं, वह क्या करे कि उन्होने उसे अणु-परमाणुआ का वरदान दिया है। वह भगवान की इच्छा के विरुद्ध नहीं चल सकता। उस भगवान पर पूरा भरोसा है। इसीलिए अमरीकी काग्रेस ने प्रस्ताव स्वीकार किया कि देश म जारी होने वाले नोटा पर छापा जाए कि हम ईश्वर पर पूरा भरोसा है।

लेकिन प्रश्न यह है कि अमरीकी नोटो पर यह विरुद वाक्य छपने पर अन्य देशा में इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या ईरान, ईराक, फिलीपाइन्स थाईलैंड लका और पाकिस्तान भी यह लिखें कि हम ईश्वर पर पूरा भरोसा है।' शायद नहीं। कारण कि उन देशा का सत्य स अधिक ठोस परिचय है और वे उसे कभी घुमाकर कहना पसन्द नहीं करेंगे। उनका तो एक ही आधार होगा— हम अमरीका पर पूरा भरोसा है।

इसकी प्रतिक्रिया साम्यवादी देशा म भी हुए बिना न रहेगी। वहाँ बेचारे ईश्वर का क्या ठिकाना? यो रूस को भी अपने साम्यवादी सिद्धातो और अणु आयुधा पर कम विश्वास नही है मगर वह भी अपन रुबला पर यही छपाएगा—'हमे शाति पर पूरा भरोसा है। मगर उसके साथी पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया आदि इन बेकार की बातो म नही फसेंगे, वह खरी खरी बात कहना पसन्द करेंगे—'हमे रूस पर पूरा भरोसा है।'

तब इग्लैड और फ्रास म भी भरोसा स्थिर करने के लिए कुछ-न-कुछ करना पड जाएगा। दोनो देशा की पालमेंटें बार-बार बैठने पर भी कुछ तय न कर पाएगी

और नेतागण देखते रहेंगे कि ऊंट किस करवट बैठता है तथा भारत के पचशील म विश्वास रखने वाले कितने देश अपने भरोसे पर दृढ़ हैं ?

इस प्रकार अगला युद्ध सीमा बढाने के उद्देश्य से नही होगा। अगर वह कभी हुआ तो इसी आधार पर होगा कि किसका किस पर भरोसा है ? और एक दूसरे के भरोसे को गलत साबित करने के लिए राष्ट्र परस्पर जूझेंगे और नतीजा यह होगा कि सबके विश्वास डिग जाएंगे।

लेकिन किया क्या जाए ? मनुष्य अपने भरोसे को, विश्वास को तो नही खो सकता—चाहे इसके लिए वह स्वय ही क्यो न खोजाए। ●●

□ □ □

सत्ता बैठी कार मे

उस दिन ससद मे बहस हुई कि भारतवष मे सत्ता का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। कहा गया कि 15 अगस्त 1947 को जो सत्ता लन्दन स लौटी थी, वह नई दिल्ली मे आकर रुक गई। सन् 50 म सविधान के सहारे उसे आगे बढ़ाया गया। वह आगे बढी जरूर, लेकिन प्रदेशा की राजधानी तक पहुँच कर उसने आगे बढन स इन्कार कर दिया। लोग उसे अब फिर आगे बढान म लगे है। कहत है कि जब तक सत्ता गावा तक नही पहुचेगी, तब तक जनता को स्वराज्य के सच्चे दशन नही होगे।

अखबार के दफ्तर मे चार बुद्धिवादी बैठे बात कर रहे थे। एक ने कहा—प्रजातन्त्र मे सत्ता वोटर के हाथ मे होती है।

दूसरे ने परिहास किया—बावले हुए हो। सत्ता वोटर के नही, मोटर के हाथ होती है। जो मोटर दौडा पाता है, वही वोट पा जाता है। जिसक पास मोटर है और उसम पेट्रोल भी भरा है, शासन का तत्र भी उसी के हाथ म है। मोटर उसी के पास होती है जो युक्ति भिडा सकता है। इसलिए राज आज वोटर का नही, मोटर का है।

तीसरे सज्जन बोले—मोटर की बात बेतुकी है। मोटर व्यक्तिवाद की सूचक है। प्रजातन्त्र मे व्यक्तिवाद के लिए कोई गुजायश नही। वहा व्यक्ति नही, पार्टी प्रमुख होती है। इसलिए सत्ता सरकार मे नही, पार्टी मे निहित होती है।

सुनकर चौथे सज्जन बोले—पार्टी म भी चलती उन्ही की है जो सा-कार (मोटर सहित) होते हैं। निराकार को वहा भी कोई नही पूछता। इसलिए इधर-उधर सत्ता के बैठने बैठाने की बात बेकार है। सत्ता स्वय कार में आराम से बैठी है। कौन कहता है कि उसका केन्द्रीयकरण हो रहा है। अजी वह तो इधर उधर आराम से फर्राटे भरती फिरती है। ●●

13

□ □ □

ए रे ताड झाड

शब्द म बडी सामर्थ्य होती है। शब्द को ब्रह्म कहा गया है। 'सबद' धम का सार है। जिसके पास शब्द सामर्थ्य नही वह कवि लेखक, पत्रकार, प्रोफेसर, वकील, नेता कुछ भी नहीं बन सकता।

शब्दो की मार तलवार से भी पैनी होती है। जिसे बोली की गाली दागना आता है उसकी बहादुरी का क्या कहना। एक बार हमने किसी को बहर ए-तवील गाते हुए सुना था—

मत बोली की गाली से घायल करो,
मेरे सर को उडा दो उजर ही नहीं।

लकिन दुनिया मे सभी एक से नही होत। बहुतो को बात लगती है, बहुतो को नही भी लगती। इन न लगने वालो को लक्ष्य करके ही शायद यह कहावत प्रसिद्ध हुई है कि लातो के देव बातो से नही मानते।

लातो के देवता चाहे न मान, लेकिन बातो के देवता अपना प्रयत्न फिर भी जारी रखते हैं। बात लगने की बातो का इतिहास साक्षी है। दो उदाहरण लीजिए—

हिन्दी मे वीर रस के एकमात्र कवि भूषण बचपन मे ही बडे अल्हड थे। भाई मतिराम कमाते थे, भूषण निठल्ले आराम से खाते थे। दबकर नही, दाबकर खाते थे। घरवालो पर ऐसा दबदबा था कि कोई जरा भी हुक्म की उदूली कर तो जाए?

लेकिन दबने की भी हद होती है। एक दिन भावज को ताव आ ही गया। भूषण ने दाल म नमक कम होने पर कुछ कहा तो भाभी बिगड पडी— बडा कमा कर लात हो न नमक!

बात लग गई। भूषण परोसी थाली छोडकर उठ बठे बोले — 'अब कमाएगे तभी खाएगे। और कमाया तो कैसा कि केवल एक कवित्त पर 52 हाथी 52 गाव और 52 लाख रुपया लेकर ही घर लौटे। कवित्त था—

इन्द्र जिमि जम्भ पर
बाडव सुअम्भ पर

रावण सदम्भ पर,
रघुकुल राज है ।
पौन वारि-वाह पर
शम्भु रतिनाह पर
ज्यो सहस्रबाहु पर
राम द्विजराज है ।
दावा द्रुमदड पर
चीता मग झुड पर,
'भूषण' वितुड पर
जसे मृगराज है ।
तेज तिम अस पर
का्ह जिमि कस पर,
त्यों मलेच्छ वश पर
शेर शिवराज है ।

लेकिन आप कहें कि बात केवल वीरो को ही लगती है किसी और को नही तो हम कहगे ऐसी बात नही । मिर्जा राजा जयसिंह का उदाहरण इसके विपरीत है । रसिक राजा अपनी नई नवेली रानी के रूप जाल म ऐसा लुब्ध हुआ कि उस राजकाज की सुधि ही नही रही । सुकवि बिहारीलाल को जब यह ज्ञात हुआ तो वे महल की डयोढी पर पहुचे और एक दोहा लिख भेजा—

नहिं पराग, नहिं मधुर मधु
नहिं विकास इहि काल ।
अली कली ही सों बिध्यो,
आगे कवन हवाल ?

राजा की आखें खुल गईं । लेकिन बहुतो की नहीं भी खुलती । व सत्ता के कुर्सी के मद मे एसे चूर होत हैं कि धूल म मिलन से पहले उन्ह होश आता ही नही । उनके बढन स किसी का भला नही होता । वे सिफ अपन ही लिए जीते है । ऐस लोगो को लक्ष्य करके ही किसी कवि न यह बात कही है—

हारे बटमारे ज
बेचारे मजलन मारे,
दुखित महारे सुख
तिनहू कू ना दियो ।
बन के जे पछी, तिनहू
कू ना मिल्यो अराम,

साँझ समै आयके,
बसेरो तिन ना लियो।
आपने हू देह को न
छाया कर सक्यो मंद,
भने 'दयानिधि' तेंने
जन्म ही वृथा लियो।
घाम को न आड़
फल फूल को न लाड़ तोमें,
ऐ रे ताड़ झाड़ तैंने
बड़ प कहा कियो ?

अब बताइए, इन ताड व झाडा पर बात की करामात खर्च करने से फायदा भी क्या ? यहाँ बात नहीं बन सकती।

आप पूछेंगे—य लेख किस पर है ? हम कहते हैं—किस पर नहीं है ? ••

14

□ □ □

दशरथ हुक्का पीते थे

दिल्ली की रामलीला म जनक न सीता जी के दहेज म बडा-बडी चीजें दी । उसके बारे म एक पाठक न हमारा ध्यान खीचा है । उन्होने लिखा है—

"जनाब, यत्रम्-तत्रम् के लेखक साहब, आपका ध्यान सब जगह जाता है । आप कहाँ नही पहुँचते ? अब तक ता कवियो के लिए ही यह था कि वह क्या नही सोच सकते और कौओ के लिए कि वह क्या नही खा सकते—राजधानी से प्रकाशित होने वाले 'हिन्दुस्तान' के यत्र तत्र-सवत्र' के सम्बन्ध म भी यह है कि वह क्या नही लिख सकता ।

"मगर महाशयजी उस दिन आपकी नजर धोखा खा गई और आपन दहेज की चीजो म रखी उस अहम चीज को नही परखा जो राजा दशरथ के लिए बडे चाव और प्रेम से पेश की गई थी । मेरा मतलब हुक्के से है ।

"अगर आपकी नजरो से वह बच गया तो दोष आपका नही, आपकी आँखो का है । इसके लिए आपको शीघ्र ही अपने चश्मे का नम्बर बदलवा लेना चाहिए । और यदि आपने उसे देखकर अनदेखा किया है तो हमें आपसे सख्त शिकायत है । आपसे भी अधिक उनसे है, जिन्होने इसे सीताजी के दहेज मे रखकर भारतीय संस्कृति को दूषित किया है ।"

इस पत्र को पढकर हमारे दिमाग म यह आया कि हम यह अखबारनवीसी का धधा तो दें छोड और अपने जीवन के शेष वष इस महत्त्वपूण काय के अनुसधान म लगा दें कि राजा दशरथ हुक्का पीते थे या नही ? यदि पीते थे तो उसम कौन सा तम्बाकू इस्तेमाल करते थे ? फिर तम्बाकू पर कोयला रखते थे या उपला के अगारे ? अगारा और तम्बाकू के बीच मे तवा रखना उन्हें पसन्द था या नही ? हुक्के का पानी वह दिन मे कितनी बार बदलते थे ? वह पानी शुद्ध सरयू जल ही होता था या उसे गुलाब, केवडा आदि से सुवासित किया जाता था ? इतना ही नही उनके हुक्के की नै लकडी की होती थी या किसी और पदाथ की ? वह कितनी बडी निगाली अपने हुक्के मे लगाते थे ? हुक्के को किस करवट रखते थे ? किस अदा स पीते थ ? दिन मे कितनी बार वह हुक्का पिया करते थे और हुक्का न मिलने पर उनकी क्या

हालत हो जाया करती थी ? क्योंकि दिल्ली की रामलीला वाला न जब हुक्का सीताजी के दहज म दिया है तो यह तो हो नही सकता कि यह बात केवल कपोल कल्पना हो ! और जब कोई चीज केवल कपोल-कल्पना नही है, उसम जरा भी अनुमान की गुजायश है ता वहां हम अवश्य अनुसधान की वृत्ति से काम लेना चाहिए।

हुक्का हिन्दुस्तान के लिए आज की चीज नही है। मनुष्य ही नही, दवता भी इसका आस्वाद लेते रहे हैं। यह बात हम अतिशयोक्ति के रूप मे नही कह रहे। न हमारा मतलब इस समय आपको इस लोक प्रचलित दोहे से प्रभावित करना है

कृष्ण चले बैकुण्ठ को,
राधा पकरी बाह।
यहा तमाखू पी चलौ,
वहा तमाखू नाहि॥

हो सकता है कि यह दोहा किसी मनचले विनोदी ने लिख मारा हो। हमने तो वृन्दावन के एक प्रसिद्ध मदिर म इसका पुष्ट प्रमाण अपनी आखो देखा है कि जहा ठाकुरजी की सेवा मे रोज हुक्का भर कर रखा जाता है। इससे कम से-कम यह बात तो सिद्ध होती है कि भगवान श्रीकृष्ण के समय तो हुक्का पिया ही जाता था।

हिन्दुस्तान के सनातन सामाजिक सगठन मे हुक्के का बडा महत्त्व है। पचा के न्याय का सिक्का हुक्के के ही जोर मे चलता है। गावा क पचायती विधान मे जो मौत से भी बडी सजा किसी को दी जा सकती है तो वह हुक्का बन्द करना ही है। वहा किसी का मान करना हो तो हुक्का भर कर दिया जाता है और अपमान करना हो तो तम्बाकू तक को नही पूछी जाती।

पचायते हमारे देश म आज की चीज नही। ये कृष्ण के युग मे थी, राम के युग म भी थी। न होती तो 'श्रीराम पचायतन' कहा से बन सकती। और पचायतें हो और हुक्का न हो यह नामुमकिन बात है। फिर कृष्णकालीन पचायता म हुक्का हो और रामकालीन पचायतो म न हो—यह कसे हो सकता है ? और रामकालीन पचायता म हुक्का चले और चक्रवर्ती राजा दशरथ हुक्का न पिए यह कसे हो सकता है ? राजा दशरथ हुक्का पिए और दिल्ली की रामलीला वाले उन्हें दहेज मे हुक्का न दें यह नितान्त अशास्त्रीय बात होती—एकदम भारतीय सस्कृति के प्रतिकूल। ●●

15

□ □ □

इनफ्लुएजा के बहाने

"क्यो जी, यह इनफ्लुएजा क्या है ?' हमारे पडोस म एक श्रीमतीजी अपने पति से पूछ रही थी ।

यह एक बीमारी है ।', पति न सक्षिप्त-सा जवाब दिया ।

पत्नी पति के इस बेमानी उत्तर से खीझ उठी । कहने लगी—"यह तो मैं भी जानती हू कि यह सब्जी या लिपिस्टिक नही बीमारी ही है । लेकिन श्रीमानजी, मेरा मतलब था कि यह क्या बीमारी है ?

पति जरा मौज के मूड म थे। कहन लग— 'ठीक ठीक तो बीमार पडकर ही बताया जा सकता है । बोलो, तुम राजी हो या मैं अपने-को तयार करू ?"

"पडें बीमार हमारे दुश्मन ! आपसे तो बातें करने का भी धम नही ।"

पत्नी रूठकर चलने लगी तो पति महोदय ने पल्ला पकड लिया—"अरे, धमपत्नी होकर यह क्या अधम की बात कर रही हो ?'

"नही-नही, जाने दीजिए । मेरे पास व्यथ की गप्पें लडाने को समय नही ।"

पति बोले—"हमारा कुछ नही । नही मानती तो जाओ । लेकिन पति की आज्ञा न मानने वाली पत्नी, जानती हो—क्या होता है उसका ?

"क्या होता है ? मैं भी तो सुनू ?"

' हा, हा, अवश्य सुनो,' पति कहन लगे— पति की आज्ञा न मानने वाली पत्नी, हमारे शास्त्रो के अनुसार इस जीवन मे नाना क्लेशो को भोगती हुई अत मे रौरव नरक म निवास करती है इसमें सशय नही ।'

पत्नी भी अब तरगित हो उठी थी । उन्होने भी चुटकी ली—"यह तो पुरुषो के पुराने शास्त्र की बात हुई । नारियो के अभिनव शास्त्र मे पत्नी की आज्ञा का उल्लघन करने वाले के लिए क्या दड विधान है, जानते हो ?

"नही देवि !" पति ने मुस्करा कर पूछा ।

"तो सुनो !' हमारे शास्त्रा मे इस प्रकार के उद्दड पतिया के लिए परलोक तक कोई सजा मुल्तवी न रखकर पत्नियो को यह अधिकार दे दिया गया है कि वे इसी

ज म मे अपनी आज्ञा का उल्लघन करने वाले पति का जीवन रौरव से भी रौरव डालें ।"

पति ने भयातुर होकर कहा—' नही प्रिये । मै वह गौरव प्राप्त करन को तैयार नही । ठहरो, बताता हू ।"

कहिए " पत्नी सुखासन पर बैठ गइ ।

पति ने कहना प्रारभ किया— तो सुनो, इनफ्लुएजा 'फ्लू' करन (उडन) वाली बीमारी है । यह जापान से फ्लाई (उड) करके आई है और भारतवप मे एक दूसरे को उडकर लग रही है ।"

मैं समझी ! तो यह देसी बीमारी नही है ?"

तुम ठीक कहती हो— यह देसी बीमारी नही । मगर जिस तरह हमारे शास्त्रो म हवाई जहाज, टेलीविजन, अणु परमाणु बम, सब बातें खाजन से मिल जाती हैं उसी प्रकार इस बीमारी का पता भी वैद्यो ने चरक सुश्रुत मे खोजकर निकाल लिया है। इसका देशी नाम वातश्लेष्मक ज्वर' है ।"

'इसके लक्षण क्या है ?' पत्नी ने जिज्ञासा की ।

"हा, प्रिये वह भी सुनो—इस रोग का रोगी पहले सिरदद की बात करता है । उसकी आखें लाल हो जाती है। फिर करवट बदलकर लेट जाता है और बोलने पर बात नही करता ।"

"देखो तुमने फिर मजाक शुरू किया ?' पत्नी न आखें तरेरी ।

पति कहने लगे—' हर्गिज नही, सच कहता हू । इसे तुम अपने ऊपर न लो । इस रोग के लक्षण ही ऐस है । '

'अच्छा !"

"लेकिन एक फक भी है ।" पति ने बताया ।

"वह क्या ?'

"यह रोग चाय पीने से हलका तो होता है, लेकिन सर या सिनेमा जाने से ठीक नही होता । ' पति ने उत्तर दिया ।

"तो अच्छा किससे होता है ? '

"जी इसका बहुत सस्ता नुस्खा है ? '

क्या ?

यही कि रोगी को कोई काम करन को न कहा जाए । उस आराम करन दिया जाए । उसका दिल न दुखाया जाए । उसे नाहक न सताया जाए । यानी, पति को अगर । होजाए तो पत्नी को चाहिए कि वह पति का दफ्तर न जाने दे । ठडा,

बासी या बेस्वाद न खाने दे। अपनी निज की जमा पूजी मे से भले ही सब कुछ खच होजाने दे, मगर हर्जे की, खर्चे की बात हर्गिज भी अपने ओठो पर न आने दे।"

और पत्नी को इनफ्लुए जा होजाए तो उसके बारे म भी कोई विधान है या नही ?" पत्नी ने जरा तिरछी नजर स पूछा।

"वह मैंने नही पढा।' पति ने कुछ उखडते-स लहजे मे कहा।

"तो वह मुझसे सुनो। अगर पत्नी को इनफ्लुए जा होजाए तो पति का यह कतव्य है कि वह हर्गिज दूकान न जाए, दफ्तर न जाए। दफ्तर की बजाय उन दिनो घर के कामो को ही मनोयोग से करे। चाय अपने हाथ से बनाकर पत्नी को पिलाए। पत्नी जो मगाए, लाता जाए। चाहे पाकिट का, जाकिट का, घर की तिजोरी का, बक की बोरी का मामला खलास क्यो न होजाए, लेकिन जरा भी उदासी को पास न फटकने दे।"

'यह भी खूब रही !' पति न कहा।

"तो वह भी खूब रही !" पत्नी खिलखिला उठी।

'कुछ रोग होते ही ऐसे है।" पति बोले।

"और रोगियो की न कहोगे, वे भी तो वसे ही होते है !"

"हु ! हु !"

"हा, हा !"

और होते हाते यह वार्तालाप एकाएक अटटहास म बदल गया। ●●

16

काफी हाउस की प्रेरणा

कल हम काफी हाउस गए। यह हमारा कोई पहला अवसर नही था। मगर कल हम महज काफी पीने ही वहा नही पहुचे थ। हमने अपने साथी कवि-कलाकारो से सुन रखा था कि जब कभी उन्हे प्रेरणा का नया स्रोत खोजना होता है तो वे काफी हाउस पहुच जाते हैं और वहा से उन्हे अपनी रचनाओ के लिए पर्याप्त मैटर' या 'सब्जेक्ट' मिल जाता है। हमने सोचा, चलो 'यत्र-तत्र सर्वत्र की प्रेरणा आज वही से ली जाए।

मित्रो की बात मे अतिशयोक्ति नही थी। हमने चारो ओर निगाह फेंककर देखा तो कई प्रेरणा' के ग्राहक वहा आसन जमाए बैठे दिखाई दिए। हमने ध्यान से देखा कि हमारे एक परिचित कवि की काफी बार-बार इसीलिए ठडी हो रही थी कि उनका ध्यान काफी पर न होकर दूर परदे मे से आती खिल खिल पर केन्द्रित था।

हमसे गज भर दूर एक टेबुल पर एक प्रौढ सज्जन हम अकेले बैठे हुए दिखाई दिए। उन्होंने अपने सामाने वाली कुर्सी पर अपनी पुस्तकें रख छोडी थी। कोइ वहा बैठने को पूछता तो कह देते, खाली नही है। वह अपने एकान्त को भग नही होने देना चाहते थे। उनकी टेबुल पर काफी प्लेट प्याले, भरे खाली रखे थ, मगर उनका ध्यान उन पर न था। काफी हाउस की छत पर उन्हे कोई मनचाही चीज नजर आगई थी और असावधानी मे वह कही नजरो से ओझल न होजाए इसलिए वह टकटकी बाधकर वही देखे जारहे थे।

एक चित्रकार को भी सब्जेक्ट' मिल गया था। वह छत की ओर ताकने वाले का स्कैच बनाने मे लग गए थे।

काफी हाउस मे एक ग्रामोफोन मशीन भी लगी थी। उसमे लोग सिक्के डालते जाते थे और अपनी पसन्द के गाने सुनते जाते थे। इन गीतो का आनन्द सिक्के डालने वाले पूरा ले पाते हो या न ले पाते हो मगर हमने वहा दो दर्जन से ऊपर व्यक्तियो को गीत की तान पर सीटी सगत करते जूती ताल देते और कधो के साथ भौहे मटकाते देखा। लगा कि प्रेरणा जैसे इनको भी मिल गई हो।

हमने यह भी देखा कि कुछ लोग अपनी-अपनी प्रेरणाओ को वहा साथ भी ले आए थ। कुछ की प्रेरणा आने वाली थी—वे उनका इन्तजार कर रहे थे। कुछ की जाने वाली थी—वे बेकरार हो रहे थ।

कही हमे मामला उल्टा भी नजर आया। प्रेरणा पहले से आई हुई बैठी थी, मगर उसके ग्राहक महोदय अभी तक तशरीफ नही लाए थे।

मतलब यह कि चारो ओर प्रेरणाओ का लेन देन चल रहा था। हमने सोचा, चलो आज यहा काफी मसाला अपने राम को भी मिल जाएगा। हम एक कुर्सी पर जम गए और इन्तजार करने लगे कि कुछ फुरे।

मगर हमारा अजब हाल था। हमारे सामने से फुर फुर प्रेरणाए उडी जा रही थी, मगर हम प्ररणा छोड काफी हाउस के बरा तक को न पकड पा रह थे। उसे हमने कई बार बुलाया टोका, रोका मगर वह भी अपनी प्रेरणाओ म उलझा था। जब डाटा तो दस मिनट बाद एक गिलास पानी लाया, फिर डाटा तो खाली प्याला रख गया। फिर कहा सुनी की तो कुछ और लाया, मगर तब तक काफी, काफी ठडी होगई थी।

काफी ठडे होते ही हमारा उत्साह भी ठडा होगया। प्रेरणा फसाने का खयाल जाता रहा। हम तभी खयाल आया कि हम पत्रकार हैं। हमारी भी सावजनिक जीवन मे कुछ जिम्मेदारिया हैं। हमने देखा कि सारा काफी हाउस सिगरेटो के धुए से भरा हुआ था और उस धुए को निकलन के लिए कही गुजायश नही थी। हमने देखा कि कैंटीन का धुआ भी इस धुए से प्रेरणा लेने को धीमे धीमे बढ रहा है। हमन देखा कि सारा काफी हाउस एक कबाडीघर बना हुआ है। चारो ओर चख चख चिल्ल-पो चीं-चीं। यह भी कोई प्रेरणा लेने की जगह है। हमारा दम घुटने लगा।

हमने बरा से पूछा—बाथरूम कहा है ?

उसन पहले तो हमे अचकचाकर देखा और बाद म हाथ हिला दिए। मानो कह रहा हो—जनाब, काफी चाहिए पीजिए, प्रेरणा चाहिए लीजिए, मगर हाथ धोकर तो हमारे पीछे न पडिए।

और हम बिना प्रेरणा लिए ही वहा से लौट आए। ●●

□ □ □

अब पशु-युग

एक युग था जब राजा, राजा से मिलता था। तो दास दासिया, गुलाम बादिया भेंट करता था। छोट राजा बडे राजा या बादशाह को सिपाही, सगीतज्ञ कवि आदि भेंट किया करते थे। यानी, वह आदम-युग था और भेंट मे आदमी ही भेंट दिया जाता था।

फिर एक जमाना आया, जब राजा राजा, रइस रईस बडे-बडे आपस मे मिलते प्रीति बढाने आदर प्रकट करते तो सोना चादी और रत्न जवाहरो का आदान प्रदान किया करते थे। वह स्वण युग था, रत्न युग था। तब चमक का युग था, चकाचौध का युग था।

बाद मे एक ऐसा भी समय आया जब लोग उपहार मे तलवार भेंट किया करते थे। कमर म कटार बाधा करते थ। गेंडे की कछुए की लोहे की ढाल भेंट किया करते थे। शिरस्त्राण, जिरह बख्तर, दस्ताने झिलम, टोपी देकर सम्मान करत थे और लेकर सम्मानित होते थ। वह शूरता का युग था। शौय का जमाना। लोग रत्नो का नही हथियारो का आदान प्रदान करते थे।

अभी कुछ दिन पहले हमन आपने अपनी आखो से देखा लोग एक दूसरे को पान खिलाया करते थे। बीडा भेंट किया करते थ। पान भी अगर पास न हुआ ता अन्दर की मुस्कान भेंट किया करते थे। दोनो हाथ जोडकर बताया करते थे कि हमारे आपके दिल मिले हुए हैं। वह सभ्यता का युग था। शिष्ट लोगो का जमाना था।

और आज जिस युग मे हम रह रहे हैं तब बडे लोग एक-दूसरे को हाथी भेंट किया करते हैं शेर भेंट किया करत हैं। बदले म रीछ कगारू शुतरमुग, जिराफ, लोमडी, खरगोश, तेंदुए भेंट लिया करत हैं। लोग भेंट देने के लिए बिल्लिया पालते हैं। लोग कुत्तो को भेंट करत हैं। कुत्तो की भेंट लेते हैं।

सवाल उठता है कि वह युग आदमियो का था, वह स्वण रत्नो का था वह शूरता का था वह शिष्टता का था, लेकिन आज के युग को हम क्या कहे ?

वसे देखा जाए तो आदमी आज आदमी कहा रह गया है ? उसक पास सम्पत्ति और शौय, शिष्टता या सभ्यता कहा बची ? उनके पास सिफ पशु बचे हैं या पशुता ही शेष है। अगर आज क युग म उसका आदान प्रदान होता है तो बजा क्या है ? अपनी रोजमर्रा की घटनाओ मे ही तो हम युग का प्रतिबिम्ब देख सकते हैं। ••

18

□ □ □

अणु-विस्फोट । सोने दीजिए

हमे नीद आरही है । हमे न छेडिए पलकें झपी चली जारही हैं । रात ही काफी देर तक जागते रहे । रात ही क्यो, कई दिन स हमे नीद नही आरही । कुछ जुकाम है । हलकी- सी हरारत भी है।

कई कारणा से ऐसा है । रात को छत पर लोग सोने नही देते । अन्दर कमर मे गर्मी मे सोया नही जाता । मच्छरो ने नाक मे दम कर रखा है । रात को दो बजे तक बरसते रहत हैं । भुनभुनाते रहते हैं । हम आखें मीचे सुनते रहते हैं । मन-ही मन भुनते रहते हैं । सिर धुनते रहते हैं ।

रात के एकान्त सन्नाटे म हमे तरह तरह के विचार सताते रहते है । कभी हम रूस का खयाल आता है तो कभी अमरीका का । कभी हमारे कलजे म काश्मीर कसकने लगता है तो कभी हमारे गले मे पजाब अटकने लगता है । कभी पाकिस्तान का खयाल आता है तो कभी हिन्दुस्तान का। कभी हम मरो की याद आन लगती है तो कभी जिन्दा लोगो पर लगे हुए करो की । कभी सोचते हैं कि पचवर्षीय योजनाओ का पूरा कसे पडेगा ? तो कभी कभी अपनी योजनाओ का भी खयाल हो आता है कि पच-वर्षीय योजना तो पूरी हो भी जाएगी, मगर अपनी तीस दिन की जो योजना आज 22वें दिन ही फेल होगई है, वह कैसे पूरी होगी ?

गज यह कि ऐसे-ही खयालो म रात क 2 3 बज जाया करते है और हम नीद नही आती ।

काफी देर बाद जब नीद आती है तो वह गहरी नही होती । उसमे तरह तरह के सपने मिले हुए होते हैं । कल रात ही की बात लीजिए । हमने देखा कि हम सडक पर खडे हैं और सामने से एक हाथी आरहा है । मरखना हाथी । जिसके लम्बे-लम्बे सोने मढे दात । उसने हमको देखा । हमने उसे । वह झुका । सूड लम्बी की । हमने सहारा लिया । उसने उछाल कर हमे ऊपर पहुचा दिया, अपनी पीठ पर । अब सडक पर हाथी । हाथी की पीठ पर हम । हाथी भागा जगल को बुरी तरह । लगा कि गिरे, अब गिरे, कि पीपल की एक डाल हाथ मे आगई पकड कर उसे झूल गए । हाथी नीचे से निकल गया और हमारे होश फिर अपना ठिकाना भूल गए कि नीचे उतरें तो कैसे और ऊपर चढें तो कैसे ?

सपने ने नया उछाल लिया। हम पीपल की सबसे ऊची डाल पर पहुँच गए। नीचे झुककर देखा तो पानी ही पानी मीलो तक। जहा तक नजर गई पानी ही पानी। न नाव, न पतवार। चारा ओर पानी और अकेले हम पीपल-सवार।

सोचा—शायद प्रलय होगई है और अकेले हम ही बचे हैं। हम पीपल के पेड पर। तभी पीपल खडखडाया बडे जोर से। लगा हम गिरे, अब गिरे, अब बस गिरे ही कि तभी आख खुल गई। श्रीमतीजी कह रही थी—'क्या आज दफ्तर नही जाना है ?"

हमने आखें मली। पलके झपकाइ। पानी सचमुच उतर गया था और हम पीपल से खाट पर आगए थे। हमने अभ्यास के अनुसार उठते ही सवेरे का ताजा अखबार उठाया।

खबर थी—अणु विस्फोट सफल होगया!

तभी से हमे फिर नीद आरही है। हमे छेडिए मत। सोने दीजिए। हम जागना नही चाहते। जागकर होगा भी क्या ? सपनो मे प्रलय, जागने पर विस्फोट। ••

19

□ □ □

दादुर-धुनि चहु ओर सुहाई

खबर है कि देश म मेढको का अभाव होगया है और भारत सरकार चिन्तित है कि मेडीकल कालेजो मे अनुसधान करने वालो के चलत हाथ कही रुक न जाए।

हम तो समझ रहे थे कि भारत मे आजकल सिफ मदु मशुमारी ही होरही है, लेकिन अब पता लगा कि मढको की भी गिनती की जारही है।

हम तो समझते थे कि इस अपने महादेश मे रोटी का, कपडे का, रोजी का तोडा हो, लेकिन महगाई के इस युग मे मनुष्यो और मढका की कमी नही। लेकिन हकीकत जो भी हो, आकडे यही बता रहे हैं कि दादुर धुनि' अब अलभ्य होने जा रही है।

क्या बात है जबसे मनुष्यो ने मेढका का काम सम्हाल लिया है, विधाता न मेढको का निर्यात किसी और ग्रह को करना शुरू कर दिया है ? या मेढक ही स्वय शम के मारे मरने लगे हैं ? अथवा वह सोचते है कि जब कप मडूकता सिफ हमारी ही विशेपता नही रही, जब हमारी तरह मनु के वशज भी छलागे मारन लग है और अब तालाबो मे ही नही, निगम, निकायो और असेम्बलियो मे भी टर-टर होने लगी है तो हमारे जीवन को धिक्कार है।

हो सकता है कि जो भी मेढक मरता हो। वह आजकल सीधा मनुष्य योनि म जन्म धारण करता हो या हो सकता है कि मढको को वेदपाठियो का श्राप लग गया हो। आपने सुना ही होगा बाबा तुलसीदास वेद पाठियो की तुलना मेढको से कर गए है—

दादुर धुनि चहु ओर सुहाई।
बेद पढ़ें जनु बटु-समुदाई॥

गुरु-चेला संवाद

पिछली अमावस की रात के अंधेरे मे एक चेला अपने पहुचे हुए गुरु के पास पहुचा और पर पकडकर प्रार्थना करने लगा—गुरुजी, आशीर्वाद दीजिए।

गुरुजी घबराए। वह एकाएक इस आशीर्वाद की कामना का रहस्य न समझ सके। उन्होने पूछा—आज असमय कैसे आगमन हुआ, बेटा ?

शिष्य बोला—गुरुजी, यही तो ठीक समय है—गुप्त मन्त्र और सफल वरदान प्राप्त करने का। बात यह है कि मैं दुनिया मे कुछ कर गुजरना चाहता हू। कुछ महत्वपूर्ण काम और आपका नाम करना चाहता हू। आप आशीर्वाद दीजिए।

गुरुजी उत्साहित हुए, बोले—हा-हा बेटा सुयश को बढाने वाला काम अवश्य करो। क्या कोई राष्ट्रीय या अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाना चाहते हो ?

चेले ने जवाब दिया—नही गुरुजी ! इनमे अब कोई सार नही रहा बेकार खर्चा, व्यय का सिरदर्द और नतीजा कुछ नही।

गुरुजी ने फिर पूछा—तो क्या तुम्हारा विचार कोई आन्दोलन छेडने का है ? जेल जाना चाहते हो ?

नहीं गुरुजी, आजादी के बाद जेल कोई नही जाता। यह धधा भी पुराना हो गया—चेले ने बताया।

गुरुजी हसे और कहने लगे—मैं समझा ! तुम आम चुनावो मे खडा होना चाहते हो ?

चेला भी मुस्कराया और बोला—गुरुजी वह तो बाद की बात है। फिलहाल तो मैं कुछ ऐसा करना चाहता हू कि हर लगे न फिटकरी रग चोखा आए। यानी खर्चा कुछ हो नही, भाग दौड कुछ करनी नही पडे और मजा पूरा आजाए।

अर्थात ?

अर्थात गुरुजी यह कि हर रोज अखबारो के पहले पन्ने पर नाम छपता रहे। फोटो खिंचते रहे। लोग चक्कर काटते रहे। खलबली मचती रहे। लोगो का ध्यान अपनी ओर खिचता रहे।

गुरुजी की समझ मे अब आया कि उनका योग्य शिष्य क्या करना चाहता है ? उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—अच्छा बेटे अनशन करना चाहते हो ?

चेले ने चहककर गुरु के दोनो चरण पकड लिए और बोला—आप तो गुरुजी अतर्यामी हो । मेरा ऐसा ही विचार है। आप इसी नेक काम के लिए आशीर्वाद प्रदान कीजिए।

लेकिन बेटा, तुम अनशन किस प्रश्न पर कर रहे हो ? पहले यह तो पता लगे !—गुरु ने पूछा।

गुरुजी, प्रश्न पर तो अनशन हरेक कर लेता है। मैं तो बिना प्रश्न के ही उत्तर दूगा। यानी, अनशन करूगा !

फिर भी कोई पूछेगा तो क्या कहोगे ?

कहूगा कि मैं अनशन प्रथा की समाप्ति के लिए अनशन कर रहा हू। जब तक वतमान और भविष्य के सभी अनशनकारी मुझे यह आश्वासन नही दे देंगे कि वे आगे से कतई कोई अनशन नही करेंगे मैं अनशन नही तोडूगा।

लेकिन बेटा यह कैसे सभव है ? तुम तो यो मर मिटोगे ।

गुरुजी, मरते तो कच्चे अनशनकारी हैं सच्चे तो दुनिया को मार कर मरते हैं। आपको पता है, मैंने क्या योजना बनाई है !

क्या ?

अनशन शुरू होने से 15 दिन पहले इतना दबा-दबाकर खाऊगा कि अगले 15 दिन तक पेट पानी भी झेलने को तैयार न हो। पन्द्रह दिन बाद गरम पानी मे सोडा डालकर पेट की सफाई करूगा।

यह सफाई कितने दिन चलेगी बेटे ?

दस दिन गुरुजी ! उसके बाद मैंने यह कायक्रम बनाया है कि सवेरे शाम बादाम रोगन की मालिश कराकर कम स कम दो छटाक पौष्टिक पदाथ रगो के द्वारा पेट मे उतार दिया करूगा। सुबह, दोपहर और शाम गरम जल के साथ विटामिन की गोलिया ले लिया करूगा। रात को जब सब लोग सोजाए और सबेरे जब तक लोग आ न पाए फलो का रस ग्रहण कर लिया करूगा। मेरा खयाल है कि इस क्रम से मैं तीन महीने तक आसानी से चल सकता हू ?

गुरुजी ने अब सलाह दी—बेटे, यह काम तुम मेरी कुटिया मे शुरु करो। मै तुम्हारी पब्लिसिटी का तो प्रबन्ध कर ही दूगा, साथ ही सुबह-सुबह ठाकुरजी के बाल-भोग का तर प्रसाद भर के दोना चुपके स दे जाया करूगा। उससे तुम्हे दिन भर भूख नही लगेगी। तुम कहते हो तीन महीने की, बेटे तीन साल भी तुम्हारा बाल बाका हो जाए तो मुझसे कहना !

चेला मगन होगया। उसे गुरु का आशीर्वाद और ठाकुरजी का प्रसाद मिल गया था।

□ □ □

प्रेरणा मिल गई!

जीवन में प्रेरणा का बड़ा महत्त्व है। प्रेरणा पाकर लोग क्या से क्या नहीं कर जाते? दुनिया में जान सबसे कीमती वस्तु है मगर प्रेरणा पाकर लोग उसे भी होम देने को तैयार हो जाते हैं। दुनिया में धन सबसे प्यारा होता है मगर सत्प्रेरणा मिले तो लोग उसे भी छोड़ देते हैं। यही बात धन, सत्ता और पत्नी प्रेयसी के बारे में भी है। लेकिन होनी चाहिए प्रेरणा।

यूं तो हर नए और मौलिक काम के लिए प्रेरणा आवश्यक होती है, लेकिन लिखने-पढ़ने के लिए प्रेरणा बहुत आवश्यक मानी जाती है। जैसे गाय बछड़े से दूध देती है उसी प्रकार लेखक भी प्रेरणा पाकर ही लिखता है। जैसे बिना उस्तरे के हजामत नहीं बन सकती उसी प्रकार बिना प्रेरणा के लेखन नहीं हो सकता।

यूं तो हर प्रकार के लेखन के लिए प्रेरणा आवश्यक है मगर कविता के लिए तो यह व अनिवार्य है, जैसे मुर्गे के बोलने के लिए सवेरा। अगर प्रेरणा न हो तो मुर्गे की बोलती बन्द हो जाए उसी तरह प्रेरणा न हो तो कवि की जुबान भी न खुले। क्योंकि मुर्गे का बोलना और कवि का गाना बेहद जरूरी है इसलिए मुर्गा प्रभात किरण को और कवि प्रेरणा को ढूंढ़ते ही रहते हैं।

दुनिया में जैसे अक्ल सबको सदा सुलभ नहीं है और हर लड़का मैट्रिक पास करते ही नौकरी नहीं पा जाता उसी प्रकार प्रेरणा हरेक के नसीब में हर समय सुलभ नहीं हुआ करती। कवियों को इसे प्राप्त करने के लिए न जाने क्या क्या करना पड़ता है? कोई रातों रात जागता है तो कोई घर से रस्सा तुड़ाकर भागता है। कोई सुनकर प्रेरणा लेता है कोई गुनकर। कोई ऊपकर प्रेरणा लेता है तो कोई सूंघकर। कोई घर से प्रेरणा लेता है तो कोई बाहर से। कोई छिपकर प्रेरणा लेता है तो कोई जाहिर से।

प्रेरणा प्राप्त करने का सिलसिला प्रायः बड़ा कष्टदायक होता है। इसके लिए जहाँ बहुत-से मिटकर प्रेरणा लिया करते हैं, वहां कुछ ऐसे भी हैं, जो पिटकर भी प्रेरणा लेने से बाज नहीं आते। अभी-अभी रोम से एक खबर आई है कि एक इतालवी रात एक फ़ाशसी तारिका से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए दीवार लांघकर उस

के कमरे मे दाखिल होगए। आगे क्या हुआ, उसका खुलासा तो हम नही मालूम। मगर पता यह लगा कि मामला पुलिस तक पहुच गया। बाद मे बेचारी अभिनेत्री ने चाहे दयावश या यह समझकर कि कौन मामले को तूल दे, कस को उठा लेना ही उचित समझा।

आप भले ही कवि को पागल कहे मगर बिना पागल हुए कविता नही लिखी जा सकती। दीवान लिखने के लिए दीवानापन जरूरी है। जो लोकलज्जा से डरेगा वह कविता क्या खाक करेगा ? जो पिटने से हटेगा वह शायरी के मैदान म क्या खाकर डटेगा ? जो साकी का जाम या काफी का प्याला नही पिएगा, वह कवियो की जमात म कब जिएगा ? वह मधुशालाई विरह रस मे हाय हाय कैसे पुकारेगा ? जो मधुबाला के पीछे दीवाना नही होगा, जो किसी अभिनेत्री की रूप शिखा पर परवाना नही होगा, वह मिलन विरह का अफसाना क्या कहेगा ? कसे सितारो की ओर उडेगा और कसे रस के दरिया म बहेगा ?

हम ही देखिए जिस दिन कोई बढिया प्रेरणा नही मिल पाती, लेख हमारा य ही रहता है। आज हम प्रेरणा मिल गई है तो बात बन गई है ! ●●

22

□ □ □

उत बूद अखड इतै असुवा

आज सवरे जब हम सोकर उठे तो आसमान काले बादलो स घिरा हुआ था। अगर नेहरू के शब्दो मे हमारा वैज्ञानिक मुर्गा (टाइमपीस) न कूक उठता, रसोई स श्रीमती जी के हाथ चढे बतन न ठुनक उठते, दूधवाला जोर स दरवाजा न पीट उठता और नीचे अखबार के हाकर ताजी खबरो का मन्त्रोच्चार न करते होते तो हम यह पता ही नही चलता कि छह कभी के बज चुके है। मालूम पडता भी कसे ? आसमान काले बादलो से छाया हुआ था।

हमने सोचा कि अगर आसमान काला है, तो आज पानी अवश्य बरसेगा। लेकिन हमारे ओठो से उठे इस 'अवश्य' को हमारी स्मृति ने चेताया कि भाई समझकर कहो। तुमने सुना नही—

काली घटा डरावनी
धौली बरसन हार।

ये काली घटाए सिफ डराकर रह जाती हैं बरसती नही। हम यह सोच ही रहे थे कि बडी जोर से इन्द्रदेव के नगाडे बज उठे—

किडकिडान धाधोकिट
धाधीक्टि, धडाम, धडाम,
तत्तडान, तत्तडान,
करत पुकारे है।
कहू 'नवनीत' चोप
चपल चमकन की
अररर कडान कडान,
करत हुकारे ह।
घूघूकिट, घूंघूक्टि
घमकत धाम-धाम,
धसकत प्रान विर-
हीन के, विचारे है।

ग्रीषम गनीम ताको
दखल उठाय आज,
बाजत ये मदन
महीप के नगारे ह ॥

हम लगा कि लो आज वर्षा ने अपन दुश्मन ग्रीष्म का उखाड फेंका । य विजय नगाडे इस बात के सूचक हैं । यह शीतल मद सुगध इसी दिग्विजय की बधाई बाट रही है । *यह बिजली की गरज इसी बात की घोषणा है कि अब पानी बरसेगा ।*

लेकिन हमारी विचार लाघवता के पख फिर एक लोकोक्ति ने काट दिए हमारे अतर से एक आवाज सी उठी— जो गरजत हैं, वे बरसत नही ।'

सवेरे सवेरे हम बुरी तरह विचारो के द्वन्द्व मे फस गए थ । हम मन म एक आस्था बनाते थे दूसरा विचार उसे एक हलके से धक्के से धराशायी कर देता था । हमने देखा कि वायु का प्रवाह कुछ गतिमान हुआ । हमारे दरवाजे के परदे उडे, खिडकिया खटकी । पडोस म शोर-गुल सा उठा । सुबह जल्दी जागने वाले बच्चे किलके—

बरसो राम धडाके से !
बुढ़िया मरे पडाके से !

हमे बडा बुरा लगा कि ये बच्चे बूढो का मरना क्यो मना रहे हैं । हमने सोचा अरे यह ससार है । तरुणाई बुढ़ापे को ढकेलती ही है । अब इस हवा को ही देखो । हमारी मेज पर बिना दबे कागज पत्रो को धकेले लिए जारही है । अब तक हमारे विचार कागज के पन्नो की तरह फडफडा रहे थे । अब सचमुच म कागज ही फड फड कर उड चले ।

हमने शीघ्रता से उठकर कागजो को सम्हाला । श्रीमतीजी को पुकारा— "अजी, मैंने कहा, चाय को आज क्या हुआ ?"

लेकिन रसोई दूर । आगन मे वर्षा, उन्होंने हमारी पुकार नही सुनी । हम निराश होकर फिर से पलग पर बठ गए । बैठ क्या गए, फिर से लेट गए । कुछ अजब सूना-सूनापन सा हमे इस समय प्रतीत होने लगा । अगर आप हमारी सूरत को उस समय देखत तो हमारी तरह आपके भी मुह से यह निकल उठता—

आंगन बरस मेह,
असुवा बरस सेज प,
उत मेहा, इत नेह,
होडा-होडी पड रही ।

यह होडा होडी मामूली नहीं, सागोपाग थी—

उत कारी घटा, इत है अलकं,
बग पांति उत, इत मोती-लरी।
उत दामिनि दत चमक इत,
उत चाप, इत भ्रुव वक धरी।
उत चातक जो पिउ पिउ रट
बिसर न इत पिउ एक घरी।
उत बूंद अखड, इते असुवा
बरखा विरहीन त होड परी।

हमने अचकचाकर अपन बालो पर हाथ फेरा। तसल्ली हुई कि य अभा रविवार के दिन कटे हुए ताजे अंग्रेजी-कट जस ही हैं अलके नही। हमने अपनी आखा पर हाथ फेरा। सौभाग्य से वहा भी आसू नहीं थे। रात की कीचड कोया म अवश्य लगी रह गई थी।

हमन मन म कहा—यह बात क्या हुई? हमन अपा आपको विरहिणी नायिका के रूप मे कैसे मान लिया?

तभी मन के एक कोन से फिर आवाज उठी—चलो कोई खास बुरा नही हुआ। और कुछ नही आज के यत्र तत्र के लिए सामग्री तो मिल ही गई। ●●

23

□ □ □

जाकी रही भावना जैसी

एक नवाब था मगर रुकिए, आजकल हिन्दुस्तान म नवाब नही होते—कहानी यू शुरु होती है कि एक आदमी था !

जी !

उसने एक जानवर पाल रखा था मगर ठहरिए, जानवर नही, वह पछी था !

क्यो, पछी मे जान नही होती क्या ?

क्या नही, वह बडा जानदार पछी था। उसका मालिक भी उसे दिलोजान से चाहता था।

जी !

इसका कारण यह था कि वह पछी अपने मालिक के इशारे पर अपनी जान लडा दिया करता था।

क्या नाम था उस पछी का ?

नाम पीछे, नामा पहले। मालिक की रोजी का खासा हिस्सा ही नही, उसके कज का बडा भाग भी उस पछी पर खर्च होता था।

बडा सौभाग्यशाली था तब तो वह पछी ?

जी हा ! वसा ही भाग्यवान था वह जैसा कि रईसा के लाडले कुत्ते और सन्तो की गाए हुआ करती हैं। दिन रात मालिक उसीकी सेवा मे जुटा रहता था। अब आप जरूर पूछेंगें कि पछी कौन था ?

जी, अवश्य !

तो सुनिए वह तीतर था। सुबह से ही उसके पिंजरे को लेकर वह आदमी बागो और दूर मैदाना म निकल जाता और उन दोना की कसरत शुरु हो जाती।

जी !

तीतर दौडता और लडता ही खूब नही बोलता भी खूब था। मगर वह क्या बोलता है और उसके बोलन का क्या अथ है इसके बारे मे विद्वाना मे बडा मतभेद था !

जी !

एक दिन उसकी बोली का मम जानन के लिए एक उच्च स्तरीय परिषद बैठी। सबके सामन एक गहन समस्या थी—तीतर कहता क्या है ?

जी !

तीतर के मालिक ने हुक्म दिया—बोल बटा !

तीतर ने हुक्म मिलते ही अपने पख फडफडाए और अपना मन्तव्य कह दिया। सुनकर लोग सोच म पड गए—क्या कहा ?

जब सब चुप रहे तो लाला बुलाखी राम बोले—तीतर कहता है—नून, तल, अदरख ! नून तेल अदरख !

इस परिषद मे एक प्रजापति भी आमन्त्रित थे। उन्होने आकाश म घिरे बादलो की ओर दखा और बताया—तीतर वर्षा के आगमन की बात कह रहा है—डोई हाडी घर रख ! डोइ हाडी घर रख !

पहलवान ने सोचा तीतर कभी गलत बात नही कह सकता। बोला—जी नही तीतर का कहना है—डड, बैठक कसरत ! डड बठक, कसरत !

वही कही एक कोने म कोई सत भी बैठे थे। कहने लगे—तीतर साधारण जीव नही अगले जन्म का कोई पहुचा हुआ महात्मा है। कह रहा है—सीता, राम, दशरथ ! सीता राम, दशरथ !

वाह ! आगे ?

आगे क्या कहानी कोई प्रेमचन्द कालीन थोडे ही है। नई कहानी है खत्म होगई !

लेकिन इसका अथ क्या हुआ ?

कैसे आदमी हो ! नई कहानी का कोई अथ पूछा जाता है !

फिर भी !

तो फिर हम दूसरी कहानी कहनी पडेगी।

तो कहिए न ?

तो सुनिए। एक थे श्री जुल्फिकार अली भुट्टो ! उन्होन कहा—अगर भारत न पाक पर हमला किया तो एशिया का बडा देश उसकी सहायता को आगे आएगा ?

जी !

चार सयाने इसका भी निम्न स्तर पर बैठकर अर्थ लगान लगे। एक बोला—
की तरफ इशारा है। भारत को धमका रहा है।

दूसरा बोला—जी नहीं, अमरीका की तरफ इशारा है कि तुम इधर गए तो हम उधर गए।

तीसरा बोला—जी नही, अपनी जनता को समझा रहा है कि घबराना नही पाकिस्तान का हिस्सा चीन को यू ही नहीं दिया है।

चौथा बोला—तुम तीनो का खयाल गलत है उस दिन का भाषण देने के लिए और कुछ था ही नही।

चारो की बात तो हुई। आप अपनी भी तो कहिए।

अपनी ? हम तो गोस्वामी तुलसीदासजी की सिफ एक चौपाई याद आरही है—

जाकी रही भावना जसी !
प्रभु मूरत देखो तिन तसी !

●●

24

□ □ □

मालावादी नही, भालावादी

बरसात म जैसे जगह जगह मेन्का का स्वर सुनाई देने लगता है उसी प्रकार श्रावण शुक्ला सप्तमी के आस पास जगह जगह तुलसी जयन्तिया के आयोजन होन लगत हैं। जो संस्थाए साल भर तक बिल्कुल सोती रहती है, वे एकाएक श्रावण की बूदो की झडी से हडबडा कर उठ खडी होती है और जो सामने मिल जाता है उस सिया राममय' जानकर प्रणाम कर उठती है। कहने का तात्पय यह है कि मत्री मिल गया तो मत्री, सेठ मिल गया तो सेठ वकील मिल गया तो वकील और कोई न मिला तो किसी साहित्यकार को पकड कर सभापति के आसन पर बिठा दिया जाता है। साल भर नही तो कम से कम एक दिन सारे देश मे यह नारा बुलन्द हो ही जाता है—

जाके प्रिय न राम वदेही,
तजिये ताहि कोटि बैरी सम,
यद्यपि परम सनेही।

उस दिन रामायण की पोथियो पर से धूल झाड दी जाती है। तुलसीदासजी के चित्र खोजकर निकाल लिए जाते हैं और बडे बडे नास्तिक झूम झूम कर गाने लगते है—

मगल भवन अमगल हारी।
द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी॥

बेचारी फिल्मी गीत गाने वाली लडकिया को भी इस दिन तम्बूरे पर तुलसीदास के पदो को अटक अटककर शद्ध गाने की कोशिश म अशुद्धि करने पर लाचार होना पडता है। वह दृश्य देखा लायक होता है जब 'देखा न करो तुम आईना, कही खुद की नजर न लगे' की मास्टर निहायत उदास स्वर मे गाती है—

जाउ कहा तजि चरन तिहारे।
काको नाम पतित पावन जग—
केहि हठि दीन पियारे॥

गजल और ठुमरी गाने वाले कव्वाली और दादरा से वाहवाही लूटने वाले, इश्क और शराब के रग म जनमानस को सराबोर करने वाले जब रामचरित मानस का यह छद आख बद करके सुनाते है तो नया ही दृश्य दिखाई देता

श्रीरामचंद्र कृपालु भज मन—
हरण भव भय-दारुणम ।

शायद सबसे अधिक कठिनाई उन नताओ और मत्रिया को होती है कि जिन्होंने तुलसीदास का नाम तो सुना होता है पर जिन्हें यह पता नही होता कि रामचरित मानस गद्य म लिखी गई है या पद्य म, गीतावली सूरदास की रचना है या तुलसीदास की ? बरवै रामायण रहीम न लिखी है या तुलसीदास ने ? व माइक के सामने खडे होकर जब तुलसीदास की तुलना शेक्सपीयर स करत है और तुलसीदास को राष्ट्रकवि बताते हुए कहते हैं कि ' हिन्दू मुस्लिम सस्कृति का जैसा समन्वय तुलसीदास म मिलता है, वैसा कही नही पाया जाता या तुलसीदासजी की रामायण को अहिसा का प्रतिपादन करने वाला आदिग्र थ सिद्ध करते हुए कहत हैं कि आज वही रामराज्य है, जिसका वणन तुलसी दासजी सैकडो वष पूव अपने ग्रथो म कर गए ह तो श्रोता उनकी ओर दखत रह जाते हैं।

इन तुलसी जयन्तियो पर जगह जगह नाटक और कवि सम्मेलन भी होत हैं इनमे राम का नाम लेकर लोग आत हैं, कविजन कविता पढते हैं—

सो न सका कल याद तुम्हारी
आई सारी रात ।
और पास ही बजी कहीं
शहनाई सारी रात ।

या श्रोता किसी कवि से फरमायश करत हैं कि "कविजी, अपनी वह रुबाई सुना दीजिए जिसम आपन कहा है—

प्राणप्रिये ! यदि श्राद्ध करो तो
मेरा, तुम एसे करना ।
पीने वालो को बुलवाकर
खुलवा देना मधुशाला ।

हाँ, तो इस बार भी बरसात आई । तालाबो म मढक टर्राने लगे और शहरो म तुलसी-जयन्तिया होन लगी । राजधानी म इन दिनो अधिक जोर तुलसी जयन्तियो का ही रहा । मथुरा के ब्रज साहित्य मडल ने भी दिल्ली मे आकर तुलसी जयन्ती मनाई राजापुर वाले भी कभी-कभी दिल्ली म आकर तुलसी जयन्ती मना ही जाते हैं। इस बार भी कम-बढ पाच छ दजन स्थानो पर तुलसी जयन्ती मनाई गई । श्रावण शुक्ला सप्तमी का ही कोई ठेका थोडे ही था, जिस दिन सयोजक को छुट्टी हुई, जिस दिन हाल खाली देखा या जिस दिन नताजी अथवा मत्री महोदय स समय मिल गया उसी दिन जयन्ती कर डाली । राम का नाम जब लो तब अच्छा । इसी बहान साल मे एक बार लोगो को तुलसीदास की याद तो आजाती है !

जयन्तियाँ तो बहुत हुई पर उनमे से एक उल्लेखनीय रही। इसमे तुलसीदासजी का मामला अदालत मे पेश किया गया। स्वय तुलसीदासजी तो अस्वस्थ होने के कारण शायद अदालत मे न आ सके पर उनके वकील ने उनकी तरफ से अदालत मे उनका बयान दाखिल किया। बयान क्या था—पडितो, टीकाकारो, रामचरित मानस के विशेषज्ञो और तुलसी-साहित्य के डाक्टरो के मुह पर खुला आरोप था कि उन्होने तुलसीदास के दृष्टिकोण को सही नही समझा। उनका दृष्टिकोण मालावादी नही भालावादी है। भाग्यवादी नही पुरुषार्थवादी है। पलायनवादी नही, शौर्यवादी है।

तुलसीदास के बयान मे कहा गया मेरे सभी पात्र कडाकेदार हैं। क्या अगद, क्या रावण क्या बाली, क्या परशुराम क्या मेघनाद, क्या लक्ष्मण, क्या भक्त हनुमान, और क्या भगवान राम, इनमे से कोई भी भाग्य पर भरोसा नही करता। राम ने जीवन मे समुद्र के तट पर केवल एकबार भाग्य पर भरोसा किया था कि तुरन्त ही उन्हें अपने छोटे भाई की भर्त्सना सुननी पडी—

> कादर मन कर एक अधारा।
> दव दैव आलसी पुकारा॥

सुनते ही राम को अपने पुरुषार्थ का बोध होगया और उन्होने लक्ष्मण से कहा—

> लछिमन बान सरासन आनू।
> सोखहु बारिधि बिसिख कृशानू॥

तुलसी के वकील ने बडे जोरो से दलील दी कि अगर मेरे मुवक्किल के चरित नायक श्रीराम भाग्यवादी होते तो सीता के हरण हो जाने पर यही कहते छोडो भाई लक्ष्मण! क्या परेशान होते हो भाग्य मे होगी तो सीता यही आ जाएगी, लेकिन इसके विपरीत मेरे मुवक्किल ने राम के मुह से कहलवाया—

> एक बार कसेहु सुधि पावौं।
> कालहु जीति निमिष महु लावौं।
> कतहु रहउ जौं जीवति होई।
> तात जतन करि आनऊ सोई।

हमे मालूम नही इस मुकदमे का फैसला किस प्रकार हुआ, पर हम अपना फैसला दिए देते हैं कि जब तक तुलसीदास का साहित्य मालावादियो के कब्जे मे रहेगा तब तक पुरुषार्थ के भाले पर जग ही चढी रहेगी। ●●

□ □ □

ककड खाइए !

जबसे हमने यह सुना है कि मध्य प्रदेश मे एक महापुरुष का बिना ककडो मे पेट नही भरता, तब से हमारी ज्ञान की आखें खुल गई हैं और हम खेद होने लगा है अपनी उस झल्लाहट पर जो दाल म ककड निकलने पर अपनी श्रीमतीजी पर नाहक व्यक्त किया करते थे। आखिर यह शरीर मिट्टी ही तो है। सतो की यह वाणी स्पष्ट है—

मिट्टी उढ़ौना, मिट्टी बिछौना,
मिट्टी मे सिरहाना होगा।
यह काया मिट्टी का पुतला,
मिट्टी मे मिल जाना होगा।

जब यह शरीर मिट्टी का बना हुआ है तो मिट्टी व ककड से इसका पोषण क्यो नही हो सकता ? शुरू करने की देर है, प्रयोग हमारे मदसौर मे भाई ने कर ही दिया है। आखिर मिट्टी खाना कोई नई बात तो नही। भगवान कृष्ण मिट्टी खाते ही थे—

तेरे लाला ने माटी खाई,
जसोदा सुन माई !

और इस माटी का चमत्कार यह कि यशोदा को माटी रजित मुह मे तीन लोक नजर आने लगे।

भगवान कृष्ण की बात यदि हम कवि-कल्पना कह कर छोड भी दें तो भी यह अच्छी तरह से पता है कि इस देश की अधिकाश माताए शिशु को जन्म देने से पहले मिट्टी, ककड और ठीकरे को अपने भोजन का प्राथमिक अग बनाया करती हैं।

कवि बिहारी लाल ने तो ककड खाने वालो को जगत का सबसे सुखी जीव बताया है —

पट पाख भख काकर, सपर परेई सग।
सुखी परेवा जगत मे एक तुही बिहग ।।

अर्थात् ककड खाकर अपनी परेई के साथ मगन रहने वाला कबूतर ही सब से सुखी जीव है।

कंकड खाने से मंदाग्नि हो जाती हो या रक्त सचार विधिवत न होता हो अथवा मनुष्य सासारिक भोगो के अनुपयुक्त होजाता हो, यह बात भी नही है क्योकि पुराने लोग कह गए हैं —

कंकड पत्थर खात ह तिन्हें सताव काम।

इसका एक अर्थ यह भी निकलता है कि कंकड मे कामोत्तेजक शक्ति निहित है। हमारे चिकित्सा शास्त्रियो को इस बात की गभीरता स छानबीन करनी चाहिए।

इसके साथ ही हमारा सुझाव यह भी है कि भारत सरकार का खाद्य विभाग इस बात की सभावना पर विचार करे कि अन्न की कमी के इस युग मे ककडो को पूरक खाद्य बनाया जा सकता है या नही ? यदि किसी प्रकार यह सिद्ध किया जासके कि ककडा म वे सब विटामिन उपलब्ध हैं जो आदमी को सुन्दर और स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक होते हैं और इनके प्रयोग से मनुष्य मे काम चेतना बढ जाती है, तो गावो की तो हम नही कह सकते, शहरो म ककड खाने का फैशन अवश्य चल सकता है। इसके कइ लाभ होगे। एक तो अन्न की बचत होगी, विदेशो से अन्न के आयात मे जो असख्य डालर व्यय होते हैं वे बच जाएगे और इस नए उद्योग म लाखो लोगो को लगाया जा सकेगा। इसके साथ ही ककड खाने स लोगो म स्वावलम्बन के भाव पदा होगे और लोग सोचेंगे कि जब ककडो से ही पेट भर सकता है तो फिर इस अधम पेट के पालन क लिए किसी की दासता क्या स्वीकार की जाए ? असत्य क्या बोला जाए ? अनाचार क्यो किया जाए ? इस प्रकार ककड नैतिक आदर्शों का पुन समावेश करेगा और ससार मे आज जो ईर्ष्या द्वेष, लिप्सा, हिंसा स्वार्थ एव युद्ध का वातावरण है, वह ककड खाने से शन शनै दूर हो सकता है। ककड विश्व-समस्या के एक आम हल के रूप म अनमोल रत्न के समान हमे सहसा प्राप्त होगया है। कभी युग था जब लोगो को हीरे जवाहर ककड के सामान तुच्छ दिखाई पडते थे लेकिन एक जमाना ऐसा आ सकता है जब ककडो का मोल जवाहरो स ऊचा माना जाएगा। अस्तु हमारा अनुरोध है कि ककड खाइए और सुखी रहिए। ●●

□ □ □

सब कुछ बडा

कल हमसे एक विदेशी टकरा गए। टकरा गए, यानी मुलाकात होगई। मुलाकात राह चलते ही हुई और होकर खत्म हो गई। इसीलिए हमने इसे टकराना कहा।

बात या हुई कि हम उनसे पूछ बैठे—हिंदुस्तान के बारे म आपकी क्या राय है?

बोले—राय बहुत बडी है।

हमने हसकर पूछा—बडी किस रूप म ? गुण म या सख्या मे ?

तो उत्तर मिला—आपके देश की हर चीज बडी है।

हमने प्राथना की—कृपया कुछ खुलासा कीजिए।

तो उत्तर मिला—देखिए यहा बडी बडी इमारतें हैं। बडे-बडे महल हैं। बडे बडे नगर हैं। बडे बडे जगल हैं। बडी-बडी नदिया हैं। बडे-बडे पवत है। हैं न ?

जी।

और जी, बडे बडे मदिर हैं, बडी-बडी मूर्तिया हैं। बडी बडी सभाए होती हैं।-बडे-बडे नेता है। बडे-बडे सूबे हैं। बडी बडी असेम्बलिया हैं। बडे-बडे मिनिस्टर हैं। प्राइम मिनिस्टर तो आपका ग्रेट है ही।

हमारी छाती गव से फूल गई, कहा—जी, आप सही फरमा रहे हैं।

सज्जन कहे जारहे थे—यहाँ बडा लम्बा आदमी भी लीजिए और बडा छोटा भी हाजिर है। बडा गोरा भी पा जाइएगा और बडा काला भी। बडा भला भी और माफ कीजिए बडा बुरा भी। सदाचार भी यहा बडा है। आप तो जानते ही हैं भ्रष्टाचार भी बडा ही होता है। न्याय भी जब यहा होता है, बडा ही होता है। और अन्याय भी जब होने लगता है तो उस छोटे की सज्ञा नही दी जा सकती।

बात सही होने पर भी हम एक विदेशी के मुह से यह सुनने को कम तयार थे, खासकर पहली मुलाकात मे ही। इसलिए हमने बात को बदलने की नीयत से कहा—लगता है, आप बड़े दिनो से यहा हैं ?

तो उत्तर मिला—जी नही, थोड़ें दिनो मे ही ये बड़ी-बड़ी बातें मैंने देख ली हैं। क्या बडा देश है कि आपका बडे से बडे ज्ञानी की बगल मे वज्रमूख भी आसानी स आसन लगाए जमा है। बडा सज्जन और बडा जाहिल, दोनो जिस देश म बडी तादाद म देखे जाते हैं, वह आपका हिंदुस्तान ही है। बडे भाग्य होते हैं उसके जो हिंदुस्तान को अपनी आखें बडी-बडी करके देख पाता है। उजाले और अधेरे का, धरती और आकाश का, पूव और पश्चिम का, भूत और भविष्य का, जिसे एक साथ दशन करना हो, हिंदुस्तान का टिकट कटा ले। यहा एकदम नगे मिल जाएगे और ऐसे भी मिलेंगे जिनको कि आदमी क्या सूय भी न देख सके। यहा बडे अमीर भी मिलेंगे, ऐसे कि जिन्हें अपनी दौलत का खुद भी पता नही है। बडे निधन भी मिलेंगे ऐसे कि जिन्होने जीवन मे कभी भरपेट खाना नही खाया, पूरा कपडा नही पहना किसी साये म पूरी रात नही गुजारी।

बात तो और भी बडी हुई, पर उनको बढा कर कहने से क्या फायदा ? सक्षेप मे यह समझ लीजिए कि मुलाकात काफी ज्ञानवद्धक थी। आपको यह तो पता है ही कि हमारे ज्ञान का वद्धन हमेशा विदेशी ही करते हैं। क्योंकि बडे ज्ञानवान और नेक होते हैं वे। ●●

27

विश्व नही, ब्रह्मांड

क्या आप विश्व मैत्री म आस्था रखत है ?

हम ?

जी हाँ, आप ।

हम तो जी विश्व मे ही विश्वास नही करते ।

क्यो ?

हमारे बाबा विश्वनाथ जी ने कहा कि बेटा, आज से 25 वष पूव मुहल्ला समितिया का मौसम था, बीस वष बाद नगर समितिया बनी, दस वष बाद जिला कमेटिया का नम्बर आया पाच वष पूव सूबा समितिया सगठित हुइ, तीन वष पूव जो भी सस्था बनी वह अखिल भारतीय थी और अब दो वष से सस्था बनाने वालो न विश्व पर चढाई कर दी है। जिस देखो वह विश्व स कम पर बात ही नही करता । पिछले एक साल स ही यह विश्व भी छोटा पडन लगा है । इसलिए सस्थापक लोग उसके पहले अखिल और निखिल श द जोडने लग गए हैं । इसलिए ।

इसलिए क्या ?

इसलिए ता हमने यह निश्चय किया है कि लाला बिस्मिल जी को सभापति बनाकर एक ब्रह्माड सम्मेलन की स्थापना करें ।

क्यो उसके पहले अखिल या निखिल न लगाइएगा ?

यह हमारे बाद के लोग लगाएगे ।

बात यह है कि जबसे विश्व के सचार साधन समुन्नत हुए हैं, तबसे यह दुनिया बहुत छोटी होगई है । ध्वनि और प्रकाश की गति से लोग उडने लगे है । चद्रमा और मगल के लिए दौड लग रही है । तब हमारा पिछड जाना ठीक नही । अब विश्व-शाति सम्मेलन से काम नही चलेगा, हम ब्रह्माड की शाति का ठेका लेना पडेगा । भले ही इस शाति के लिए युद्ध ही क्या न करना पडे ।

यही बात धम के सम्ब ध मे है । इस सष्टि मे धम से व्यापक तो कुछ है नही । वह तो देश और काल से परे है । वही जीव का ब्रह्म से साक्षात्कार कराता है तब उसका प्रचार केवल विश्व स्तर पर ही क्यो हो ? विश्व धम सम्मेलन क्यो नही

ब्रह्मांड धर्म सम्मेलन बन जाए ? आखिर विश्व शांति महायज्ञ इस देश में कब तक होते रहेंगे ? अब समय आगया है कि ब्रह्मांड शांति महायज्ञ की योजना की जाए ? क्योंकि हम अब विश्व नागरिक नहीं रहे। ब्रह्मांड के नागरिक होगए हैं।

अब हमारा लिखा हुआ प्रत्येक शब्द विश्व साहित्य म नहीं, ब्रह्मांड साहित्य मे स्थान पाएगा। क्योंकि विज्ञान ने आज ब्रह्मांड किरण का आविष्कार कर लिया है।

हम विज्ञान के मामले मे विदेशो मे पीछे रह सकते है, सस्थाओ के मामले म नही। हम और कुछ न कर सकें ब्रह्मांड सस्थाए तो बना ही सकते है !

आप बनाइए ब्रह्मांड-सस्थाए ! मगर हमे तो विश्व नाम के किसी भी सगठन पर विश्वास नही। हमे तो यह सब धोखा या प्रवचना ही मालूम पडती है।

ठीक कहा आपने। समूचा विश्व ही प्रपच है। धोखा है। विडम्बना है। इसीलिए हम इसम नही पडते। ब्रह्मांड मे ऐसी कोई गडबडी नही।

क्यो ?

मोटी-सी बात है। ब्रह्मांड के पहले ही ब्रह्म दिखाई पड जाता है। विश्व शब्द को तो सुनते ही ऐसा लगता है जैसे कोई विष देने जारहा हो।

जी !

फिर ब्रह्मांड म दर्शन और अध्यात्म भी है।

कैसे ?

ब्रह्मांड के पीछे अड है कि नही ? है तो जान लीजिए कि जो अड म है, वही ब्रह्मांड मे है।

मगर विष की आस करके कोई यह विश्वास करे कि वह जिन्दा बचेगा। तो उसकी गिनती शेख अब्दुल्ला जसो म ही करनी पडेगी।

जी !

जी क्या ? भ्रम को छोडिए। ब्रह्म को जानिए और ब्रह्मांड मे लीन होने के लिए ब्रह्मांड स विश्वास खीचकर ब्रह्मांड सस्था का निर्माण कर डालिए। ●●

□ □ □

ठीक है न ?

भारत म कितने पशु हैं ?

पशु-ही पशु हैं। आदमी हैं ही कहां ?

फिर भी ?

तो सुनिए। भारत म पशुओं की कुल सख्या 65 करोड 70 लाख है।

कसे-कैसे ?

यही कि 45 करोड तो इनम दुपाए हैं और 30 करोड 70 लाख चौपाए हैं।

(अब नही, तब) क्या इनमे कोई और भेद नही ?

जी नही। आहार, निद्रा, भय और मथुन म दोनो एक जैसे हैं। भद पहले धम का था, अब वह भी नही रहा। दोपाए भी चौपाया की तरह जूए मे जुते रहते हैं। पट भर लेना और सो जाना, यही इनका मुख्य काम है।

सुना है, दुपाया मे बुद्धि कुछ अधिक होती है।

क्यों नही। पशु-बुद्धि का विकास आजकल दुपाया म खूब होरहा है।

यह पशु-बुद्धि क्या है ?

यही कि आततायी मे यानी, मौत से डरना। परस्पर काम, क्रोध, अहकार, लोभ और माह के वशीभूत रहना।

और ?

और यह कि खा मरना या लद मरना।

क्या सारे पशु एक ही कोटि के होते हैं ?

जी नही, इनके कई वग होते हैं।

जैसे ?

जसे कुछ पशु दुधारु होते है। चौपाया मे जसे गाय, भस और बकरी आदि। दुपायो मे दुधारू पशु वे कहलाते है जो आमकर दत हैं।

और दूसरे ?

दूसरे पशु वे होत है, जो जोते जाते है। जसे बैल, भैंसें, ऊँट और घोड आदि। दोपायो म क्लक, मुशी मुनीम, अध्यापक, पोस्टमैन, चपरासी, मजदूर आदि।

और तीसरे ?

तीसरे प्रकार के पशुओ को लवारू कहते है। जस बछडे, पडरे और मेमन वगरह। दुपाया म कवि, लेखक, चित्रकार अभिनता, पत्रकार वगरह।

और चौथे ?

चौथे किस्म के पशु साड कहलात है दुपाया म इन्ही को दारोगा, कोतवाल, मैनेजर, डायरेक्टर, नता और मन्त्री कहते हैं।

और पाचवें ?

पाचवें पशु वे होते है जो काम म नही जोते जाते बल्कि पूजे जाते है। जसे राजकीय सवारी के हाथी घोडे और ऊँट वगरह। दुपाया म इन्हे सत महत, महर्षि, विचारक वैज्ञानिक, राजा महाराजा आदि कहत है।

क्या कोई छटा भेद भी होता है ?

छठे किस्म के पशु होते है वे जो ठल्ल या बेकार समझकर खूटे से खोल दिए जात हैं। दुपायो मे इन्ही को पेंशनयाफ्ता, उतरे हुए पहलवान, बडी उम्र की तारिकाए समथ बेटो के असमथ बाप चतुर बहुआ की बूढी सासें आदि कहा जाता है।

यह तो हुआ। मगर आप भी अपने को पशु समाज का समझते है या नही ?

क्या नही। भला हम जाति द्रोह करके अपने को कलकित कर सकते हैं ?

तो आप पशुओ की किस कोटि म आत है ?

हम !

जी हाँ !

बताना ही पडेगा ?

क्यो अपने बारे मे कहने म कुछ शम आती है क्या ?

अजी पशुओ म शम और लिहाज का क्या काम ?

तो फिर बताइए न ?

अच्छा सुनिए। हम मकान के बाहर जजीर से बधे उस कुत्ते के समान है जो हर आहट पर भौंक कर मकान वालो को चेतावनी देता रहता है।

इसके माने यह हुए कि अपनी गिनती आप वफादार पशुआ मे करते है ?

हा मगर एक भेद है। हमारी वफादारी भी पेट की खातिर ही है। हम भी गरो पर ही भौकते हैं। अपने घर के ही शेर हैं।

नही तो ?

नही तो सकट पडने पर हम भी अपनी दुम दबा लेते हैं।

यानी आप देशी है ?

और क्या ? अगर विदेशी होते तो सोफे पर या किसी की गोद म बठे होत। क्यो ठीक है न ?

●●

29

□ □ □

चाहिए ही चाहिए

आजकल के युग को आप एक शब्द में व्यक्त कर सकते हैं ?

क्यों नहीं।

तो बताइए, वह कौन सा अकेला शब्द है जिसमें वर्तमान युग की सम्पूर्ण आत्मा अभिव्यक्त होती है ?

तो सुनिए वह शब्द है—चाहिए !

चाहिए ?

जी हां, आज हर आदमी यही कहता नजर आता है कि उसे यह चाहिए, वह चाहिए। हर दल का यह नारा है कि यह होना चाहिए, वह होना चाहिए ! हर नेता का यही उपदेश है कि समाज को ऐसा होना चाहिए, वैसा होना चाहिए। मतलब यह कि आज का युग चाहल का है, चाहिए का है।

यह तो ठीक है, मगर यह बताइए कि क्या करना चाहिए ?

करना ?

जी !

हमारे नेक विचार से तो खाकर सो जाना चाहिए और मारकर भाग जाना चाहिए।

और यदि खाने को मिले नहीं और मारने की दम न हो तो ?

तो ?

जी !

तो फिर साफ-साफ कह देना चाहिए कि 'भूखे भजन न होय गोपाला, ये लो अपनी कण्ठीमाला !"

आप भी क्या बीसवीं शताब्दी और कांग्रेस के राज्य में कण्ठी माला की बातें करते हैं !

जनाब, आज के जमाने में आदमी को यथार्थवादी होना चाहिए।

यथार्थवादी ! यानी, पदार्थवादी।

जी !

तो सुनिए—

जिसका जितेक साल भर मे खरच,
उसे चाहिए तो दूना, प सवाया तो,
कमा रहे !
नरवारी, हूर-जसी, सुदर शऊरवारी,
हाजिर हमेशा होय, तो दिल थमा रहे,
'ग्वाल कवि' साहिबे कमाल इल्म
सोहवत हो,
याद मे गुसया की हमेश विरमा रहे।
खाने को हुमा रहे न काहू की तमा रहे
घर मे जमा रहे तो खातिर जमा रहे।

यह हुमा क्या बला है ?

जी, हुमा एक पक्षी होता है। मासाहारी लोग इस बहुत पसन्द करत है।

तब तो आपकी गति भी इस समय पछियो जसी होरही है।

कसे ?

बस, उडाने भरे जारहे है। कोई काम की बात नही बताते।

काम ?

जी !

तो सुनिए—

अजी, काम करना तो हमको,
नहीं पिताजी न सिखलाया।
छ दर्जे तक पढे वहा भी—
नहीं काम का लेसन आया
फिर गीत मे लिखा हुआ है,
काम क्रोध से दूर रहो रे !
इसीलिए, यदि समझदार हो,
हमे काम को नहीं कहो रे !

अच्छा काम की नही बेकाम की ही सही।

बेकाम की ?

जी !

तो सुनिए—दुनिया म आज सबस बडा महत्त्व किसका है ?

डालर का !

डालर सबसे अधिक आज किसके पास है ?

अमरीका के।

अमरीका के लोगों को वहां के डाक्टरों ने, जानते हो, आजकल क्या सलाह दी है ?

जी, नहीं।

तो सुनिए— उन्होंने कहा है कि अमरीकियों को पैदल चलना चाहिए और कुत्ते पालने चाहिए।

इसका मतलब ?

इसका मतलब यह कि पैदल चलने से स्वास्थ्य ठीक रहेगा और कुत्ते पालने से सुरक्षा रहेगी। दुनिया के सामने इस समय दो ही समस्याएं प्रमुख रूप से उपस्थित हैं—एक पेट की और दूसरी सुरक्षा की। अगर ये हल होजाएँ तो और क्या चाहिए ?

मगर बाबा तुलसीदास तो कुछ और ही कह गए हैं।

क्या ?

यही कि—'अधिक चले को बीर न होई।'

जी।

और यह भी कि 'कुत्ता काटे तो भी बुरा और चाटे तो भी बुरा।'

गलत ! एकदम गलत ! !

कैसे ?

पैदल चलना बुरा होता तो विनोबाजी पद यात्रा करते ?

जी !

कुत्ता पालना बुरा होता तो धमराज युधिष्ठिर सगे भाइयों और प्राण प्रिय भार्या को छोड़कर कुत्ते को स्वग ले जाते ?

वह कुत्ता तो धम का अवतार था !

अजी वही नहा ससार के सभी कुत्ते वह चाहे जिस योनि मे हो, धम के अवतार होते हैं। उनको पालना धम का ही पालन करना है।

●●

□□□

गुड-चीनी सवाद

घटना हिन्डन नदी के पुल की है। एक ट्रक पर गुड और चीनी दोनो सवार थे। अंधेरी रात थी। ड्राइवर पिए हुए था। सीमा के पहरेदारो ने भागते हुए ट्रक को ललकारा तो उसे होश आया। एकाएक झटका खाकर ट्रक खडा होगया। चीनी के ऊपर गुड की भेलिया जा गिरी। बिगडकर चीनी बोली—बडा बदतमीज है। ऊपर क्या गिरा पडता है, ठीक से अपनी जगह नही बठता।

गुड जो इस दुर्घटना में शारीरिक चोट खा गया था, अब चीनी द्वारा फटकारे जाने पर उत्तजित हो उठा। बोला—कौन गिरेगा तुझ बदशक्ल पर, जाकर ड्राइवर से अपना सिर फाड।

चीनी मुह बिचकाकर बोली—ओहो। क्या कहने है, छैला के। यह मुह और मसूर की दाल। तू तो मेरी एडिया की धोबन भी नही है। किसान की कढाही का लौदा। जरा शीशे मे अपनी शक्ल तो देख। ऐसे लगता है जैसे कोई पीली मिट्टी का ढेला हो। और मरा रूप। हिन्दुस्तान की नारिया टनो साबुन और मनो पाउडर लपेट लें तब भी मुझे नही पा सकती। चादी और चादनी दोनो शरमाती हैं मुझे देखकर।

गुड बोला—छोकरी, अपने मुह मिया मिट्ठू न बन। सारा शरीर तो तेरा फटा पडा हुआ है। खडा तक तुझमे हुआ नही जाता। शरीर मे नाम मात्र को तेरे खून है नही। यहा गिरी वहा बिखरी। मूर्खे सौन्दर्य सफेदी मे नही, ललाई म होता है। तू विलायत की नकल करने वाली शहरातिन मुझे देशभक्त तपस्वी का क्या मुकाबला कर सकती है?

चीनी तमककर बोली—तू अपने को देशभक्त कहता है? बता इस सकटकाल मे तू कितनी विदेशी मुद्रा कमाकर देश को दे रहा है। निखट्टू कही का। अरे तू तो लकीर का फकीर है। आज से हजार वर्ष पहले जो तेरी हालत थी, वही आज भी है। नए युग का आदमी तेरी कोई बात पूछता है? तूने कालेज का मेस काफी हाउस रेस्ट्रां होटल, पार्टिया का कभी मुह भी देखा है। किसी भले आदमी की दावत मे कभी तुझे बुलाया जाता है? मगर मुझे देख। मेरे बिना न सभ्य समाज मे कोई चाय पी ... है न पार्टियो मे आइसक्रीम खा सकता है। आज के समाज मे ड्राइग रूम से

लेकर रसोईघर तक में मेरा साम्राज्य है। अशोका और ताज से लेकर नत्थू चाय वाले तक की रोजी मेरे बल पर चलती है। कुमारी लड़कियां अगर ठीक से मेरा व्यवहार न करें तो शादी के वक्त अयोग्य करार दे दी जाएं। बूढ़े अगर मुझे ज्यादा इस्तेमाल करने लगें तो बीमार पड़ जाएं। मैं भारत माता की कमाऊ बेटी हूं और तू उड़ाऊ कपूत! तू दकियानूस और पुरानपंथी है और मैं नवयुग की प्रतीक। तू मैला, मैं उजली। मैं जवान, तू खूसट। चल परे हट।

गुड़ को हंसी आ गई। बोला—अरी विषकन्या, रोगों की जड़, सफेद सांपिन, क्या अपने गुणों का बखान मुझसे करती है? तू ऊपर से ही गोरी और मीठी है। वास्तव में तो जहर है जहर! तेरे चक्कर में जो आया उसका खून खराब हुआ। फोड़े-फुंसी होने लगे। तेरा अधिक सम्पर्क हुआ कि रक्तचाप, दिल की बीमारी, मूर्छा और मरण दिखाई देने लगा। मगर मेरा सम्पर्क गर्मियों में शीतल और जाड़ों में गर्म! बच्चों को बढ़ाने वाला, युवकों को पुष्ट करने वाला और बुढ़ापे को दूर रखने वाला है। मैं स्वस्थ व्यक्ति की सेवा करता हूं और अस्वस्थ की भी। मेरे मन में पशुओं के प्रति भी ममता है और आदमियों के भी। मैं गरीब के सत्तू का भी साथी हूं और रईस के षटरस व्यंजन का भी। तू तो इतनी खर्चीली है कि तुझे प्राप्त करने के लिए ढेरों रुपए खर्च करने पड़ते हैं। पर मैं तो ऐसा सहज सुलभ, सेवाभावी और व्यापक हूं कि मुझे न बनाने में कष्ट, न बुनाने में। मैं राष्ट्रव्यापी हूं, राष्ट्रसेवक हूं और तेरा तो नाम ही चीनी है। घृणित! दगाबाज! तुझे तो मैं देश से निकालकर ही दम लूंगा! नहीं जाएगी तो कच्चा चबा जाऊंगा!

चीनी बोली—चल चल! गुड़-गोबर कहीं के! तुझे आजकल सिवाय खच्चरों और घोड़ों के पूछता कौन है? मैं जरा भी आंख से ओझल हुई कि सारे में त्राहि त्राहि मच जाती है! तू गांवों में पड़ा-पड़ा सड़ रहा है, तुझे पूछता ही कौन है? तेरा मोल क्या?

गुड़ ने भी तुर्की-बतुर्की जवाब दिया—मोल! बावली तुझे क्या पता? मैं भी आजकल गेहूं के ड्योढ़े और दूने भाव बिक रहा हूं। मुझे तो लोग सिर पर उठाए फिर रहे हैं और मेरे लिए सत्याग्रह करके जेल जा रहे हैं।

चीनी ने कहा—इसमें कौन-सी बड़ी बात है! सजा तो मेरे प्रेमियों को भी हो रही है।

गुड़ बोला—मगर देख, फर्क इतना है कि मेरे लिए सजा काटने वाले देशभक्त और तेरे लिए जेल जाने वाले देशद्रोही।

यह विवाद शायद आगे भी चलता, मगर तब तक पुलिस वाले ट्रक पर आ धमके और उन्होंने चीनी और गुड़ दोनों को धकेलकर ट्रक से नीचे फेंक दिया। ●●

31

□ □ □

साडी और दाढी ।

साडी और दाढी म अगर सघप हो जाए तो आप किसका पक्ष लेंगे ?

पक्ष लेने से पहले यह मालूम करना होगा कि सघप किस बात पर ।

क्यो, आख मदकर आप किसी का साथ नही दे सकते ?

जी नही ।

क्यो ?

क्योकि दोनो ओर खतरा है ।

कैसे ?

दाढी का पक्ष लो तो साडी नाराज हो जाएगी और साडी का पक्ष लो तो दाढी की तरफ से खैर नही ।

दोना की तुक तो मिल जाती है, फिर यह झगडा क्या ?

बस, तुकें ही मिलती है बाकी कुछ नही मिलता । दोनो मे आकाश पाताल का अतर है ।

आकाश-पाताल कैसे ?

आप ही देख लीजिए साडी पाताल से आकाश की ओर जाती है और दाढी आकाश से पाताल की ओर दौडती है ।

यानी साडी ऊर्ध्वगामी है और दाढी पतनोन्मुखी ।

इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि दाढी विनम्र है और साडी उद्दड ।

तब यह भी कह लीजिए कि दाढी स्थायी है, सनातन है मगर साडी चचल है और रग बदलती रहती है ।

तब यह भी कहिए कि साडी सुदर है मनोरम है और दाढी अशोभन है और पुरदरी है ।

वाह, दाढी के बडे-बडे प्रकार हैं नए-नए स्टाइल हैं । रखने के बागिया तरीके हैं ।

वाह, साडिया के सकडो प्रकार हैं । हजारो किस्म हैं । बाधन के अनेक ढंग हैं ।

मगर साडी मे ममता है और दाढी मे निममता ।

लेकिन यह क्यो भूलते हैं कि साडी के मुकाबले दाढी मे कितनी क्षमता है ? दाढी ने हमेशा साडियो पर शासन किया है ।

मगर जब साडी ने विद्रोह किया है तो दाढी दग रह गई है ।

तो आजकल भी कही साडी दाढी के प्रति विद्रोह पर उतर आई है ?

जी, हा !

कहा ?

पाकिस्तान मे ।

कैसे ?

वहा की साडियो ने दाढिया के खिलाफ विरोध का झडा खडा कर दिया है ।

क्या कहती हैं ?

कहती हैं कि साडी को भी जीने का हक है । उसे भी विश्व की प्रगति मे हिस्सा बटाने का अधिकार है । अब कई-कई साडिया एक दाढ़ी के सहारे अपने भाग्य को नही बाध सकती । दाढी धम की दुहाई देना बन्द कर दे । यह शुद्ध आर्थिक सवाल है । दाढी से एक साडी का खच तो निभता नही, वह अपने गले म चार चार साडिया लपेटकर क्यो खुदकशी करने को आमादा है ? साडिया यह जुल्म बर्दाश्त नही कर सकती ।

दाढी भी तो यह सुनकर चुप न बठी होगी ? कुछ न कुछ कह ही रही होगी ?

कह नही, कर रही है । उसने साडिया के सिर पर जबरन काला कपडा डालना शुरू कर दिया है और कहना शुरू कर दिया है कि साडी बागी होगई है । उसकी यह हरकत धम के विरुद्ध है । इसमे जरूर ही कही हिन्दुस्तान की साजिश है । ऐसी हरकतो से पाकिस्तान को सख्त खतरा है । सरकार को चाहिए कि साडी-आन्दोलन को अगाडी न बढने दे, नही तो इस इस्लामी राज्य की गाडी बैठ जाएगी । ••

31

□ □ □

साडी और दाढी ।

साडी और दाढी म अगर सघप हो जाए तो आप किसका पक्ष लगे ?

पक्ष लने से पहले यह मालूम करना होगा कि सघप किस बात पर है ?

क्यो आख मदकर आप किसी का साथ नही दे सकते ?

जी नही ।

क्यो ?

क्योकि दोना ओर खतरा है ।

कसे ?

दाढी का पक्ष लो तो साडी नाराज हो जाएगी और साडी का पक्ष लो ता दाढी की तरफ से खैर नही ।

दोनो की तुक ता मिल जाती है, फिर यह झगडा क्या ?

बस, तुकें ही मिलती हैं बाकी कुछ नही मिलता । दोनो म आकाश पाताल का अन्तर है ।

आकाश-पाताल कैसे ?

आप ही देख लीजिए साडी पाताल से आकाश की ओर जाती है और दाढी आकाश से पाताल की ओर दौडती है ।

यानी साडी ऊर्ध्वगामी है और दाढी पतनोन्मुखी ।

इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि दाढी विनम्र है और साडी उद्दड ।

तब यह भी कह लीजिए कि दाढी स्थायी है सनातन है मगर साडी चचल है और रग बदलती रहती है ।

तब यह भी कहिए कि साडी सुन्दर है, मनोरम है और दाढी अशोभन है और खुरदरी है ।

वाह, दाढी के बड-बडे प्रकार हैं, नए-नए स्टाइल है । रखने के बीसियो तरीके हैं ।

वाह, साडिया म सकडा प्रकार है । हजारा किस्म हैं । बाधन के अनेक ...ते हैं ।

मगर साडी मे ममता है और दाढ़ी म निममता।

लेकिन यह क्यो भूलते हैं कि साडी के मुकाबले दाढी म कितनी क्षमता है ? दाढी ने हमेशा साडियो पर शासन किया है।

मगर जब साडी ने विद्रोह किया है तो दाढ़ी दग रह गई है।

तो आजकल भी कही साडी दाढी के प्रति विद्रोह पर उतर आई है ?

जी, हा !

कहां ?

पाकिस्तान मे।

कैसे ?

वहा की साडिया ने दाढियो के खिलाफ विरोध का झडा खडा कर दिया है।

क्या कहती हैं ?

कहती हैं कि साडी को भी जीने का हक है। उसे भी विश्व की प्रगति मे हिस्सा बटाने का अधिकार है। अब कई कई साडिया एक दाढी के सहारे अपने भाग्य को नही बाध सकती। दाढी धम की दुहाई देना बन्द कर दे। यह शुद्ध आर्थिक सवाल है। दाढी से एक साडी का खच तो निभता नही वह अपने गले म चार चार साडिया लपेटकर क्या खुदकशी करने का आमादा है ? साडिया यह जुल्म बर्दाश्त नही कर सकती।

दाढी भी तो यह सुनकर चुप न बैठी होगी ? कुछ न कुछ कह ही रही होगी ?

यह नहीं, कर रही है। उसने साडिया के सिर पर जबरन काला कपडा डालना शुरू कर दिया है और कहना शुरू कर दिया है कि साडी बागी होगई है। उसकी यह हरकत धम के विरुद्ध है। इसमें जरूर ही कही हिदुस्तान की साजिश है। ऐसी हरकतो से पाकिस्तान को सख्त खतरा है। सरकार को चाहिए कि साडी-आदोलन को अगाडी न बढने दे, नही तो इस इस्लामी राज्य की गाडी बैठ जाएगी। ●●

□ □ □

जूता और मनोविज्ञान

बचपन म पिताजी हमारे जूना का खयाल रखते थे। अगर उन पर ठीक से पालिश न होता, या कही स टूट या घिस जाते तो वह बडे नाराज हुआ करते थ। उनका कहना था कि आदमी को अपन जूता और टोपी का सदव खयाल रखना चाहिए। इनसे आदमी का व्यक्तित्व बनता है। जूना के सबध म उनका कहना था कि दुश्मन कभी चहरे की तरफ नही देखता। उसकी नजरें मिलान की हिम्मत नही पडती। वह हमेशा जमीन की ओर यानी, जूतो की ओर ताकता है। अगर जूता सही है, मजबूत है और चमक रहा है तो वह कभी सिर नही उठाएगा, लेकिन जूता अगर खराब है, तो वह सिर उठाने की जुरत करता है।

बचपन म कभी हमारी समझ म पिताजी का यह तक नही आया। पर जब हमन जूता के सबध में यह समाचार पढा कि जूते आदमी की मनोदशा के परिचायक होते है तो लगा कि पिताजी सच कहते थे। समाचार आपने भी पढा होगा ? न पढा हो तो उस हम यहा अविकल रूप से दे रहे हैं। खबर या है—

"लदन 15 अप्रल (नाफेन)। "जूता मे किसी आदमी की हैसियत का पता चलता है' यह बात अक्सर लोग आपस मे बातचीत करते हुए कहा करते हैं। लेकिन किसी व्यक्ति क पुराने और घिस जूतों मे उसके स्वभाव आदि का पता चलता है, इस बात का दावा याक म पुराने जूतो की मरम्मत का काम करने वाली श्रीमती फ्लोरेंस रीप ने हाल ही म किया है।

इस महिला ने बताया कि उसका पति जूतो की मरम्मत का ही धधा करता था और पुराने घिसे जूता को देखकर ग्राहक के स्वभाव का ठीक-ठीक अनुमान लगा लेता था।

श्रीमती रीप भी अपने पति के साथ ही इस धधे को 30 सालो से भी अधिक काल से कर रही हैं। उनके पति का देहान्त तीन साल पहले हुआ है। आदमी के हाथ की रेखाए देखकर बताने वालो की तरह श्रीमती रीप न बताया कि अगर किसी का जूता अन्दर से फट गया हो तो समझ लो वह व्यक्ति किसी कारण बेसब्री की जिन्दगी बिता रहा है।

यदि तले के मध्य भाग मे कोई छेद हो गया है तो उसका मतलब है कि जूता पहनने वाला व्यक्ति माप-तोलकर बात करने तथा तदनुसार ही किसी चीज का करने के स्वभाव वाला है।

श्रीमती रीप ने बताया कि मुझे सबसे अधिक इस तरह के ग्राहक पसन्द आते थे जिनके जूतों की बाहरी कोर हल्की हल्की कट रही होती थी। ऐसे आदमी उनकी दृष्टि में खुशमिजाज और मिलनसार होते हैं और उन्हें कोई भी आसानी से खुश कर सकता है। लेकिन यदि किसी के जूते की भीतरी कोर बुरी तरह कट रही हो तो आप समझ लीजिए कि यह आदमी मौजी तबियत का है और हो सकता है अपनी किसी जिम्मेदारी की फिक्र ही न करता हो।

जो व्यक्ति अपनी समस्याओं से बुरी तरह चिन्ताग्रस्त होते हैं उनके जूतों के तले बुरी तरह घिसे पाए जाते हैं।

श्रीमती रीप ने बताया कि हम लोग पुराने जूतों की मरम्मत का काम तो करते ही थे, पर नए जूते तैयार करने तथा बेचने का काम भी करते थे। अगर कोई ग्राहक हमसे नया जूता माल लेने आता था तो हम उसके पुराने जूते से उसका स्वभाव जान लेते थे और फिर उसके मुताबिक ही उसे काबू कर लेते थे।

पुराने जूतों से किसी आदमी के गत इतिहास तक को बता देने का दावा श्रीमती रीप ने किया है। उदाहरण के लिए जो अधेड़ उम्र के व्यक्ति बचपन में फुटबाल खेलने के शौकीन रहे हैं, उनके पैरों की तथा जूतों की बनावट को देखकर तुरन्त ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह व्यक्ति कभी फुटबाल का खिलाडी रहा है।"

इस समाचार को पढ़ने के बाद अब हमारी समझ में आने लगा है कि चमरौधा कौन पहनता है और क्यों? यह भी कि चप्पल पहनने वाले ही अन्त में नेता कैसे बन जाते हैं? आवारा लोगों का जूतियाँ चटकाते देखकर ही शायद आवारा नाम के जूतों का प्रचलन भारत में हुआ। हमारी समझ में यह भी आया कि जूता कम्पनी वाले 15 से 25 वर्ष की उम्र के लड़के के जूतों के सोल इतने मजबूत क्या रखते हैं? और यह भी की इसी उम्र की लड़कियों की चप्पलें या सैंडलें हलकी क्या बनाई जाती है?

इस सबको देखकर हमारे मन में यह आया कि हम भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय को यह सलाह दें कि विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान की पढ़ाई पुस्तकों से नहीं, जूतों से आरम्भ करने का नियम बनाए। छात्रों को यह ताकीद की जाए कि कुछ दिन तक पुस्तकें चाटने के बजाय जूतियाँ गाँठा करें।

●●

□ □ □

कल्पना या कलपना ।

आज कल्पना करने का मौसम है। श्रावण का प्रारम्भ है न ? हजारा वर्ष पूर्व आषाढ के प्रथम दिन कवि कुलगुरु कालिदास ने कल्पना की थी। अपने मेघदूत को इसी दिन अलकापुरी भेजा था। युग परिवर्तन हो गया तब से अब तक। वह स्वर्ण-युग था। उसमे कल्पना के अकुर एक माह पूर्व फूट आते थे। यह इस्पात युग है। कल्पना एक महीने बाद कुसमुसाती है। तब कल्पना किशोर होती थी, कोमल होती थी। आज प्रौढ होती है कठोर होती है। लेकिन कैसी भी हो, कल्पना कल्पना ही है। उसे करने मे आनन्द आता ही है।

आनन्द क्यो न आए ? ये घिरी घिरी घटाए, रिमझिम रिमझिम बूदें, ये शीतल मन्द पवन और ये तन मन की तपन का तेजी से दमन। कल्पना अगर अब करवट न लेगी तो कब लेगी ? वैसे आज के भौतिक युग मे बाहरी ठडक से मन को तरी नही पहुचा करती। 'पर धन देखे मूरख राजी के सिद्धान्त के अनुसार बरसात का मजा भी उसी के हाथ है जिसके पास खाने को हुमा है, किसी की तमा नही, जिसके घर जमा है उसकी सब जगह खातिर जमा है। क्योकि बिगडे दिल कहे गए हैं—

जब जेब मे पसे होते ह,
जब पेट मे रोटी होती है।
तब हरेक जर्रा हीरा है,
तब हरेक शबनम मोती है।

अब यह है न इस्पात युग की कल्पना ? कालिदास सोच सकते थे, ऐसी वर्षा बहार म ऐसी बेतुकी बातें ? उन्होने भी सावन के मेघो को देखकर आजकल के युग मे यह लिखा होता—

अहा, आकाश म मेघो का कारखाना स्टार्ट होगया है। वह देखो, पूर्व दिशा म चिमनिया चालू होगई। उनसे उठते हुए श्यामल धुए ने सारे क्षितिज को यो कज्जल कलित कर दिया, जसे निशाचरो की सेना सूर्य पर आक्रमण करने के लिए दौड पडी हो। यह बिजली नही चमक रही, इस्पात की तरल धार है। ये बूदें नही, डालर बरस रहे हैं। वे डालर जिनसे रमणियो के कठहार चमकेंगे, उनकी पायल बजेंगी और उनकी बोली मल्हार बन कर कूकेगी।

इस्पात का युग अब हो, पर अभाव का युग पहले से रहा है। राजा भोज के दरबार में एक पंडित ने एक श्लोक सुनाया था—

त्वयि वर्षति पर्जन्ये
सर्वे पल्लविता द्रुमा
अभाग्य छत्र सछन्ने
मयि नायाति बिन्दव ।

अर्थात् हे राजन् ! तेरी कृपा रूपी वर्षा ने सबको हरा भरा कर दिया, मगर ये तेरे दरबारी पंडित मुझ पर या छाता ताने हुए हैं कि तेरे अनुग्रह के वारि-कण मुझ तक पहुंच ही नहीं पाते।

यानी, वर्षा तो है, मगर उसका लाभ सबको नहीं मिल पाता। देश के उस गाव की तरह जिसमें आजकल कई दिन से वर्षा हो रही है, मगर आधे खेतों में पानी और आधों में सूखा ! अब बताइए हम कल्पना क्या करें ? यह आजकल के मेघ पार्टीबन्द हैं ? अपने ही दल वालों को पानी देते हैं। या यह कि जो मेघ किसानों को पानी नहीं देते, वे अन्यायी हैं। उनके विरुद्ध आन्दोलन किया जाए !

पर ये सब बातें तो बेकार हैं। कल्पना की जाए तो कुछ गरम की जाए। कुछ मीठी की जाए। उदाहरण के लिए एक केन्द्रीय मन्त्री के नाम जो आमों का पार्सल आया था, वह उन्होंने क्यों नहीं छुड़ाया ? वह क्यों दिल्ली जंक्शन पर नीलाम हो गया ? भेजने वाले ने क्या अधरेपन से भेजा ? छुड़ाने वाले ने उन्हें क्यों नहीं छुड़ाया ? क्या आम खट्टे थे ? या ऐसे थे जो हजम नहीं होते ? या मन्त्री महोदय को पता नहीं चला और वे नीलाम होगए ! बेचारे आम ! देश के काम आए बिना ही नीलाम होगए। खैर होना था, सो हुआ। अब कल्पना क्या ? सारी कलपना बेकार है। आम नीलाम ही होगए।

●●

यही कि दाढी नीचे है और दात ऊपर।

जी !

दाढी यू भी छोटी है कि वह बकरे मे पाई जाती है और दात मशहूर है हाथी का।

जी ?

सस्कृत साहित्य में कहा गया है—

क्वचित् दन्ता भवेद मूर्खा ।

यानी, बडे बडे दात वाला कोई ही मख होता है, नही तो सभी बुद्धिमान होते है।

अजी ऋषियो मुनियो से बढकर बुद्धिमान कौन होगा ? ये सभी दाढी रखते थे !

अजी पुराने जमाने की बात छोडो। आजकल दाढी रखना पागापन की निशानी माना जाता है। दाढी बढ़ाकर इण्टरव्यू में जाइए एक नम्बर नही मिलेगा।

मगर ससद में तो दाढी वाला की कद्र होती ह। स्वर्गीय मौलाना आजाद और राजर्षि टडन को लोग कितने आदर की दृष्टि से देखते थे ?

यह भी बात पुरानी होगई। आजकल तो वहा दात दिखाने वालो का बहुमत है। दात की महिमा ही ऐसी है।

कैसी ?

वराह भगवा न पृथ्वी का उद्धार दात पर रखकर ही किया था।

जी !

भगवान बुद्ध का दात आज भी विश्व म पूजित है।

जी !

चाणक्य से लेकर राजाजी तक जितने भी राजनीतिज्ञ हुए है, वे सब दाता के ही कारण प्रसिद्ध हैं।

जी !

साहित्यकारो ने दाढ़ी को तो कोसा है—दाढी के रखैयन की दाढी-सी रहति छाती।' मगर दाना को कुदकली, कौमुदी, दाडिम, मोती और बिजली की चमक से ही समादृत किया है।

इसका कारण आप जानते हैं ?

बताइए।

बात यह है कि बुद्धि के देवता गणेश भी 'एक रदन' हैं। बडे दात वाले हैं।

हर बडे दात वाला तो गणेश नही हो सकता !

"यल भी गैरजिम्मेदार या बुद्धू नही हो सकता।

, ?

, दात दोनो दकारात्मक हैं। यानी, एक ही वग के हैं।

[illegible]। दात से कहो कि वह साफ रहे और मुस्कुराए

मैं मैं नही करे और फहराए।

●●

□□□

दाडी-दात भिडन्त !

संसद मे उस दिन दाढी और दात उलझ पडे।

क्या कहा दाढी ने ?

उसने कहा—तू गदा है। दिखाने का है। खाने का नही।

इस पर दात क्या बोला ?

बोला—बक्रमुही क्या बक-बक कर रही है ? कोई दाढी रखान से ही महात्मा नही हो जाता।

बात ठीक थी। इस पर तो दाढी का बडा गुस्सा आया होगा ?

आया। वह कहने लगी—तो तू अपने को बेदाती समझता है ?

हु—दाढी ने दात झाड दिए !

जवाब दिया दात न—मैं तुझे बचपन स जानता हू। तबसे कि जब तू उगी भी नही थी। जसे जैसे तू बढी, गरजिम्मेदार होती गई !

गरजिम्मेदार कह दिया ? तब तो बडा हगामा मचा होगा ?

हा, ससद में कुछ लोग दाढी पर हाथ फेरन लगे और कुछ दात पीसन लगे।

जीत किसकी हुई ?

जीत ! हा जीत-हार का फसला न हो सका।

क्यो ?

क्योकि वहा दाढी रखने वाले थोडे ही थ।

इससे क्या होता है ? पेट में तो दाढी सुनते है हर ससद सदस्य के है ?

यह बात तो दातो के सबध में भी है।

कसे ?

भारतीय ससद को दातो दृष्टि स दो भागो में बाटा जा सकता है। एक वग वह है जो दात बजाता है और दूसरा वह है जो दात दिखाता है।

ठीक है मगर एक समानता इन दोना में है।

क्या ?

अपनी-अपनी जगह पर सभी दात गडाए हुए ह।

जो भी हो दात दात ही हैं और दाढ़ी-दाढी।

कैसे ?

यही कि दाढी नीचे है और दात ऊपर।

जी !

दाढी यू भी छोटी है कि वह बकरे के पाई जाती है और दात मशहूर है हाथी का।

जी ?

सस्कृत साहित्य में कहा गया है—

क्वचित दन्ता भवेद मूर्खा।

यानी बडे बडे दात वाला कोई ही मख होता है, नही तो सभी बुद्धिमान होते है।

अजी ऋषियो मुनिया से बढकर बुद्धिमान कौन होगा ? ये सभी दाढी रखते थे !

अजी पुराने जमाने की बात छाडो। आजकल दाढी रखना पोगापन की निशानी माना जाता है। दाढी बढाकर इण्टरव्यू में जाइए एक नम्बर नही मिलगा।

मगर ससद में तो दाढी वाला की कद्र होती है। स्वर्गीय मौलाना आजाद और *राजर्षि टडन को लोग कितने आदर की दृष्टि से दखते थे ?*

यह भी वात पुरानी होगई। आजकल तो वहा दात दिखाने वाला का बहुमत है। दात की महिमा ही ऐसी है।

कसी ?

वराह भगवान न पथ्वी का उद्धार दात पर रखकर ही किया था।

जी !

भगवान बुद्ध का दात आज भी विश्व म पूजित है।

जी !

चाणक्य से लेकर राजाजी तक जितने भी राजनीतिज्ञ हुए हैं वे सब दातो क ही कारण प्रसिद्ध है।

जी !

साहित्यकारा ने दाढ़ी को तो कोसा है—दाढी के रखैयन की दाढी-सी रहति छाती। मगर दाना को कुन्दकली, कौमुदी, दाडिम मोती और बिजली की चमक से ही समादत किया है।

इसका कारण आप जानते हैं ?

बताइए।

वात यह है कि बुद्धि के देवता गणेश भी 'एक रदन' हैं। बडे दात वाले है।

मगर हर बडे दात वाला तो गणेश नही हो सकता !

तो हर दढ़ियल भी गैरजिम्मेदार या बुद्धू नही हो सकता।

तो फसला क्या रहा ?

यही कि दाढी और दात दोना दकारात्मक हैं। यानी, एक ही वग के हैं। इनको दप से काम नही लेना चाहिए। दात से कहो कि वह साफ रहे और मुस्कुराए और दाढी से कहो कि वह बेकार मैं मैं नहीं करे और फहराए।

●●

35

□ □ □

बिल्ली का बयान !

संसद में बिल्ली घुस गई।

किसका रास्ता काटने के लिए ?

काम रोको प्रस्ताव रखने वालो का। और किसका काटेगी ?

हमने तो कुछ और सुना है।

क्या ?

नई दिल्ली म अकाल चूहो का आजकल पड गया ह। बिल्ली उनको खोजते खोजते ससद मे घुस आई थी।

क्या ससद मे चूहो की बहुलायत है क्या ?

हा, वहा तो चूहे ही चूहे ह।

कैसे ?

चूहा का काम है कुतरना। ससद म भी कुतर बुतर चलती ही रहती है।

जी !

चूहे बडे सयान होते है। ससद म भी सयाने लोग ही पहुँचत ह।

जी !

चूहे बडे बडे जालो का आसानी से काट दिया करत हैं। ससद सदस्य भी जाल काटने मे लगे रहते हैं।

जी !

चूहे देश मे फलने वाली व्याधिया महामारियो का पता सबसे पहले देते हैं। जिस गाव मे चूहे मरने लगे, समझो प्लेग फैलने वाली है। इसी स ससद-सदस्या का भी सकटो का पता पहले से लग जाता है। उनके फौरन कान खडे होते हैं।

चूहे बस सिफ बिल्ली से डरा करते है, और किसी से नही। ससद-सदस्य भी सिफ पार्टी के नेता से भय खाते हैं बाकी को कुछ नही समझते।

जी !

जब बिल्ली को पता लगा कि हमारे ससद-सदस्य आजकल चूहा का सा आचरण करते है तो उसके मन म जिज्ञासा जगी कि देखा जाए यह चूहे कैसे हैं ?

तो देखा उसने ?

हा जी, सन्तरियो और मार्शल को चकमा देकर वह बिना प्रवेश-पत्र के पालमेंट मे घुस गई। इधर से उधर और उधर से इधर घूमी। सरकारी और विरोधी बेंचो का निरीक्षण किया, प्रेस दीघा और दर्शक गैलरी की ओर सरकारी नजर डाली और लौट आई।

बिना शिकार किए ?

जी हा। लौटकर उसने जो अखबार वाला का बयान दिया है, वह इस प्रकार है—

मुझे भारतीय ससद मे जाकर बडी निराशा हुई। सैकडो मे से एक भी काम का न था। सब मुझे देखकर चूहो की तरह ही सकपका गए। सबकी बोलती बन्द हो गई। सब एक-दूसरे का मह ताकने लगे। मुझे चुनौती देन की किसी की हिम्मत न हुई। मेरे गले म घटी बाधना तो दूर वे मुझे छू भी नही सके। जिधर मैं जाती थी, उधर ही लोग घबराकर अपन अग सिकोड लेत थे। उससे मे इस निष्कर्ष पर पहुची हू कि जब बिल्ली के मारे इनका यह हाल है तो अपना और देश का काम ये कैसे करते होंगे ?

बिल्ली बडी समझदार निकली।

बिल्लिया तो समझदार ही होती हैं।

इसका बयान तो एकदम डिप्लोमटिक है। कोई राजनीतिज्ञ मालूम पडती है।

जी हा यही क्या, आज की समूची राजनीति बिल्ली के समान है।

कैसे ?

यही कि खुद तो दूध मलाई खाना और चूहा को दबाए रखना।

यह तो ठीक है मगर इस बिल्ली रूपी राजनीति से बचा कसे जाए ?

बिल्ली का इलाज तो बन्दर ही कर सकता है।

वह कैसे ?

आपको पता नही ? एक बार दो बिल्लियो को एक रोटी मिली। व उसके लिए झगडने लगी। बन्दर तराजू लेकर फौरन न्याय के लिए आ गया। रोटी के दो टुकडे करके वह पलडो म रखता और भारी को कम करने के लिए उसे खाने लगता। इस प्रकार सारी रोटी वह खुद ही खा गया।

जी !

हमारे देश की बिल्ली राजनीति म भी यही होता रहा है। बिल्लिया आपस म लडी हैं और बन्दरो ने लूट की है।

जी !

इस समय भी स्वराज्य की रोटी बिल्लिया स मिल-बाट के नही खाई जा रही। परस्पर लड रही हैं। किसी को किसी पर विश्वास नही। वह तो गाधी बाबा ने लाठी दिखाकर बन्दर हजारो कोस भगा दिए हैं, नही तो बिल्लिया आज भी बन्दरो को न्यौता देन पर उतारू हैं।

पच 'पकार'

बहुत दिना बाद आज कही जाकर सुखी रहन का नुस्खा मिला है। नुस्खा प्रामाणिक है और एक अनुभवी सज्जन द्वारा प्राप्त हुआ है। यह नुस्खा किसी मामूली आदमी का नही, एक ससद-सदस्य का है। ससद सदस्य भी मामूली नही, गाधीजी के घोषित पाचवे पुत्र के पुत्र का है। हमारा आशय श्री जमनालाल बजाज के पुत्र श्री कमलनयन बजाज से है। पटना की एक सभा म उन्होने यह नुस्खा बताया है, जिसे लोक-कल्याण से प्रेरित होकर हम यहा उदघाटित कर रहे हैं।

कमलनयन जी का कहना है कि दुनिया म अगर किसी का सुखी रहना है तो उस तीन पकारो का सेवन करना चाहिए। य तीन पकार हैं—ऊपर परमेश्वर नीचे पत्रकार और अन्दर पत्नी। जो व्यक्ति अपनी सवा से इन तीनो को प्रसन्न कर लेता है वह इस जन्म म नाना प्रकार के सुखो का भोगता हुआ अन्त मे स्वग मे 'ए' श्रेणी को प्राप्त होता है, इसमे कोई सन्देह नही।

निस्सन्देह बजाजजी ने सुख की पापलीन को ठीक से नापा है। पर कपडे म माड (कलफ) काफी है और वह धुलकर सिकुड जाता है। ग्राहक कही बाद म परेशानी मे न पडे, इसलिए हम इसमे कुछ और इजाफा करना चाहत हैं। भगवान वामन न भले ही ब्रह्माड को तीन पगो स नाप लिया हो, सुखी जीवन को आज तीन पकारो से सिद्ध नही किया जा सकता। सुखी जीवन के लिए तीन की नही, पाच पकारा की आवश्यकता है। इनम चौथा है पार्टी और पाचवा है पसा। क्योकि परमेश्वर पत्रकार और पत्नी केवल बातो से प्रसन्न नही होते। इन तीना को तुष्ट करन के लिए *पैसे की बडी जरूरत होती है। जो पसे का भली प्रकार सेवन कर लेता है उसे पार्टी* का भी टिकट मिल जाता है और योग्य पति होने का भी सर्टिफिकेट प्राप्त होजाता है। पत्रकारा को खिलाइए पिलाइए तो वे भी अनुकूल रहते है। जो चाय और भोजन पर बुलाकर पत्रकारो की कान्फ्रेंस नही करता, उसकी खबरें नही छपा करती। यही हाल परमेश्वर का भी सुनते है। कहते हैं कि वह भी अपनी पत्नी के भक्ता का भक्त है। उनकी अर्जी पर वह पहले गौर करता है। पत्नी का पार्टियो मे ने ले जाइए वह अप्रसन्न रहेगी। आप उसके विरुद्ध किसी अन्य पार्टी म शामिल हो जाइए वह आपको दुरुस्त कर देगी। पत्रकारा को पार्टी न दीजिए वह आपको नेता नही

मानेंग। परमेश्वर भी अकेली पूजा स प्रसन्न नही होता। उसके लिए भी 'भजन पार्टी वनानी पडती है। अगर आप किसी अच्छी पार्टी म शामिल नही हैं, तो कभी सुखी नही रह सकते। पार्टी को प्रसन्न रखने से ही टिकट मिलता है। टिकट मिलन स ही आदमी की घर-बाहर कदर होती है। अगर पार्टी टिकट काट दे तो न पसा काम आ सकता है न पत्रकार। पत्नी और परमेश्वर भी पार्टी के मामले म कुछ नही कर सकते। पार्टी से गए हुए को पालभट तो क्या नक मे भी ठिकाना नही मिलता। इसलिए हमारा पाठका से निवेदन है कि पच परमेश्वर के इस युग मे अपना इहलोक और परलोक बनाने के लिए उन्हें पच मकारा का सवन छोडकर पच पकारो की पूजा प्रारभ करनी चाहिए।

पच पकारा की सेवनविधि सक्षेप म इस प्रकार ह—

परमेश्वर दिन भर चाहे जितन पाप करे मगर रात का सोत समय उन्ह परमात्मा को अवश्य गिना दें और कह कि प्रभु, मैं तो निमित्तमात्र हू जो कुछ करता या कराता है वह तू ही है। परमेश्वर वडा दयालु है, वह सच बोलने से ही प्रसन्न हो जाता है।

पत्नी मगर पत्नी के सामन कभी सच नहा बोलना चाहिए। दिन भर पाप करो, मगर शाम को उसके सामने शुद्ध पवित्र वनना जरूरी है।

पत्रकार पत्रकार से न सच वोलना चाहिए, न झूठ। उससे न वडा बनना चाहिए न छोटा। न उससे दोस्ती करनी चाहिए न दुश्मनी जो ऐसा बर्ताव करता है उससे पत्रकार खुश रहते हैं।

पार्टी पार्टी म सज्जन बनना चाहिए न धूत। जा फिफ्टी फिफ्टी रहते है उनसे पार्टी सदव खुश रहती है।

पसा यह कभी ईमानदारी से इक्ट्ठा नही होता मगर बेईमान के पास ठहरता भी नही। इसलिए कमाओ भले ही बेईमानी से, मगर इसको रोकने के लिए ईमानदार वना रहना आवश्यक है। आदमी को गुणा का प्रकाशित करना चाहिए पसे को प्रकाश मे नही लाना चाहिए। जो पैसे को उछालता है उससे लक्ष्मी नाराज हो जाया करती है।

अथ पच पकार सवन विधि समाप्तम्। ●●

37

□ □ □

जीवन ही जेल !

दुनिया की सबसे बडी जेल चीन में है या रूस में अथवा भारत में—इसकी हम सही-सही जानकारी नही। हा, इतना अवश्य पता है कि यह जीवन ही जगत का सबसे बडा जेलखाना है। इसमें माता रोने पर ही दूध पिलाती है पत्नी चिल्लाने पर ही खाना देती है और मरने पर ही बच्चे श्राद्ध करते हैं। जन्म लेने से आखिरी मुकाम आने तक आदमी को ऐसी ही कडी मशक्कत करनी पडती है और उनसे कभी रिहाई नही होती।

आदमी कितना ही कमाए, यहा उसे नपा तुला राशन मिलता है। कितने भी साधन जुटाए, मरने पर उसे उतना ही कफन, उतनी ही लकडी, उतनी जगह ही कब्र में पैर पसारने को उपलब्ध होती है। कोई कितना ही पराक्रमी हो सबकी इच्छाओ पर अनुशासन है। कोई कितना ही सामर्थ्यशाली हो सब पर काल रूपी जेलर का हटर घूमता रहता है। जिसके खाते में जितनी जितनी सजा दर्ज है, वह उसे भुगतनी ही होती है।

राजनीति अपने वायदो से जकडी है, धर्म अपनी रूढियो से बधा है और विचार अपनी सीमा और मान्यताओ से घिरे हुए हैं। कला को अह घेरे हुए है और अह स्वय अपनी जडता की कारा में निबद्ध है।

ऐसा कौन है जो मोह की मजबूत बेडियो को काट सका है ? ऐसा कौन है जो ऐश्वर्य की दीवार को लाघने में सफल होगया हो ? रूप और रस के बधनो की तो बात ही छोडिए। बधनमुक्त यहा कोई नही है। न योगी, न भोगी। न मत्री, न सेनापति। न शासक न शासित। न प्रजा न राजा। सब बन्दी हैं। जो ज्ञानी है, वे इस जेल को स्वीकार करते हैं। जो मूर्ख है वे अस्वीकार करते हैं। मगर किसी के स्वीकार करने या मना करने से जेल का अस्तित्व मिटता नही।

ब्रह्मज्ञानियो ने इस जेल को जाना, जानकर तोडना चाहा नही तोड सके। नास्तिको ने इसे नही माना और न मान कर भी इससे छुटकारा नही पा सके। तथागत इससे भागे, पर पकड लिए गए। सन्तो ने बगावत की मगर कोसते ही रह गए, जेल की एक ईंट भी नही खिसकी।

भक्तों और वैष्णवों ने समझौता किया। कहा—हे जेलर, जैसे तू रखेगा, हम वैसे ही रहेंगे। हम हर हाल में मगन हैं। जैसे भी भले या बुरे हैं, तेरे हैं। हमारी मान-बडाई सब तेरे हाथ है। मगर इस अनुनय का भी कोई फल नही निकला, जेल, जेल ही रही, वह खेल नही बन सकी।

जन्म लेने पर जेल का स्वाद सबको चखना पडा। राम और कृष्ण भी नही बच सके। ईसा और सुकरात भी नही। नेपोलियन और रुस्तम की तो चलती ही क्या ? त्रस्त होकर सूरदास को आखें गवानी पडी। मीरा को जहर पीना पडा और गाधी को गोली खानी पडी।

तात्पय यह है कि जेल तो है और सजा भी काटनी ही पडेगी, तब रोकर क्यो काटी जाए ? क्यो न इस कथन को ध्यान मे रखा जाए—

> दुख-दारिद और आपदा,
> सब काहू को होय।
> ज्ञानी काटे ज्ञान ते।
> मूरख काटे रोय॥

रोते रहने और सोचते रहने से जेल-जीवन दुखदायी बन जाता है। हसते रहकर ही जीना, जेल की यातना को कम करता है। लोकमान्य तिलक महात्मा गाधी और नेहरू ने लम्बी-लम्बी जेलें काटी। अगर वे अपना जेल-जीवन रोने और सोने मे ही व्यतीत करते तो न गीता रहस्य हाथ लगता न अनासक्तियोग। और-तो-और भारत की भी खोज न हो पाती। माखनलालजी और नवीनजी के भी गीत अनगाए रह जाते। इसलिए रोओ नही, गाओ। सोओ नही, जागो। सोचो मत, हसो। अपने ऊपर ही नही, जड जेल पर भी और उसका निरन्तर खेल खेलते रहने वाले जेलर पर भी।

क्षमा कीजिए, आज तो हम न जाने कहा बहक गए ? हसने की बात कहकर भी रोने लगे। अच्छा, बैठक बन्द होने का समय आगया। कल वाकई हसेंगे। ●●

38

□ □ □

दडौत गुरू ।

मथुरा मे अभिवादन का एक पुराना मुहावरा प्रचलित है—'दडौत गुरू !' मगर दिल्ली के स्टीफेन्स कालेज मे पढने वाले छात्रा से इसका अर्थ पूछा जाए तो 99 प्रतिशत लडके फेल हो जाएगे।

दडौत शब्द दडवत का अपभ्रश है। दडवत प्रणाम का अर्थ है शरीर के आठो अग सहित दड की तरह पृथ्वी पर गिर कर प्रणाम करना। कान्वेन्ट मे पढने वाले किसी बच्चे से अपने किसी गुरुजन को साष्टाग दडवत करने के लिए कहिए, दड की तरह तनकर जवाब देगा—क्या देहातीपन है ? और अपने उजले कपडो के खराब होने की कल्पना करने लगेगा।

एकबार एक वैष्णव सत के साथ हम किसी देव मदिर म जाने का सौभाग्य हुआ। देव विग्रह के सम्मुख वह विनत होकर भूमि पर लोट गए और दडवत कर हमे लक्ष्य करते हुए उन्होंने यह दोहा कहा—

नर कपरन को डरत है
नरक परन को नाहि।
जसु दातन को करत है,
जसुदा तन को नाहि ॥

यानी, लोग कपडो के मैले होने से तो डरते है मगर नरक म पडने स उन्हें डर नही लगता। कहने का तात्पर्य यह कि गुरू और गोविन्द दोना को दडवत प्रणाम ही ही करना चाहिए।

गुरुजना को दडवत करने की प्रथा हमारे देश मे बडी पुरानी है। सुग्रीव के भेजे हनुमान जी प्रभु को पहचानते ही उनके चरणो मे गिर पडे। भूमिष्ठ हनुमान जी को प्रभु ने भी गले स लगाया।

परशुराम जब धनुष-यज्ञ म आए तो क्षत्रिय घबरा उठे। तुलसीदास ने लिखा है—

पितुन सहित ल ल निज नामा।
दूरहि ते कर दड प्रणामा ॥

आज भी मंदिरों, मठो और संस्कृत पाठशालाओं मे लोग दडवत प्रणाम करते दिखाई दे जाते हैं। दडवत विनती का सर्वोत्तम प्रकार है। अहकार के नाश का यह सर्वोत्तम साधन है। अपने को अकिंचन समझने की दशा मे वह पहली सीढी है।

दडवत का एक और भी महात्म्य बताया जाता है। वह यह कि पवित्र स्थानो की दडवती-परिक्रमा करने से सर्प-योनि छूट जाती है। इसलिए व्रज मे गिरिराज पर्वत की हजारो लोग प्रति वर्ष दडौती परिक्रमा किया करते हैं। भरतपुर के महाराजाओ को इसका बडा इष्ट है। गए जमाने के वर्तमान भरतपुर नरेश भी सात कोस या चौदह मील दडवत करते-करते गिरिराज की परिक्रमा कर चुके हैं।

दडवत का सबसे बडा रिकार्ड कायम किया है बाबा गगादास ने। उन्होंने गाजीपुर मे बद्रीनाथ धाम तक की दडवती यात्रा प्रारभ की थी। पूरे 27 महीने उन्हें पेट के बल चलते ही गए। धैर्य और साहस का, निष्ठा और विनय का ऐसा योग ससार म कदाचित ही देखने-सुनने को मिले।

यो प्रसिद्धि के लिए अटपटे काम करने वालो की ससार में कमी नही है। प्रेसिडेंट ट्रूमन के कार्यकाल मे एक विदेशी ऐसा हुआ है जिसने सारे ससार की पैदल यात्रा उलटे चलकर की थी। पर यह शौक बात थी आस्था की नहीं। उसने कदाचित प्रचार का स्वार्थ किया हो, परमार्थ का सार नही। मुक्ति के लिए पेट के बल पहाडो मे रेंगना सचमुच कठोर तप है।

अभी आपने मुक्ति के लिए पेट के बल चलने की बात पढ़ी। मुक्ति के लिए भी लोग पेट के बल रेंगते है। अफ्रीका के माओ-माओ कबीले के लोगों मे यह प्रथा है कि विवाह से पूर्व वर और वधू दोनो पेट के बल रेंगकर निर्दिष्ट सीमा तक पहुचते हैं। जो पहले पहुच जाता है, उसे दूसरे के प्रेमाधीन रहना पडता है और घर में उसी का आदेश चलता है।

इन सब बातों से आज हम इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि दुनिया म पेट की बडी महिमा है। पेट मनुष्यो को नाना नाच नचाया करता है। पेट की चपेट म दुनिया आई हुई है। मगर कुछ ऐसे भी हैं जो पेट को चपेट मे लिए हुए हैं और उसे अपने इष्ट की खातिर रेंगकर चलने को मजबूर कर देते हैं। क्या समझे ?

यही कि "दडौत गुरू"!

●●

□ □ □

नया नचिकेता

आओ कुछ शास्त्र चर्चा करें। कारण यह ससार अनित्य है। जीवन क्षणभगुर है। रूप धोखा है। माया ठगिनी है। सत्ता सापिन है। राजनीति वेश्या है। इन सबसे जीवन को वसे ही अलग रहना चाहिए जैसे कमलपत्र जल से रहता है।

जीव का परम लक्ष्य आत्मा को जानना है। जिसने आत्मा को जान लिया, परमात्मा को जान लिया। इस परमात्म-तत्त्व की खोज ही मुक्ति का माग है। कैवल्य का साधन है। चिरशाति की उपलब्धि है। हमारे वेद, शास्त्र, उपनिषद, इसी तत्त्व की व्याख्या से भरे हैं।

आत्मतत्त्व के शोधक के लिए उपनिषदो से बढकर कोई ग्रथ नही। उपनिषद छह हैं लेकिन उनमे सबसे श्रेष्ठ वह है जिसमे नचिकेता की कथा है। यह श्रेष्ठ इसलिए है कि इसमे एक ऐसे मानवपुत्र की कथा है, जो यम के द्वार तक जाकर वहा से सदेह लौट आया था। वहा से वह खुद ही वापस नही आया, अपने साथ यम का दिया हुआ गुह्य तत्त्वज्ञान भी लाया। उसकी कथा इस प्रकार है—

अति प्राचीनकाल मे एक दानी पिता के तेजस्वी बालक उत्पन्न हुआ। एक दिन उसके पिता ने घर की सारी चीजें ब्राह्मणो को दान दे दी। जब घर मे कुछ भी नही बचा तो प्रतिभावान पुत्र ने अपने त्यागी पिता से कहा—पिताजी अब तो मैं ही रह गया हू! बताइए आप मुझे किसे देंगे ?

पिता को बच्चे की यह अवज्ञा अच्छी न लगी। उसे बालक के कथन म कुछ व्यग्य का सा आभास हुआ। उसने क्रोध से कहा—"तुझे! तुझे मैं यम को दूगा!"

पिता की आज्ञा को शिरोधाय कर बालक यमलोक को चल दिया। यमराज उन दिनो अपने घर पर नही थे। लौटे तो देखा कि एक बालक तीन दिन का भूखा-प्यासा उनके द्वार पर खडा हुआ है। उन्होने नचिकेता से उसके आने का कारण पूछा। नचिकेता ने बताया—'मुझे पिताजी ने आपको दिया है।"

सुनकर यम दयाद्र हुए और बोले— तू तीन दिन तक मेरे द्वार पर बिना खाए पिए खडा रहा है। अब तीन वरदान माग ले। नचिकेता ने जो मागा वह पाया। बाकी दो वरदानो से यहा तात्पय नही। एक असली वरदान तत्त्वज्ञान के सम्बन्ध मे था, जिसका अभी जिक्र कर रहे थे।

आप पूछेंगे कि आज हम नचिकेता की कहानी कैसे याद आई ?

कारण यह कि आज हमने एक समाचार पढा है। इस समाचार के नायक ने भी वही पराक्रम कर दिखाया है, जो सतयुग मे नचिकेता ने किया था। वह भी 48 घटे बाद यम के द्वार से लौट आया है। वह जो तत्वज्ञान लाया है, यहा उसके सम्बन्ध मे हम कुछ जानकारी आपको देना चाहते हैं।

समाचार का नायक एक धोबी है। एक दिन उसका अपने एक पुराने ग्राहक से झगडा हो गया। झगडे का कारण यह था कि धोबी उसके कपडे हर बार फाड लाया करता था और उसको कपडो की धुलाई पूरी नही मिला करती थी। हर बार तो धोबी चुपचाप अपने पैसे कटाकर वापस आ जाया करता था। लेकिन वह अड गया कि आज पैसे पूरे लेकर ही लौटूगा। बातचीत बढ़ गई। बढ क्या गई धोबी को बात लग गई। उससे कहा गया कि अगर तुम्हारा यही रवैया रहा तो जहन्नुम रसीद कर दिए जाओगे।

धोबी ने भी कहा कि न दो पैसे, अब तुम्हारे जहन्नुम को ही देखेंगे। वह चल दिया चोले का छोडकर यमराज के पास। यमराज इस समय घर पर ही थे, लेकिन खाना खाकर लेटे हुए थे। किसी की उन्हें जगाने की हिम्मत न हुई। पाच घटे बाद जब वह शाम को हवा खाने के लिए बाहर निकले तो धोबी को देखकर उन्होंने उसके आने का कारण पूछा।

धोबी ने बताया कि आजकल के सफेदपोश लोग मुझे बहुत परेशान करते हैं। गाठ म पैसे हैं नही, घर म खाने को दाना के लाल हैं, मगर कपडा धोबी का धुला ही पहनना चाहते हैं। कपडे बेचारे चलें भी कहाँ तक ? वे जल्दी जल्दी फटने लगते हैं। इस पर पकडा जाता है धोबी। मार डालने तक की धमकी दी जाती है। इसलिए आपके पास आया हू, आप कुछ कृपा कीजिए।

यमराज ने कहा, "अच्छा, तू पाच घटे मेरे दरवाजे पर बिना खाए पिए खडा रहा है। इसलिए तुझे पाच वरदान देता हू। एक यह कि आज से कपडो की तह तू ऐसी कर सकेगा कि जिससे फटा हुआ कपडा ग्राहक को तभी दिखाई देगा जब वह उसकी धुलाई के पैसे चुका होगा। दूसरे यह कि जिन सफेदपोश लोगो के कपडो से तू परेशान है, उनके कपडे अब तेरे आने से पहले ही फट जाया करेंगे और तू आगे से उनको गठरी में बाधने से पहले फाड फाडकर दिखा सकेगा। तीसरे यह कि जब तक तू वापस मृत्युलोक म पहुचेगा तब तक सब धोबियो की एक यूनियन बन चुकेगी और अगर कोई जरा भी आगे से तू-तडाक करने की हिम्मत करेगा तो उसके द्वार पर प्रदर्शन हो जाया करेगा। चौथी बात यह कि अभी तेरी इस लोक मे आवश्यकता नहीं है। अभी तू और 10 वर्ष धरती पर कपडे धो सकेगा। पाचवी यह कि मरने के बाद जब तू बाकायदा मेरे पास आएगा तो फिर तुझे वापस धरती पर जाने की और धरती के निकम्मे लोगो के कपडे धोने की जरूरत नही पडेगी। मैं तुझे अपने कपडे धोने का काम खुशी-खुशी सौंप दूगा। लेकिन देख मेरे कपडे न फटने पाएं। ●●

40

खाल की खाल

खाली बैठे क्या करें आओ कुछ खाल की ही चर्चा करें।
क्या किसी की खाल उधेड़नी है ?

आप भी खाली पीली यू ही बातें करते हैं ! आदमी की खाल से कुछ बनता भी है ! उधेड़कर क्या कीजिएगा ?

खाल का कुछ न बनता हो मगर उसके उधेड़ने से आदमी जरूर बन जाता है। हमारे पिताजी जब हमे शुरू म पाठशाला मे भरती कराने ले गए तो गुरुजी के हाथ म हमारा हाथ सौंपते हुए बोले थे—चमडी चमडी आपकी और हड्डी हड्डी हमारी। आपको सौंप चले हैं, इसे आदमी बना दीजिएगा।

और चमडी उधड़वा कर आप आदमी बन गए ?

बन तो जाते, मगर चमडी पूरी तरह नही उधड पाई। जितनी उधड गई, उतने बन गए।

आप बने या नही बने यह तो अनुसधान का विषय है मगर इस समय हमे अवश्य बना रहे हैं।

कैसे ?

दमडी के युग मे चमडी की बात

जनाब, आजकल दमडी चमडी

कैसे ?

अगर आपकी चमडी साफ है,

बिना भी क्लर्की मे सेवा

जा सकते हैं।

जी !

पहली बात यह है कि वह और किसी की भी हो, आदमी की नहीं होनी चाहिए। मंत्री या नेता के लिए आदमी की खाल नहीं जंचती। ऐसा व्यक्ति या तो खुद अपने पद से हट जाता है या हटा दिया जाता है।

जी! इसलिए भू० पू० वित्तमंत्री श्री कृष्णमाचारी का कहना था कि नेता या मंत्री की खाल बतख जैसी होनी चाहिए, जिस पर पानी का कोई असर नहीं होता।

क्षमा कीजिए हम इस मामले में टी टी से सहमत नहीं। अगर जलचरों में ही से चुनना है तो नेताओं या मंत्रियों की खाल मगर के समान होनी चाहिए। मगर मांसभक्षी वर्ग का प्राणी है बतख बेचारी नहीं। बतख का शिकार आसानी से किया जा सकता है, मगर मगर को मारना आसान नहीं। बतख के आंसू किसी ने नहीं देखे मगर नेताओं की तरह विरोधियों के घातक-से घातक प्रहारों को हंसते हंसते सह लेता है और उस पर उनका कोई असर नहीं होता। तैरते-तैरते वह भी नेताओं की तरह गहरे में डुबकी ले जाता है और उसे खोज निकालना फिर आसान काम नहीं होता। नेताओं की तरह मगर की दाढ़ें भी बड़ी विकराल और जालिम होती हैं। इनमें एक बार फंसने के बाद निकलना आसान नहीं होता। नेताओं की तरह मगर के पेट में भी बड़ी सम्पत्ति और राज छिपे रहते हैं। कहां बेचारी बतख और कहां जल का राजा मगर!

इसलिए?

इसलिए अगर किसी को सफल नेता या आजन्म मंत्री बनना हो तो उसे मगर जैसे गुण ही नहीं उसकी-सी खाल भी अपनानी चाहिए।

जी! यह बात तो हुई जलचरों की। मगर नेता और मंत्री तो थलचर होते हैं। इसके लिए क्या आप गैंडे की खाल तजवीज करेंगे?

जी नहीं। यह जीव भारत में अब दुर्लभ होगया है। नेताओं की तरह गली गली में नहीं पाया जाता।

तो फिर हाथी?

जी नहीं, यह जीव नेताओं और मंत्रियों से अधिक बुद्धिमान होता है?

तो फिर भैंस?

आप भी कैसी बातें करते हैं? भैंस कम-से-कम दूध तो देती है! किसी नेता या मंत्री ने किसी को कभी दूध दिया है?

तो फिर?

तो फिर यह कि मामला काफी पेचीदा है। खाल का मसला है। खाली गाल बजाने से हल नहीं होगा। चर्म के मामले में चरम सीमा तक जाना पड़ता है। हम भी सोचें आप भी सोचिए। ऐसी जल्दी भी क्या है?

●●

41

अर्द्धांग अधम कि उत्तम

सरकारी अफसर भी कभी-कभी अजब बातें कह देते हैं। अब बताइए यह भी कोई बात हुई कि उन्होंने अपने मातहतों को टोका है कि अपनी शिकायतों को दूर करने के लिए वे अपनी पत्नियों को न भेजा करें।

उक्त आदेश पंजाब सरकार के अफसरों ने दिया है। यह कितना अमल में आ पाएगा, इससे हमें गरज नहीं पर सिद्धांत रूप में यह आर्डर सही नहीं है।

वह कैसे ?

यही इस लेख का प्रतिपाद्य है। पत्नी, पति की अर्द्धांगिनी है। अर्द्धांग भी कैसा, जिसे अंग्रेजी में 'बटर हाफ' यानी, उत्तम अर्द्धांश कहते हैं। जब अधम अर्द्धांग कोई गलती करता है या संकट में फंसता है, तो उत्तम का यह धर्म है कि उसकी रक्षा करे। जैसे शरीर के किसी भी अंग पर हमला होने पर हाथ अपने आप उसकी रक्षा के लिए उठ जाते हैं। इसी प्रकार पति पर हमला होने पर पत्नियों का रक्षा के लिए कमर कसकर मैदान में आ जाना सहज स्वाभाविक है। सावित्री आखिर सत्यवान को यम के यहां से छुड़ाकर लाई ही थी, कैकेयी ने रथ की धुरी में अंगुली डालकर दशरथ को विजयी बनाया ही था।

कहते हैं कि पंजाब के एक यशस्वी साहित्यकार के बारे में भी पिछले दिनों वहां अफसरों को कुछ शिकायत हो गई थी। आखिर पत्नी को ही बीच में खड़ी बनकर आना पड़ा। अगर वह यथासमय पुरुषार्थ प्रदर्शित न करती तो उन्हें सदा-सदा के लिए सपत्नी का दुख भोगना पड़ता और पति को भी स्थायी अपयश का सामना करना पड़ता।

जब पति, पत्नी की हर शिकायत दूर करने के लिए हर तरह से बाध्य है तो पति की शिकायत को दूर करने के लिए पत्नी कुछ भी न करे ? जब पति की कोई नहीं सुनता और वह विवशता अनुभव करता है पत्नी यदि सच्ची सहधर्मिणि है तो कैसे घर में हाथ-पर-हाथ धर कर बैठी रहे ? पति पर आंच आती रहे और पत्नी घर में बैठकर को गोद में खिलाती रहे, यह असंभव बात है।

फिर नारियों को सुविधाएं भी तो कई प्राप्त हैं। रेल में टिकट उन्हें पहले मिलता है। बस में जगह उन्हें पहले मिलती है। समाज में आदर उन्हें पहले प्राप्त होता है तो फिर उनकी सुनवाई भी पहले क्यों न हो? उनकी बात पहले सुनी जाती है, इसी लिए ही पति लोग उनसे पहल कराया करते हैं। जहां पति की प्रार्थना और जी-हुजूरी काम नहीं करती, वहां पत्नी की एक मुस्कान काम कर जाती है। जहां पति को धक्के मिलते हैं। वहां पत्नियां कुर्सी पा जाया करती हैं। वे संकट-मोचन के लिए पत्नी का अमोघ अस्त्र के रूप में इस्तेमाल किया करते हैं। वह उनके विजय पथ का 'शार्ट कट' है। दीन-हीन क्लर्कों, मुसीबत में पड़े असिस्टेण्टों और महत्वाकांक्षी सरकारी कर्मचारियों के हाथ में अफसरों को यह तोप नहीं छीननी चाहिए। ●●

वाके बाप को न चाहिए

आओ आज कुछ मित्रता की चर्चा करें।

लेकिन मित्रता तो चर्चा की चीज नही । चर्चा करने मे मित्रता का महत्व घटता है ।

जी नही मित्रता कोई गूगे का गुड थोडे ही है कि उसकी व्याख्या न की जा सकती हो । मित्रता कोई पाप थोड ही है जिसकी चर्चा होने से कलक लगने की सभावना हो सकती है ।

तो जी, मित्रता कोई प्रदर्शन की, नारेबाजी की भी चीज नही कि गली मुहल्ले म उसके गीत गाते फिरें ।

तो दरअसल मित्रता है क्या चीज ? मित्र के सबध म गोस्वामी तुलसीदास जी कह गए हैं—

जे न मित्र दुख होहि दुखारी । तिनहिं बिलोकत पातक भारी ॥

अर्थात आपत्तिकाल के समय ही सच्चे मित्र की पहचान होती —

धीरज, धरम, मित्र अरु नारी । आपत कालपरखिए चारी ॥

मान लीजिए कि चीन और हिंदुस्तान दोस्त हैं । तो क्या इनको भी हम आपत्तिकाल की कसौटी पर कसना चाहिए ?

क्या नहीं । जब चीन कोरिया-सकट म पड़ा तो हिंदुस्तान ने उसके लिए आवाज उठाई कि नहीं ? जब सयुक्त राष्ट्र सघ से चीन का बहिष्कार किया गया तो हिंदुस्तान ने उसका साथ दिया कि नहीं ?

लेकिन चीन के सम्बन्ध म तो ऐसा नहीं कहा जा सकता । हिंदुस्तान की कामनाओं की पूर्ति के लिए ससार के लगभग सभी समय देश तैयार थे, चाहे धन की, साधन की सहायता दी लेकिन चीन तो सदा देखता ही रहा । अमरीकी सहायता के बल पर पाकिस्तान भारत की सीमा पर उछलता रहा, [illegible] दुश्मनी पर

ो, जैसे कह रहा हो ?

तभी तो हम कहते है कि मित्र धर्म बडा कठिन है। वह अवसरवादिता नही है सिद्धान्त है। चीन मित्रता के सिद्धान्त को शायद जानता ही नही।

लेकिन चूक तो इस मामले मे भारत से भी हुई है। नीति मे कहा गया है कि मित्र का मित्र, मित्र और मित्र का शत्रु, शत्रु। दलाई लामा जब चीन का शत्रु हुआ तो वह भारत का शत्रु हो जाना चाहिए था।

लेकिन आपको भारतीय परम्परा का पता नही। भारतीय शरणागत का त्याग नही करते। कष्ट सहकर भी उसकी रक्षा करते हैं। लेकिन इस मामले मे भी भारत ने चीन की मित्रता को नही छोडा।

लेकिन उसने तो आपसे मित्रता का सबध छोड दिया। गोसाइं तुलसीदास की चौपाई क्या आपने नही पढी—

सठ सन विनय, कुटिल सन प्रीती।

निभने वाली चीजें हैं ? तो इस सबध में अब क्या करना चाहिए ?

वही जो नीति कहती है कि

लायक ही सो कीजिए बैर व्याह और प्रीति।
चाटे काटे श्वान के दुहूं भांति विपरीत॥

आपका मतलब है कि चीन दोस्ती के लायक नही ?

जी नही हमारा मतलब सिर्फ यह है कि दोस्ती सदा अपने बराबर वाले से, समान कुलशील से करनी चाहिए। एक तरफ की दोस्ती कभी निभ नही सकती। जैसे ताली दोनो हाथो से बजती है, वैसे ही दोस्ती भी दोनो पक्षो के निबाहे निभती है।

और अगर दूसरा पक्ष दोस्ती न निभाए तो आप क्या करने को कहते हैं ?

हम अपनी तरफ से कुछ नही कहते। एक पुराना कवित्त याद आरहा है वह सुनाए देते हैं—

हिलमिल चाल तासों मिलके जनावें हेज
हित कौं न जाने तासों हितू ना निबाहिए।
होहि मगरूर तासों दूनी मगरूरी कर,
लघु है चल तासों लघुता निबाहिए।
'बोधा' कवि नीति को निबेरो यही भांति अहै,
आपको सराहे ताहि आपहू सराहिए।
दाता कहा, सूर कहा, सुन्दर, सुजान कहा,
आपको न चाहे, वाके बाप को न चाहिए।

••

वाके बाप को न चाहिए

आओ आज कुछ मित्रता की चर्चा करें।

लेकिन मित्रता तो चर्चा की चीज नही । चर्चा करने से मित्रता का महत्व घटता है ।

जी नही, मित्रता कोई गूंगे का गुड थोडे ही है कि उसकी व्याख्या न की जा सकती हो । मित्रता कोई पाप थोड ही है जिसकी चर्चा होने से कलंक लगने की संभावना हो सकती है ।

तो जी, मित्रता कोई प्रदर्शन की नारेबाजी की भी चीज नही कि गली मुहल्ले म उसके गीत गाते फिरें ।

तो दरअसल मित्रता है क्या चीज ? मित्र के संबंध म गोस्वामी तुलसीदास जी कह गए हैं—

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ।।

अर्थात् आपत्तिकाल के समय ही सच्चे मित्र की पहचान होती —

धीरज, धरम, मित्र अरु नारी । आपत कालपरखिए चारी ।।

मान लीजिए कि चीन और हिंदुस्तान दोस्त हैं । तो क्या इनको भी हम आपत्तिकाल की कसौटी पर कसना चाहिए ?

क्या नहीं । जब चीन कोरिया-संकट म पडा तो हिंदुस्तान न उसके लिए आवाज उठाई कि नहीं ? जब संयुक्त राष्ट्र संघ से चीन का बहिष्कार किया गया तो हिंदुस्तान न उसका साथ दिया कि नहीं ?

लेकिन चीन के सम्बन्ध म तो ऐसा नहीं कहा जा सकता । हिंदुस्तान की योजनाओं की पूर्ति के लिए संसार के लगभग सभी समर्थ देशो ने धन की, ज्ञान की साधन की सहायता दी, लेकिन चीन तो खडा देखता ही रहा । अमरीकी सहायता के बल पर पाकिस्तान भारत की सीमा पर उछलता रहा, लेकिन चीन ने तो ऐसी चुप्पी साधी, जैसे वह सो रहा हो ?

तभी तो हम कहते हैं कि मित्र धर्म बडा कठिन है। वह अवसरवादिता नही है, सिद्धान्त है। चीन मित्रता के सिद्धान्त को शायद जानता ही नही !

लेकिन चूक तो इस मामले म भारत से भी हुई है। नीति मे कहा गया है कि मित्र का मित्र, मित्र और मित्र का शत्रु, शत्रु। दलाई लामा जब चीन का शत्रु हुआ तो वह भारत का शत्रु हो जाना चाहिए था।

लेकिन आपको भारतीय परम्परा का पता नहीं। भारतीय शरणागत का त्याग नही करते। कष्ट सहकर भी उसकी रक्षा करते हैं। लेकिन इस मामले म भी भारत ने चीन की मित्रता को नही छोडा।

लेकिन उसने तो आपसे मित्रता का सबध छोड दिया। गोसाई तुलसीदास की चौपाई क्या आपने नही पढी—

सठ सन विनय, कुटिल सन प्रीती।

निभने वाली चीजें ह ? तो इस सबध म अब क्या करना चाहिए ?

वही जो नीति कहती है कि

लायक ही सो कीजिए बर ब्याह और प्रीति।
चाटे काटे श्वान के दुहूँ भाति विपरीत ॥

आपका मतलब है कि चीन दोस्ती के लायक नही ?

जी नही हमारा मतलब सिर्फ यह है कि दोस्ती सदा अपने बराबर वाले स, समान कुलशील से करनी चाहिए। एक तरफ की दोस्ती कभी निभ नही सकती। जसे ताली दोनो हाथो से बजती है, वसे ही दोस्ती भी दोनो पक्षो के निबाहे निभती है।

और अगर दूसरा पक्ष दोस्ती न निभाए तो आप क्या करने को कहते हैं ?

हम अपनी तरफ स कुछ नही कहते। एक पुराना कवित्त याद आरहा है, वह सुनाए देते हैं—

हिलमिल चाल तासों मिलकर जनाव हेज,
हित कों न जाने तासों हितू ना निबाहिए।
होहि मगरूर तासों दूनी मगरूरी करें
लघु है चल तासों लघुता निबाहिए।
'बोधा' कवि नीति को निबेरो यही भाति अहै,
आपको सराह ताहि आपहू सराहिए।
दाता कहा, सूर कहा, सुन्दर, सुजान कहा,
आपको न चाहे, वाके बाप को न चाहिए।

●●

□ □ □

मजा किरकिरा होगया !

कल हम उर्दू अदीबो की एक बैठक म जाने का नियाज हासिल हुआ । हमने सोचा कि जब दावतनामा मिला है तो इस नायाब मौके से जरूर फायदा उठाना चाहिए ।

यह रगीन मौसम । यह बरखा से धुली निखरी दिल्ली की हसीन शाम । उर्दू के आशिक मिजाज शायरो की दिलफेंक शायरी । वक्त—आपकी कसम, अच्छा कटेगा ।

हम ठीक वक्त पर पहुँचे । लेकिन हमस भी ठीक वक्त पर आने वालो की कमी नही थी । आखो म सुरमा डाले, बालो मे खिजाब लगाए, मुहँ मे पान की छालियाँ कुटकते दजनो अजीम्मुशान शायर मजलिस की रौनक वढा रहे थे । सबसे पहले समोसे आए, फिर रसगुल्ले, फिर तली हुई मूग की दाल और बाद मे चाय का पानी । तश्तरी मे पान बाअदव पेश हुए और तब अजुमन के सेक्रेटरी खडे होकर तकरीर करने लगे ।

उन्होंने क्या फरमाया, यह हमारी समझ म नहीं आया । पता नही वह कैसी उर्दू थी ! अपने तो पल्ले कुछ पडा नही । जो हालत हमारी चार वर्ष पूर्व काहिरा म हुई थी, वैसी ही कल दिल्ली म होगई । हम प्रेसीडेंट नासिर का भाषण सुन रहे थे ।

वह अरबी म बडे शानदार और जानदार तकरीर दे रहे थ । दनादन तालिया बज रही थी और हम यह जानने के लिए तरस रहे थे कि कोई बताए कि मुअज्जिज प्रेसीडेंट ने अभी क्या कहा ? जैसे प्रेसीडेंट के भाषण म जो दो चार शब्द अग्रेजी मे या अरबी के हमने जान लिए थे वही हम समझ सके । वैसे ही दिल्ली के इस भाषण म भी हमे इतना पता पडा कि सेक्रेटरी कह रहे हैं कि उर्दू को दिल्ली, यू०पी०, विहार मे इलाकाई दर्जा हासिल हो । उसकी पढाई प्राइमरी क्लासो मे शुरु की जाए और उर्दू को देश म दोयम दर्जा दिया जाए ।

इतनी सकील उर्दू उसम इतने अरबी फारसी के मुश्किल अलफाज कि तौबा तौबा ! इतने तो हमारे प्रयाग काशी के पडित भी सस्कृत मिलाकर हिन्दी नही बोलते । लेकिन उसम रेडियो के साबिक वजीर श्री गोपाल रेड्डी की शानदार खिदमतो की यू की जारही थी जस । खैर छोडिए ।

तकरीर खत्म हुई तो हमने समझा कि अब शेर-ओ शायरी का रग जमेगा। अब महफिल मे बहार आएगी। अब परवाने शमा पर मडराएगें। अब आलम मस्ती मे झूमेगा। अब साकी के जाम छलकेंगे। अब हम इस दुनिया से किसी और दुनिया मे जा पहुचेंगे।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उर्दू-अजुमन मे आज एक आला अफ्सर और एक बडे नेता की खिदमत मे एक ऐड्रेस, माफ कीजिए, इसकी उर्दू हमे फिलहाल याद नही आरही, देने का फैसला किया था।

ऐड्रेस दिया गया। उसम भी वही था। ऊँचे दर्जे की अरबी फारसी, उर्दू को ऊँचे ओहदे पर बैठाने की गुजारिश उर्दू के हिमायतिया का गुण-गान और उसके दुश्मना को गालियाँ।

इसके जवाब म इन दोना हजरात के भी भाषण क्या थे, अच्छी खासी फटकारें था। कहा गया है कि हिन्दी वाले ज्यादातर फिरकापरस्त हैं। ठीक है उर्दू के साथ अभी तक इन्साफ नही हुआ। मगर हिन्दी और उर्दू वाले दोनो इस मामले मे गलत हैं कि वह मिलकर अग्रेजी को हटा देना चाहते हैं। अग्रेजी अगर गई तो मुल्क पाताल को चला जाएगा। उसके टुकडे-टुकडे हो जाएगे।

इस पर एक साहब ने तो यहा तक कह डाला—अजी, अग्रेज मुल्क की सारी दौलत तो ले गए। ले दे कर यहाँ अग्रेजी छोड गए हैं। हम उसे भी उन्हें वापस कर दें तो हमारे पास बचेगा क्या ? यह एकदम गलत है।

हमने सोचा—कहाँ आ फसे ? हिन्दी मे जाओ तो हाय हाय ! उर्दू वाला मे जाओ तो वही चख चख ! कैसा जमाना आया है जी ! अदब, साहित्य पर आज भाषाए सवार हैं, भाषाओ पर सवार साहित्यिक नही। उनकी लगाम सियासी लोगो के हाथा म है। भाषा की आड लेकर एक दूसरे को फिरकापरस्त और दूसरा पहले का कौम का दुश्मन, कल्चर की जड खोदने वाला कह रहा है। इस तरह इलाकाई जुबानें जाने-अनजाने एक दूसरे से लड रही हैं। सात समुन्दर पार की अग्रेजी यहा अभी भी राज कर रही है।

मतलब यह है कि उस मीठी शाम का हमारा सारा मजा किरकिरा होगया और हम वहाँ से अदब लेकर नही, सिर्फ उर्दू लेकर ही लौटे जो हमने यहा लिख दी है।

●●

मोटर बनाम रिक्शा

मोटर पसन्द है या रिक्शा ?

किसको ?

आपको।

दिलवा रहे हैं क्या ?

नही सिर्फ पूछ रहे हैं।

तो हम भी सिर्फ बता रहे है कि हम मोटर पसन्द नही।

क्या ?

या कि इनके पीछे टर लगा है।

यह क्या बात हुई ?

बात बडी गहरी है।

क्या ?

सुनिए—स्कूल म मानीटर हमसे जलता था। मास्टर हम डाटता था। स्वतन्त्रता आन्दोलन मे कलक्टर हमारे पीछे पड गया था। एक फम म नौकरी की थी, वहा हमारी डायरेक्टर से नही पटी। लेखक बने तो एडीटर सानुकूल नही हुए। राजनीति म गए तो मिनिस्टरो के कृपा भाजन नही बन सके।

क्यों ?

ये सभी टर-टर करते रहते थे।

और मोटर ?

मोटर हमे यो पसन्द नही कि उसम ९५

आती है।

और रिक्शा ?

अजी रिक्शा का क्य

मिलता है। मोटर के ७१

जी !

मोटर धूल उडाती चलती है, मगर रिक्शा फूल बिखेरती चलती है। मोटर भौं-भौं करके भौंकती है, मगर रिक्शा सुरीली टुनटुनाहट के साथ आगे बढता है।

जी!

मोटर मोटे आदमियो के लिए है। रिक्शा हम-आप जैसो के लिए, यानी आम लोगो के लिए।

जी!

सर से मोटर निकल जाती है, पता नही चलता। कौन गया? कौन आया? मगर रिक्शा की सवारी को जब चाहो तब पुकार लो, उतार लो जान ला-और पहचान लो।

जी!

एक बात और है।

वह क्या?

मोटर का ड्राइवर मनहूस होता है, मगर रिक्शा का चालक खशदिल और मौजी! कभी वह फिल्मी गीत गाएगा, कभी चौबाला सुनाएगा। कभी रसिया गाएगा तो कभी भजन गुनगुनाएगा।

जी!

मगर मोटर का ड्राइवर घुग्घू बना, गुमसुम-सा आगे बैठा रहेगा। न उससे आप बात कर सकते हैं और न उसकी बगल म बैठ कर सो सकते हैं। अगर आपने ऐसा किया तो आपकी जान और माल दोनो खतरे मे हैं।

जी!

मगर रिक्शाचालक! अगर आप गुमसुम है तो वह खुद आपसे बात करने लगेगा और अगर आप थके है तो आपको चुटकुले सुना-सुना कर ताजा कर देगा।

जी!

अगर आप बीमार हैं और अस्पताल जारहे हैं तो आपसे तकलीफ पूछेगा, दवा बताएगा और एहतियात से ले जाएगा।

जी!

और अगर आप खुश हैं और अपनी श्रीमती जी या प्रेमिका के साथ कही सैर को जारहे है तो और कुछ नही, सीटी ही बजाने लगेगा।

जी!

अगर आप भले आदमी हैं तो आपसे निहायत शराफत के साथ पेश आएगा और लफगा हैं तो रास्ते म किसी पान वाले के पास रिक्शा रोककर बीडी सुलगाने लगेगा।

जी!

मोटरवाले की दोस्ती जरा कम ही काम आती है। वक्त जरूरत पर अगर आप कभी उससे मोटर माग लें तो कभी उसका पहिया खराब हो जाएगा, कभी टायर

फट जाएगा, कभी ड्राइवर छुट्टी पर होगा तो कभी मालिक बीमार। मगर रिक्शेवाले से दोस्ती है तो पैसे वाली सवारी उतार देगा, पहले आपको बैठाएगा और हस-हसकर जगह पर पहुचाएगा। इसके बाद भी चेहरे पर शिकन नही लाएगा और कभी भी हर्गिज हर्गिज एहसान नही जताएगा।

जी !

मगर मोटरवाला ! जितना करेगा नही, उतने गीत गाएगा। हमेशा आपको एहसान से दबाएगा।

तो इसके माने तो यह हुए कि रिक्शावाला सही माने मे इसान होता है और मोटर !

तुलना करने की आवश्यकता नही। अभी हाल का वाकया है।

क्या ?

एक आदमी के घर म कोई बीमार था।

जी !

उसे देखने के लिए डाक्टर मोटर पर चढ कर आया। कोई रिश्तेदार रिक्शे पर बैठकर।

जी !

मरीज तब तक मर चुका था। मोटरवाले डाक्टर ने अपनी फीस बिना देखे वसूल कर ली। मगर रिक्शेवाला बोला—अब आपसे पैसे क्या लू ?

••

(आवरण पृष्ठ 1 का शेष)

पूरे पचास वर्षों तक व्यास ने हिन्दी व्यग्य-विनोद के क्षेत्र मे एकछत्र राज्य किया है। कविता, हास्य प्रबध, ललित निबध तथा दैनिक और साप्ताहिक चोखे चुभते लोकप्रिय स्तम्भ—क्या कुछ नही लिखा इन्होने। लेकिन 'यत्रम्-तत्रम्' की अदा कुछ और ही है—

"अनियारे दीरघ घने किसी न तरुनि समान।
वह चितवन और कछु जिहि बस होत सुजान॥"

लाखो लाखो पाठको के नयन-पथ गामी, नित नूतन, कथ्य और तथ्य मे एक दूसरे से सर्वथा भिन्न कि जिनकी शैली कभी मैली नही होती, वे अब आपके सम्मुख हैं। पढिए और कहिए—

सूर सूर, तुलसी शशि, उडुगन केशवदास।
पत निराला बल्ब है, लालटेन ह व्यास॥
लालटेन ह व्यास, प्रकाशित ग्राम ग्राम मे।
महल, झोंपडी, दफ्तर, हर घर, हर मुकाम मे॥
बुद्धिजीवियों की बिजली जब जले न, लाला!
हास्य-व्यग्य की लालटेन ही करे उजाला॥